KHAN GLOBAL STUDIES
KGS Campus, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6
Mob : 8877918018, 875735880

By. Khan Sir

आधुनिक इतिहास
(Modern History)

KGS Campus Patna –6 Mob.: 8877918018, 8757354880

21. यूरोपीय कंपनियों का आगमन (Arrival of European Companies)

- भारत में यूरोपवासियों के आने के क्रम में सर्वप्रथम पुर्तगीज (पुर्तगाली) थे, इसके बाद क्रमशः डच, अंग्रेज, डेनिस और फ्रांसीसी आए।
- अंग्रेज डच के बाद भारत आये थे परंतु अंग्रेजों की ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी से पहले ही हो चुकी थी।

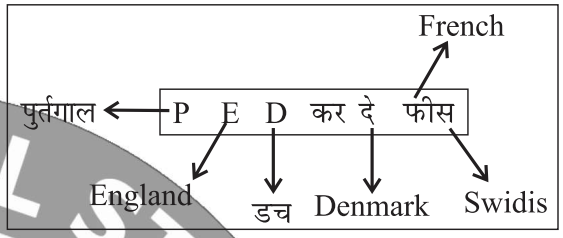

यूरोपिय कम्पनियां एवं स्थापना वर्ष					
क्र.स.	**कंपनी**	**देश**	**स्थापना वर्ष**	**गवर्नर कोठी/फैक्ट्री**	**स्थल/प्रथम**
1.	पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी (इस्तादो द इंडिया)	पुर्तगाली	1498 ई.	एफ.डी. अल्मेडा	कालीकट (1498)
2.	अंग्रजी ईस्ट इंडिया कंपनी (दि गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू दि ईस्ट इंडीज)	अंग्रेज	1600 ई.	सर टॉमस रो	सूरत (1613)
3.	डच ईस्ट इंडिया कंपनी	डच	1602 ई.	कार्नेलियस डेहस्तमान	मसूलीपट्टनम (1605)
4.	डेनिश इस्ट इंडिया कंपनी	डेनिश	1616 ई.	विर्निचओ	ट्रांकेबर (1620)
5.	फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया (कंपनी द इंडस ओरिचंटल)	फ्रांसीसी	1664 ई.	जोन बैप्टिस्ट कोल्बर्ट/मार्टिन	सूरत (1668)
6.	स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी	स्वीडिश	1731 ई.	विलियम-यूसेलिंक्स	गोहनबर्ग

➢ पुर्तगाल ईस्ट इंडिया कम्पनी

- इसकी स्थापना 1498 में हुई।
- 17 May 1498 को पुर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा गुजराती पथ प्रदर्शक अब्दुल मजीद की सहायता से केरल के कालीकट बन्दरगाह पर पहुंचा। वहाँ के शासक जमोरिन ने उसका भव्य स्वागत किया और उसकी जहाज को मसालों से भर दिया। इन मसालों के अतिरिक्त वास्कोडिगामा कुछ और मसाले खरीदे थे जिसे वह यूरोप में बेच कर 60 गुना मुनाफा कमाया।
- वास्कोडिगामा पुर्तगाल के शासक डॉन इनरीक के प्रतिनिधि के रूप में भारत आया था।
- 1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने कोची का किला जीत लिया।
- पुर्तगाल ने फ्रांसिस-डी-अल्मेडा को गवर्नर नियुक्त किया। अल्मोड़ा नौसेना को मजबूत करने के लिए शांत जल की नीति (Blue Water Policy) को अपनाया, किन्तु यह वास्तविक रूप से गवर्नर के पद को नहीं सम्भाल सका और इसके स्थान पर 1509 ई. में अल्बुकर्क को पुर्तगाली गवर्नर नियुक्त किया गया।
- अल्बुकर्क को ही पुर्तगाली साम्राज्य का वास्तविक गवर्नर माना जाता है।
- इसने बीजापुर के शासक से गोवा 1510 ई. में जीत लिया।
- 1511 ई. में इसने मलक्का पर कब्जा कर लिया तथा 1515 ई. में इसने फारस की खाड़ी में स्थित हॉरमुज बंदरगाह को युद्ध में जीत लिया।
- इसका विजय नगर शासक कृष्ण देव राय के साथ अच्छा संबंध था।
- अल्बुकर्क ने पुर्तगालियों की संख्या बढ़ाने के लिए पुर्तगालियों को भारतीय महिलाओं से शादी करने के लिए प्रेरित किया।
- अल्बुकर्क सती प्रथा का विरोध करने वाला प्रथम यूरोपीय व्यक्ति था।
- 1612 ई. में पुर्तगालियों को स्वैली के युद्ध में अंग्रेजों ने थॉमस बैस्ट के नेतृत्व में हराया था।
- पुर्तगालियों द्वारा हुगली को बंगाल की खाड़ी में समुद्री लुटपाट के लिए अड्डे के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
- पुर्तगाली सबसे पहले भारत आए थे और सबसे बाद में 1961 ई. में भारत छोड़कर गए।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम तम्बाकू तथा आलू की खेती प्रारम्भ करवायी थी।
- सर्वप्रथम भारत-जापान व्यापार प्रारम्भ करने का श्रेय इन्हें ही प्रदान किया जाता है।
- पुर्तगालियों ने ही भारत में सर्वप्रथम 1556 ई. में गोवा में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना किया।
- भारत में गोथिक स्थापत्य कला की स्थापना का श्रेय पुर्तगालियों को दिया जाता है।

➢ **डच ईस्ट इंडिया कम्पनी (1602)**

- भारत आने वाली दूसरी यूरोपीय शक्ति डच ही थे।
- ये नीदरलैंड या हॉलैंड के निवासी थे।
- 1596 ई. में भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक कारनेलिस डी हाउटमैन था।
- डच ने 1605 ई. में मसूलीपट्टनम में अपनी पहली व्यापारिक कोठी स्थापित की तथा पुलिकट में अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी एवं सूरत में अपनी तीसरी व्यापारिक कोठी स्थापित की।
- डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1632 ई. में अपनी फैक्टरी पटना में भी स्थापित की थी।
- 1759 के वेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को बुरी तरह से पराजित कर दिया और उनके सभी व्यापारिक कोठियों पर अधिकार कर लिया।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व क्लाइव ने किया था।
- डच भारत से अधिक इण्डोनेशिया से व्यापार करने में रूचि रखते थे।
- भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केंद्र बनाने का श्रेय डचों को जाता है।

➢ **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी**

- इसकी स्थापना 31 दिसम्बर 1600 को महारानी एलिजाबेथ ने एक शाही फरमान देकर 15 वर्षों के लिए किया।
- शुरूआत में ईस्ट इंडिया कंपनी के साझेदारों की संख्या 217 थी।
- जिस समय ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई, उस समय मुगल शासक अकबर था।
- ब्रिटिश कंपनी ने 1608 ई. में भारत के पश्चिमी तट सूरत में व्यापारिक केंद्र खोलने का प्रयास किया।
- 1613 ई. में सूरत में स्थापित कारखाना अंग्रेजों का प्रथम स्थायी कारखाना था।
- 1639 ई. में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी ने मद्रास को भाड़े पर ले लिया और यहाँ फोर्ट सेण्ट जार्ज का किला बनवाया।
- 1651 ई. में अंग्रेजों ने बंगाल के हुबली में अपनी व्यापारी कोठी खोली।
- 1661 ई. में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स-II का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से हो गया और चार्ल्स-II ने बम्बई बंदरगाह को ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी को 10 पौंड वार्षिक किराये पर दे दिया।
- 1698 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम किला का निर्माण प्रारम्भ किया।

  Remark :– कलकत्ता शहर की स्थापना जॉब चॉरनाक ने किया था।
- 1717 ई. में फरूखशियर ने अंग्रेजों को व्यापारिक छूट दे दिया। इसे अंग्रेजी साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र पर अप्रत्यक्ष रूप से शासन करने लगा। इस युद्ध के कारण अंग्रेजों को बंगाल में पैर जमाने का मौका मिल गया।
- 1759 ई. में अंग्रेजों ने वेदरा के युद्ध में डचों को पराजित कर दिया।
- 1760 ई. में वांडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बुरी तरह से पराजित कर दिया।
- 1764 के बक्सर के युद्ध के बाद 12 Aug 1765 को अंग्रेजों एवं शाहआलम-II के बीच इलाहाबाद की संधि हुई।
- इस संधि के तहत अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन लगा दिया।
- इस प्रकार भारत में अंग्रेजों का विरोध करने वाली कोई बड़ी शक्ति नहीं बची।
- BEIC (ब्रिटिश इस्ट इंडिया कम्पनी) धीरे-धीरे मजबूत होने लगी किन्तु भ्रष्टाचार बढ़ गया था और राजा का नियंत्रण भी कम्पनी पर कमजोर पडने लगा था।
- अंग्रेजी शासन काल में बिहार अफीम उत्पादन हेतु प्रसिद्ध था।

➢ **डेनिस ईस्ट इंडिया कम्पनी (1616)**

- इन्होंने अपनी व्यापारिक कोठी केरल के ट्रावणकोर में स्थापित किया । दूसरी व्यापारिक कोठी बंगाल के श्रीरामपुर में स्थापित किया ।
- डेनिस के व्यापारिक कोठियों का विस्तार अधिक नहीं था। अंततः 1745 ई. में डेनमार्क ने अपनी सभी कोठियों को अंग्रेजों के हाथ बेच दिया।

➢ **फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया**

- यह सरकारी कम्पनी थी
- इसकी स्थापना 1664 ई. में राजा लुई 14वां के समय हुई थी।
- भारत में फ्रांसीसी कंपनी का संस्थापक कोल्वर्ट को माना जाता है।
- फ्रांसीसी ने अपनी पहली व्यापारिक कोठी 1669 ई. में सूरत में खोली।
- फ्रांसीसियों ने अपनी दूसरी व्यापारिक कोठी 1669 ई. में मसुलीपट्टनम में खोली।
- फ्रांसीसियों ने बीजापुर के शासक से आज्ञा लेकर 1673 में पाण्डिचेरी शहर की स्थापना की।
- पाण्डिचेरी की स्थापना फ्रांसिस मार्टिन ने किया।
- फ्रांसिस (फ्रैंको) मार्टिन को भारत में फ्रांसीसी बस्तियों का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

- फ्रांसिस गवर्नर डूप्ले को 1742 ई. में भारत में फ्रांस का गवर्नर बनाया गया। इसे सहायक संधि का जनक कहा जाता है।
- इसी के समय में कर्नाटक युद्ध हुआ।
- फ्रांसिसियों का भारत में अधिक क्षेत्रों पर अधिकार नहीं था किन्तु वे आजादी के बाद तक भारत में रहे और 1956 ई. में भारत छोड़कर चले गए।

➢ **स्वीडीश ईस्ट इंडिया कम्पनी (1731)**

- ये अपना अधिक विस्तार नहीं कर सका और भारत से चले गये।

शहर	संस्थापक	मूल निवासी
बंबई	गराल्ड अंगियार	ब्रिटेन
कलकत्ता	जाब चारनाक	ब्रिटेन
दिल्ली	लुटियंस	ब्रिटेन
चंडीगढ़	ली कार्बुजिए	फ्रांस
पांडिचेरी	फ्रेंक मार्टिन	फ्रांस
हैदराबाद	मुहम्मद कुतुबशाह	भारत
मद्रास	फ्रांसीस डे	ब्रिटेन

महाद्वीप	खोजकर्त्ता	मूल निवासी
भारत	वास्कोडिगामा	पुर्तगाल
ब्राजील	पेड्रो अलवर्स कैब्रल	पुर्तगाल
न्यूजीलैंड	अबेल तस्मान	हॉलेण्ड
तस्मानिया	एवेल जंजून तस्मान	हॉलेण्ड
अमेरिका	क्रिस्टोफर कोलम्बस	स्पेन
अस्ट्रेलिया	कैप्टन जेम्स कुक	ब्रिटेन

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

22. नवीन राज्यों का उदय (Rise of New Kingdoms)

अवध राज्य

- अवध के संस्थापक सआदत खाँ अथवा बुरहान-उल-मुल्क थे। इन्होंने अवध की स्थापना 1722 ई. में मुगलों से अलग हो कर किया।
- इन्होंने अपनी राजधानी फैजाबाद (लखनऊ) को बनाया।
- अवध के राजाओं को नबाब कहा जाता था।
- सआदत खाँ के समय 1739 ई. में इरान तथा एशिया का नेपोलियन कहा जाने वाला नादिर शाह ने अवध पर आक्रमण कर दिया। किन्तु अवध धन दौलत से कंगाल था। अत: सआदत खाँ ने नादिर शाह को दिल्ली पर आक्रमण के लिए उकसा दिया। जब नादिर शाह दिल्ली को लूटने के बाद वापस सआदत खाँ के पास कुछ धन देने के लिए आया तो उनके डर से सआदत खाँ ने आत्महत्या कर लिया।
- इसके मृत्यु के बाद उसके पुत्र सफदर जंग तथा शुजाउद्दौला के बीच उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ और शुजाउद्दौला विजय हुआ। 1764 के बक्सर के युद्ध में तिलगुट सेना ने भाग लिया और पराजित हो गया।
- 1801 ई. में अवध ने लॉर्ड वेलेजली द्वारा प्रारंभ की गयी सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।
- अवध के अन्तिम नवाब वाजिद अली शाह थे जिनको अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया और अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे अंग्रेजी क्षेत्र में मिला लिया और वाजिद अली शाह को कैद कर लिया जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। यही कारण था कि वाजिद अली शाह की पत्नी वेगम हजरत महल ने 1857 के विद्रोह में भारतीय सैनिकों का अवध से नेतृत्व किया।
- विद्रोह समाप्त होने के बाद बेगम हजरत महल नेपाल चली गयी जहां उनकी मृत्यु हो गयी।

हैदराबाद

- स्वतन्त्र हैदराबाद की स्थापना 1724 ई. में निजाम-उल मुल्क अथवा चिनकिसिच खाँ ने मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के समय किया। यहाँ के राजा को निजाम कहा जाता था।
- निजाम-उल-मुल्क ने 1725 ई. में हैदराबाद को अपनी राजधानी बनाया।
- एक हिन्दू दीनानाथ को निजाम-उल-मुल्क ने अपना 'दीवान' नियुक्त किया था।
- 1728 ई में मराठा पेशवा बाजीराव-I ने हैदराबाद पर आक्रमण किया और पालखेड़ा के युद्ध में निजाम को पराजित कर दिया।
- पेशवा तथा निजाम के बीच मुंशी शिवगांव की संधि हुयी इस संधि के तहत निजाम ने मराठों की अधीनता स्वीकार की और चौथ तथा सरदेशमुखी नामक कर देने लगा। जब 1798 ई. में लार्ड वेलेजली ने सहायक संधि प्रारम्भ किया तो उसे मानने वाला पहला राज्य हैदराबाद ही था।
- स्वतन्त्रता के बाद हैदराबाद (तेलंगाना वाला क्षेत्र) पाकिस्तान में मिलने की इच्छा जताई। किन्तु सरदार पटेल ने ऑपरेशन पोलो नामक पुलिस कार्यवाही से हैदराबाद को भारत में मिला लिया।

कर्नाटक

- कर्नाटक की स्थापना सादुतुल्ला ने किया। कर्नाटक पर अधि कार करने के लिए फ्रांसीस तथा अंग्रेज आपस में लड़ गए और 3 युद्ध हुआ।

➢ **प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1746-48)**

- इस युद्ध का कारण ऑस्ट्रिया के अधिकार को लेकर इंग्लैंड तथा फ्रांस के बीच युद्ध हुआ। जिस कारण उनकी कम्पनियां भारत में युद्ध कर ली। ऑस्ट्रिया का उत्तराधिकार का युद्ध ए-ला-शापल की संधि से समाप्त हुआ। इसी संधि के तहत भारत में प्रथम आंग्ल कर्नाटक युद्ध समाप्त हो गया।

➢ **द्वितीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1749-54)**

- इस युद्ध का कारण फ्रांसिस गर्वनर डुप्ले का महात्वाकांक्षी होना था। इसने भारत में अग्रेंजो पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध पाण्डिचेरी के संधि के तहत समाप्त हुआ।

➢ **तृतीय आंग्ल कर्नाटक युद्ध (1756-63)**

- इस युद्ध का कारण यूरोप में चल रहे सात वर्षीय युद्ध को माना जाता है। यह युद्ध इंग्लैण्ड तथा फ्रांस के बीच मुख्य रूप से हुआ। इसी युद्ध के दौरान 1760 में वांडिवाश के युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को बूरी तरह पराजित कर दिया और भारत से फ्रांसीसी सत्ता लगभग समाप्त हो गयी। यह युद्ध 1763 में पेरिस संधि के तहत समाप्त हो गयी। इस संधि के तहत चन्द्र नगर तथा पाण्डिचेरी पर फ्रांसीसियों का अधिकार रहा शेष क्षेत्र पर अंग्रेजो ने कब्जा कर लिया।

मैसूर राज्य

- मैसूर का राज्य पहले विजयनगर साम्राज्य का एक अंग था, परंतु 1565 ई. में तालकोटा के युद्ध के बाद वेंकट द्वितीय (1612 ई.) के समय मैसूर में वाड्यार राजवंश की स्थापना हुई।

- मैसूर राज्य की स्थापना हैदर अली ने 1755 ई० में किया। हैदर अली एक योग्य शासक था।
- मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टनम था।
- इसने अपने साम्राज्य का विस्तार प्रारम्भ किया और यही अंग्रेजों तथा मैसूर के बीच युद्ध का कारण बना।
- फ्रांसीसियों की सहायता से हैदर अली ने डिंडीगुल में 1755 ई. में एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना की।

➢ अंग्रेजों तथा मैसूरों के बीच लड़े गए युद्ध

● प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767-69)

- हैदर अली ने अंग्रेजों के बढ़ते प्रभाव को दबाने के लिए अंग्रेजों के साथ यह युद्ध किया था।
- इस युद्ध में हैदर अली विजयी रहा इसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व सर जनरल स्मिथ कर रहा था।
- यह युद्ध मद्रास की संधि से समाप्त हुआ।
- मद्रास की संधि की सारी शर्तें हैदरअली ने तय किया था। यही कारण है कि यह संधि सफल नहीं हो सकी और द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध को जन्म दे दिया।

● द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780-84)

- इस युद्ध का कारण अंग्रेजों द्वारा हैदर अली का क्षेत्र माहे (पाण्डिचेरी) पर अधिकार करना था।
- इस युद्ध में हैदरअली मारा गया और उसका बेटा टीपू सुल्तान युद्ध को आगे बढ़ाया। यह युद्ध बिना किसी निर्णय के मंगलौर की संधि से समाप्त हो गया।

● तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1790-92)

- यह युद्ध टीपू सुल्तान ने लड़ा किन्तु इस युद्ध में टीपू सुल्तान पराजित हो गया और यह युद्ध श्रीरंगपट्टनम की संधि से समाप्त हो गया।

● चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध (1799)

- इस युद्ध में टीपू सुल्तान मारा गया और मैसूर के क्षेत्र पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।
- इस युद्ध में लॉर्ड वेलेजली स्वयं सेना का नेतृत्व किया था।

संधि का Trick		
महा (मद्रास)	मंगल (मंगलोर)	श्री (श्रीरंगपट्टनम)
1	2	3

- टीपू सुल्तान ने फ्रांसीसियों के सहयोग से एक नव सेना का गठन किया और फ्रांस के जैकोबियन कल्व (फ्रांस का गरम दल) की सदस्यता ग्रहण की।
- फ्रांसीसी क्रांति के बाद टीपू सुल्तान ने अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में जैकोबिन क्लब बनवाया तथा राजधानी में स्वतंत्रता का वृक्ष लगवाया।
- टीपू सुल्तान एक धार्मिक उदार शासक था। इसने शंकराचार्य द्वारा बनवाए गये श्रृंगेरी पीठ जो की मैसूर में स्थित हैं का पुनर्निमाण करवाया।
- टीपू सुल्तान की अंगूठी पर राम लिखा था। टीपू सुल्तान के तोपों का आकार शेर की तरह था।
- टीपू सुल्तान कहता था कि 100 दिन के गीदड़ के जीवन से अच्छा है कि एक दिन के शेर का जीवन।

पंजाब राज्य

- पंजाब राज्य की स्थापना सुकरचकिया मिसल के राजा रणजीत सिंह ने किया।
- इसके समय 1798 तक अफगानिस्तान के शासक अहमद ने हमला किया। इस हमले के दौरान जमान शाह के कुछ तोप चिनाब नदी में गिर गये थे जिसे राजा रणजीत सिंह ने वापस जमान शाह को दे दिया।
- राजा रणजीत सिंह के इस उदारता से जमान शाह प्रसन्न हुआ और लाहौर को उपहार में दे दिया।
- 1809 ई. में रणजीत सिंह तथा चार्ल्स मेटकाफ के बीच अमृतसर की संधि हुई। इस संधि के तहत सतलज नदी को अंग्रेजों तथा पंजाब राज्य के बीच सीमा मान लिया गया।
- इस संधि का उद्देश्य रणजीत सिंह के साम्राज्य विस्तार पर रोक लगाना था।
- राजा रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- राजा रणजीत सिंह ने स्वर्ण मन्दिर पर सोने की चादर चढ़ायी।
- 1839 ई० में राजा रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी।
- अगला शासक खड़क सिंह बना तथा इन्होंने अपना वजीर (PM) ध्यानसिंह को बनाया।
- ध्यानसिंह एक धोखेबाज व्यक्ति था उसने अगले ही वर्ष 1840 में खड़क सिंह की हत्या कर दी।
- अगला शासक नैनीहाल बना। इसने भी अपना वजीर ध्यान सिंह को ही बनाया। ध्यानसिंह ने इसकी भी हत्या 1843 में कर दी।
- इसके बाद अगला शासक शेरसिंह बना किन्तु शेर सिंह की 1844 ई. में मृत्यु हो गयी और इनका अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह अगला शासक बना।
- 1843 ई. में राजमाता जिंदन के संरक्षण में महाराजा रणजीत सिंह के अल्पवयस्क पुत्र दिलीप सिंह का राज्यारोहण किया गया।
- अंग्रेजों ने पंजाब पर अधिकार के लिए दो-दो युद्ध लड़े।

➢ प्रथम आंग्ल पंजाब युद्ध (1845-46)

- प्रथम आंग्ल-सिक्ख युद्ध मुख्यत: महारानी जिंदन की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा का परिणाम था।
- यह युद्ध भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड हॉर्डिंग के समय लड़ा गया था तथा इस समय भारत के प्रधान सेनापति जनरल गफ थे।

- इस युद्ध में अंग्रेज विजय हुए। यह युद्ध भोरेवाल की संधि के तहत समाप्त हुआ।

➢ **द्वितीय आंग्ल पंजाब युद्ध (1848-49)**

- इस युद्ध का कारण लार्ड डलहौजी की राज्य हड़पनीति थी। लार्ड डलहौजी ने पंजाब पर अधिकार के लिए चार्ल्स नेपियर नामक एक कुशल सेनापति भेजा था।
- यह चार्ल्स नेपियर युद्ध में विजय रहा और पंजाब पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। लार्ड डलहौजी कोहिनूर हीरा पंजाब राज्य से लेकर ब्रिटेन की रानी को भेज दिया।
- राजा रणजीत सिंह का अल्पायु पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने अच्छी शिक्षा के लिए लंदन भेज दिया और उसकी माता को 48000 रु० प्रति वर्ष पेंशन देकर शेखपुरा (जम्मू-कश्मीर) भेज दिया। इस प्रकार पंजाब पूरी तरह अंग्रेजों के अधीन हो गया।

कोहिनूर हीरा

- यह हैदराबाद के समीप गोलकुण्डा के खाने से निकला था तथा वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव के पास था जिससे मलिक काफूर ने छीन कर अलाउद्दीन खिलजी को दे दिया।
- खिलजी वंश के बाद यह हीरा तुगलक वंश के पास चला गया।
- तुगलक वंश से यह सैयद वंश और उसके बाद लोदी वंश के पास चला गया। लोदी वंश से यह मालवा के शासक के पास गया जिससे मुगलों ने छीन लिया।
- मुगल बादशाह मुहम्मद शाह से नादिर शाह ने छिन लिया और ईरान लेकर चला गया किन्तु पश्तुन दुरानियों ने नादिर शाह से कोहिनूर हीरा छीन लिया।
- पश्तुन दुरानी से पंजाब के सिख शासकों ने कोहिनुर हीरा छीन लिया। अंततः लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब के सिख शासकों से कोहिनूर हीरा लेकर महारानी विक्टोरिया के पास भेजा दिया। नीले रंग का यह कोहिनुर हीरा आज भी विक्टोरिया के राजमुकुट में है।

गोलकुण्डा → वारंगल → खिलजी → तुगलक → सैयद लोदी →
↓
सिख ← पश्तुन ← दुरानी ← नादिर शाह ← मुगल मालवा
└ डलहौजी → Victoria

बंगाल

- बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शीद कुली खान ने किया। इन्होंने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद को बनाया।
- इनकी मृत्यु 1727 ई. में हो गयी।
- शुजाउद्दीन अगला शासक बना किन्तु 1739 ई. में उनकी मृत्यु हो गयी।
- इसके बाद अलीवर्दी खान अगला नबाब बना। 1756 ई. में इसकी मृत्यु हो गयी।
- सिराजुद्दौला अगला शासक बना। सिराजुद्दौला का अपने ही परिवार में घसीटी बेगम से विवाद था। साथ ही साथ अपने पड़ोसी राजवल्लभाचार्य से भी विवाद था। इसी विवाद का फायदा उठाकर अंग्रेजों ने बंगाल के क्षेत्र में किला बनवाना प्रारम्भ किया। जिसे फोर्ट विलियम किला कहा गया। इस फोर्ट विलियम किला का प्रधान अधिकारी रोजर ड्रैक था।
- सिराजुद्दौला ने अचानक किला पर हमला कर दिया और वहाँ से 146 लोगों को पकड़ कर कलकत्ता के चन्द नगर नामक स्थान पर एक छोटे से घर में कैद कर दिया जिसमें 123 लोगों की मृत्यु हो गयी और मात्र 23 ही जीवित बचे। इस घटना को कालकोठरी (Black Hall) के घटना के नाम से जाना जाता है। इस घटना की जानकारी इतिहासकार हार्नवेल ने दिया। क्योंकि वह भी इसी 146 लोगों में से थे जो कैद किए गए थे।
- सिराजुद्दौला को हराने के लिए मद्रास का गर्वनर लार्ड क्लाईव बंगाल आया और उसने सिराजुद्दौला के सेनापति मीर जाफर तथा कोषाध्यक्ष (वित्तमंत्री) राय दुर्लभ को मिला लिया।
- 23 जून, 1757 को पं. बंगाल राज्य में हुगली नदी के किनारे प्लासी नामक स्थान पर प्लासी का युद्ध हुआ। इस युद्ध में सिराजुद्दौला मीर जाफर के कहने पर युद्ध से पहले ही लौट गया था। जिसकी रास्ते में हत्या कर दी गयी। और युद्ध के मैदान में मीर जाफर चुपचाप अंग्रेज का साथ देता रहा और अंग्रेज जीत गए।
- पूर्व शर्त के अनुसार मीर जाफर को बंगाल का नवाब बना दिया।
- अंग्रेजों ने मीर जाफर से धन लेना प्रारम्भ किया मीर जाफर ने भी उन्हें अत्यधिक धन दिया किन्तु धन जब समाप्त होने लगा तो मीर जाफर धन देने से कतराने लगा। इसी कारण अंग्रेजों ने मीर जाफर को हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब बना दिया। इसे बंगाल का प्रथम शांतिपूर्ण क्रांति कहते हैं।

दस्तक प्रणाली

- दस्तक एक प्रकार का शाही फरमान (राजा) था। जिस अंग्रेज के पास दस्तक होता था। उसे बंगाल के क्षेत्र में 'कर' में छूट दिया जाता था।
- अंग्रेजों ने इस दस्तक प्रणाली का दुरुपयोग प्रारम्भ करने लगा। जिस कारण मीर कासिम ने दस्तक प्रणाली को हो समाप्त कर दिया। इसी कारण अंग्रेज मीर काशिम का विरोध करना प्रारम्भ किया।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से बिहार के मुंगेर लाया और मुंगेर में गोला बारूद का कारखाना खोला।
- अंग्रेजों को मीर कासिम की यह नीति पसंद नहीं आई और अंग्रेजों ने मीर कासिम को हटाकर मीर जाफर को पुनः बंगाल का नवाब बना दिया।

बक्सर का युद्ध

- मीरकासिम ने अब अवध के नवाब शुजाउद्दौला तथा दिल्ली के मुगल बादशाह शाह आलम-II के साथ मिलकर एक त्रिगुट (तीन गुटों वाली सेना) सेना का गठन किया।
- इस सेना का नेतृत्व शाह आलम-II कर रहा था, जिसका सामना बिहार के बक्सर में अंग्रेजों के साथ 21 अक्टूबर, 1764 ई. को हुआ। इसे ही बक्सर का युद्ध कहते हैं।
- इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व एक कुशल सेनापति हेक्टर मुनरो कर रहा था।
- इस युद्ध में त्रिगुट सेना पराजित हुई और अंग्रेज विजय हो गए।
- 1765 ई. में अंग्रेजों ने शाहआलम-II के साथ इलाहाबाद की संधि किया। इस संधि के तहत शाहआलम-II ने बिहार, बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी राजस्व अंग्रेजों को सौंप दी।
- इस प्रकार बंगाल के क्षेत्र में द्वैध शासन प्रारम्भ हो गया।
- इस समय कम्पनी का गर्वनर लॉर्ड रॉबर्ट क्लाईव था।
- लॉर्ड क्लाईव को भारत में द्वैध शासन का जनक कहते हैं। बंगाल का अंतिम नवाब मुबारक शाह था।
- इसके बाद बंगाल पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया।

आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-1816)

- लार्ड हेस्टिंग्स के समय कर्नल डेविड ऑक्टरलोनी ने गोरखाओं को 1816 ई. में पराजित किया। जिसके कारण 1816 ई. में अंग्रेज तथा नेपाल के बीच संगोली की संधि हुई। इस युद्ध में नेपाल के अमर सिंह थापा को आत्मसमर्पण करना पड़ा।

आंग्ल-बर्मा युद्ध

- अंग्रेज को बर्मा पर नियंत्रण करने हेतु तीन युद्ध करने पड़े।

● प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (1824-1826)

- 1824 में अंग्रेज सेनापति सर आर्चीबाल्ड कैम्पबेल ने रंगून पर अधिकार कर लिया।
- इस युद्ध का अंत 1826 में यान्डबू की संधि के तहत हुआ।
- इस युद्ध के समय अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड एमहर्स्ट थे।
- यह ब्रिटिश भारतीय इतिहास का सबसे महंगा युद्ध था।

● द्वितीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1852)

- यह युद्ध लार्ड डलहौजी के शासन काल में लड़ी गई।
- इस युद्ध के तहत 1852 ई. में लोअर बर्मा और पीगू को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

● तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885-1888)

- यह युद्ध लार्ड डफरिन के शासन काल में लड़ी गई।
- इस युद्ध के तहत बर्मा को अंतिम रूप से अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया।

Note :–

(i) भारत शासन अधिनियम 1935 ई. में बर्मा को भारत से पृथक करने का प्रावधान था, जिसके तहत 1937 ई. में बर्मा को भारत से अलग कर दिया गया।

(ii) आंग सन की सहयोगी यूनू के नेतृत्व में चले आन्दोलन के कारण 4 जनवरी 1948 को बर्मा को ब्रिटिश राज से आजादी मिली।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

23. 1857 की क्रांति (Revolution of 1857)

➢ **1857 की क्रांति**

☛ इस क्रांति की पृष्ठभूमि 1757 के बाद से ही बन रही थी।

☛ भारतीय जनता धीरे-धीरे अंग्रेजों के खिलाफ होते जा रही थी जिसके कई कारण थे–

➢ **आर्थिक कारण**

☛ अंग्रेजों ने जमींदारी व्यवस्था, महालवारी, रैयतवाड़ी, स्थाई बंदोवस्त इत्यादि द्वारा भारतीय किसानों का अत्यधिक शोषण किया जिस कारण भारतीय किसान गरीब हो गए।

☛ वे इसका कारण अंग्रेजों को मानते थे।

➢ **सामाजिक कारण**

☛ अंग्रेजों ने सती प्रथा, नरबलि प्रथा, बाल विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया तथा विधवा पुनर्विवाह लागू करा दिया, जिस कारण भारतीय समाज में एक क्रांति की भावना आने लगी।

➢ **प्रशासनिक कारण**

☛ लार्ड डलहौजी ने हड़प नीति के तहत सतारा, अवध, झांसी, कानपुर, इलाहाबाद, जगदीशपुर, सिक्किम इत्यादि पर अधिकार कर लिया।

☛ इसने नाना साहब का पेंशन बंद कर दिया। जिस कारण ये सभी राजा विरोधी हो गए।

➢ **धार्मिक कारण**

☛ 1813 ई. में ईसाई मिशनरियों को भारत आने की अनुमति दी गई।

☛ अंग्रेज ईसाई धर्म का अत्यधिक प्रचार करते थे। जिस कारण भारतीय समाज विरोधी हो गया।

➢ **तकनीकी कारण**

☛ रेल, डाक तथा प्रेस के प्रारंभ होने से विद्रोह की भावना तथा संदेश तेजी से फैलने लगा।

➢ **सैनिक कारण**

☛ भारतीय सैनिकों को दाढ़ी, मुँछ, पगड़ी तथा बाला (कड़ा) पहनने पर रोक लगा दिया गया जिस कारण सैनिक खिलाफ हो गए।

➢ **तत्कालिक कारण**

☛ अंग्रेजों ने Base field rifel के स्थान पर Enfield राइफल को लाया। तभी यह अफवाह उड़ गई कि हिन्दुओं को दी जाने वाली राइफल के कारतुस पर गाय की चर्बी तथा मुसलमानों को दी जाने वाले राइफल के कारतुस पर सुअर की चर्बी लगी है तथा अंग्रेजों के द्वारा दिए जानेवाले आटे में गाय और सुअर के हड्डी का पाउडर मिला है। जिस कारण सैनिकों में मतभेद हो गया।

☛ बंगाल के बैरकपुर छावनी के 34वीं नेटिव इनफैन्ट्री के जवान मंगल पाण्डेय ने इन कारतुसों के प्रयोग को मना कर दिया। उसके अधिकारियों ने जब दबाव बनाया तो उसने लेफ्टिनेंट बाग तथा लेफ्टिनेंट ह्यूज को गोली मार दी। इस कारण मंगल पाण्डे को 8 अप्रैल, 1857 ई. को बैरकपुर छावनी में फाँसी दे दी गई।

☛ मंगल पाण्डेय U.P. के बलिया का रहने वाला था। इस घटना के कारण सारे सैनिकों के अंदर विद्रोह की भावना आ गई।

☛ सैनिकों ने 30 मई, 1857 ई. को विद्रोह का दिन निर्धारित किया और इसके लिए रोटी तथा कमल के फूल द्वारा संदेश फैलाया गया।

☛ सर्वप्रथम 1857 ई. की लड़ाई मेरठ के 20 NI के जवानों के द्वारा 10 मई को किया गया था।

☛ ये विद्रोही पूरे छावनी के हथियारों को लुटकर 11 मई को दिल्ली पहुँच गए।

☛ विद्रोहियों ने दिल्ली पहुंचकर दिल्ली की छावनी को जीत लिया और बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित कर दिया गया।

☛ बहादुरशाह जफर की पत्नी जिन्नत महल ने अंग्रेजों के डर से अंग्रेज को गुप्त सूचना दे दी थी।

☛ 4 जून, 1857 ई.को बेगम जहरत महल ने लखनऊ से विद्रोह कर दिया। इनका सेनापति बख्त खान था।

☛ 5 जून, 1857 ई. को नानासाहब तथा तात्याटोपे ने कानपुर से विद्रोह कर दिया।

☛ तात्याटोपे का मूल नाम राम चंद्र पांडु रंग था। ये झांसी के रानी के गुरु थे।

☛ झांसी से विद्रोह मनुबाई (झांसी की रानी) ने किया ये बनारस की रहने वाली थी जिनका विवाह ग्वालियर के राजा गंगाधर राव से हुआ था।

☛ ग्वालियर की राजधानी उस समय झांसी थी।

☛ पटना से विद्रोह पुस्तक विक्रेता पीर अली ने किया था।

☛ आरा के जगदीशपुर के जमींदार वीरकुंवर सिंह ने विद्रोह किया। इन्होंने लीग्रांड को 23 अप्रैल, 1858 ई. को पराजित कर दिया और अपनी राजधानी जगदीशपुर पर पुनः अधिकार प्राप्त कर लिया। किन्तु कुंवर सिंह के हाथ में गोली लग गई थी जिस कारण उन्होंने अपना हाथ स्वयं काट कर गिरा दिया, जिस कारण कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। कुंवर सिंह के भाई को गोरखपुर जेल में डाल दिया गया जहां उनकी भी मृत्यु हो गई।

☛ बिहार सरकार 23 अप्रैल को विजय दिवस के रूप में मनाती है।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

➢ **विद्रोह दबाने वाले अंग्रेजी सेनापति**

(i) दिल्ली (बहादुर शाह-II) : निकलसन तथा हडसन।

(ii) फैजाबाद (अयोध्या) - मौलबी अहमद उल्ला : कर्नल रेनर्ड।

(iii) फत्तेहपुर (अजीमुल्ला) : कर्नल रेनड।

(iv) बरेली (खान बहादुर खां) : विसेंट आयर।

(v) लखनऊ (हजरत महल) : कैंपबेल।

(vi) कानपुर (नाना साहब) : कैंपबेल।

(vii) झांसी (मनुबाई) : ह्यूरोज।

(viii) ग्वालियर (तात्याटोपे) : ह्यूरोज।

(ix) इलाहाबाद (लियाकत अली) : कर्नल नील।

(x) जगदीशपुर (कुंवर सिंह) : लीग्रांड।

(xi) पटना (पीर अली) : विसेंट आयर।

Remark :– कर्नल नील, लारेंस तथा हैबलक विद्रोह दबाते समय मारे गए थे।

☛ तात्या टोपे नाना साहब से अलग होने के बाद इस आंदोलन का मुख्यालय काल्पी को बनाया था।

☛ नाना साहब के सलाहकार एवं तात्या टोपे के सेनापति अजीमुल्ला खाँ थे।

☛ 1859 ई. में जब तात्या टोपे पकड़े गए तो विद्रोह को पूर्णत: समाप्त समझा जाने लगा।

☛ इन्दौर में अंग्रेजी सेनाओं से संघर्ष सहादत्त खाँ ने किया था।

☛ इस आंदोलन में अंग्रेज का सबसे कट्टर दुश्मन फैजाबाद के मौलबी अहम उल्ला शाह था।

☛ इस लड़ाई में अंग्रेजों की सर्वाधिक सहायता ग्वालियर के सिंधिया ने किया था। इस समय यहाँ के मंत्री सर दिनकर राव थे।

☛ इस विद्रोह के दौरान साहब-ए-आलम बहादुर का खिताब बहादुर शाह ने बख्त खाँ को दिया था। बख्त खान विद्रोह के सेनापति थे।

1857 के विद्रोह के असफलता का कारण–

(i) हथियारों की कमी
(ii) संगठन का अभाव
(iii) नेतृत्व की कमी
(iv) राजपुत तथा सिंधिया ने अंग्रेजों का साथ दिया
(v) शिक्षित लोग तटस्थ (Nutral) रहे
(vi) बहादुर शाह की पत्नी जीनत महल ने सभी गोपनीय सुचनाएं अंग्रेजों को दे दी और अंग्रेजों ने हुमायुं के मकबरे के समीप बहादुर शाह जफर को पकड़ लिया और उसे रंगुन भेज दिया जहाँ 1862 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
(vii) विद्रोहियों में देश प्रेम की भावना नहीं बल्कि आपसी स्वार्थ था।

Ex. :– (a) बेगम हजरत महल से अवध छिना गया।
(b) नाना साहब का पेंशन रोका गया।
(c) झांसी की रानी के दत्तक पुत्र को राजा नहीं बनाया गया।
(d) कुंवर सिंह से जमींदारी छिन ली गई।

☛ विद्रोह के दौरान लॉर्ड कैनिंग ने इलाहाबाद को आपातकालीन मुख्यालय बनाया था।

☛ विद्रोह समाप्त होते ही इंग्लैण्ड की महारानी ने अपना घोषणा पत्र लार्ड कैनिंग को भेजा। जिसे लॉर्ड कैनिंग ने इसे 1858 ई. में इलाहाबाद में पढ़कर सुनाया।

☛ इस घोषणा के अनुसार इस्ट इंडिया कम्पनी को समाप्त कर दिया गया और भारत का शासन इंग्लैण्ड की महारानी को दे दिया गया। ब्रिटेन ने यह वादा किया कि वह नया क्षेत्र पर कब्जा नहीं करेगा।

☛ विद्रोह के समय इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री पाम एलफिस्टंन थे तथा भारत का गर्वनर जनरल लॉर्ड कैनिंग था। विद्रोह समाप्ति के बाद पील आयोग के सिफारिश पर सेना का पुर्नगठन किया गया और सेना में राजपुत तथा ब्राह्मणों की संख्या घटा दी गई। जबकि नेपाली तथा पठान की संख्या बढ़ा दी गयी।

☛ इस विद्रोह के बाद यूरोपीय और भारतीय सैनिकों का अनुपात 1 : 2 रखा गया। जिसे बाद में बढ़ाकार 2 : 5 कर दिया गया।

☛ इस विद्रोह के बाद भारतीय राज्यों को प्रभुसत्ता के सिद्धांत के अंतर्गत ब्रिटिश शासन के दौरान लाया गया जिसके अनुसार 1 जनवरी, 1877 ई. को महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित कर दिया गया। अत: भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सर्वोच्चता खत्म हो गई और ब्रिटिश सत्ता (संसद) सर्वोच्च हो गई।

➢ **1857 की क्रांति में विभिन्न विद्वानों द्वारा दिया गया मत–**

(1) यह राष्ट्रीय विद्रोह था - डिजरायली।
(2) यह सैनिक विद्रोह था - सीले और लॉरेन्स।
(3) यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था- बी.डी. सावरकर।
(4) यह हिन्दु मुस्लिम षड्यंत्र था- जेम्स आउट्रम।
(5) यह ईसाइयों के विरूद्ध धर्मयुद्ध था- रीज।
(6) यह सभ्यता और बर्बरता का युद्ध था- टी.आर होम्स।
(7) यह न तो प्रथम न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था- आर.सी. मजूमदार।
(8) यह जन क्रांति था- रामबिलास शर्मा।

➢ **1857 की क्रांति में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखा गया पुस्तक–**

(1) 1857 – सुरेन्द्र नाथ सिंह, मौलाना अबुल कलाम।
(2) महान विद्रोह – अशोक मेहता।
(3) 1857 का विद्रोह – पी.सी. जोशी।
(4) प्रथम स्वतंत्रता संग्राम – बी.डी. सावरकर।
(5) प्रथम राष्ट्रीय विद्रोह – बी.डी. सावरकर।
(6) 1857 का विद्रोह और सैनिक विद्रोह - आर.सी.मजूमदार।

❑❑❑

24. क्रांतिकारी आंदोलन (Revolutionary Movement)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (1885 ई.)

- कांग्रेस एकलैटिन अमेरिकी शब्द है। अर्थात् कांग्रेस शब्द की उत्पत्ति उत्तरी अमेरिका के राजनीतिक इतिहास की देन है, जिसका अर्थ है– **व्यक्तियों का समूह।**
- कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर, 1885 ई. में हुई, उस समय भारत का वायसराय लार्ड डफरिन था।
- कांग्रेस के संस्थापक स्कॉटलैण्ड के असैन्य अधिकारी ए॰ ओ॰ ह्युम थे। इन्हें शिमला का संत (Harmit of Shimla) कहा जाता था।
- कांग्रेस का पहला अधिवेशन पूना में प्रस्तावित था किन्तु वहां प्लेग नामक बीमारी फैल जाने के कारण इसे बम्बई के गोकुल दास तेजपाल संस्कृत विद्यालय में आयोजित किया गया। जिनमें से कुल 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
- कांग्रेस ने अपने स्थापना के समय कुल 9 प्रस्ताव को पारित किए थे।
- कांग्रेस अधिवेशन के पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी एवं सचिव ए-ओ-ह्यूम थे।
- ए-ओ-ह्यूम की जीवनी बेडर बर्न ने लिखा है।
- कांग्रेस की स्थापना अंग्रेजों ने अपनी खुद की सुरक्षा वॉल्व के रूप में किया था।
- सेफ्टी वॉल्ब की अवधारणा का अर्थ है– भारत में कांग्रेस के रूप में एक ऐसे राजनीतिक संगठन का निर्माण करना जो विदेशी शासन के प्रति संभावित राजनीतिक असंतोष की लहर को रोक सके। किन्तु कांग्रेस भारतीय क्रांतिकारियों का एक मंच बन गया।
- लाला लाजपत राय ने अपनी पुस्तक यंग-इंडिया में सेफ्टी वॉल्व सिद्धांत का प्रतिपादन किया।
- कांग्रेस की वार्षिक बैठक **अधिवेशन** कहलाती थी। कांग्रेस का अधिवेशन दिसम्बर महीने में होता था और प्रत्येक वर्ष अलग-अलग स्थानों पर होता था। किन्तु 1930 ई. के बाद यह जनवरी में होने लगा।
- कांग्रेस के पहले 20 साल का काल उदारवादी का काल कहलाता है क्योंकि इस समय कांग्रेस अंग्रेजों के हाँ में हाँ मिलाती थी।
- उदारवादी के काल को बालगंगाधर तिलक ने राजनीतिक शिक्षा का काल कहा है।
- उदारवादी काल के प्रमुख नेता डब्लू.सी. बनर्जी, दादा भाई नौरोजी तथा रविन्द्रनाथ टैगोर थे।

गरम दल और नरम दल		
आधार	**नरम दल**	**गरम दल**
समय काल	कांग्रेस की स्थापना के 20 वर्षों तक (1885 से 1905 ई.) कांग्रेस नरम दल के रूप में जाना गया।	सन 1905 ई . के बाद से कांग्रेस के राष्ट्रीय आंदोलन में नई प्रवृत्तियों का उदय हुआ, जिसने कांग्रेस में एक नई गरम दल का रूप लिया।
विश्वास	उनका विश्वास था कि उनकी जायज मांगें सरकार स्वीकार कर लेगी इसिलिए वे प्रस्ताव पास कर प्रतिवदेन तैयार कर विचारार्थ सरकार के पास भे जते थे , उन हें आशा थी कि अनुनय के इन तरीकों से भारतीय जनता धीरे-धीरे अपने अधिकार प्राप्त कर लेगी और अंततः भारत स्वतंत्र हो जाएगा।	19वीं सदी के अंतिम वर्षों में नए नेता सामने आये। उनका विश्वास था कि केवल अनुनय-विनय करके भारतीय अपने अधिकार नहीं प्राप्त कर सकते। इसलिये उन्होंने जनता को आत्मबल का पाठ पढ़ाया और उनमें देश-प्रेम की भावना भर दी। उन्होंने जनता को देश के लिए कोई भी कुर्बानी देने के लिए तैयार किया। बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित गीत वंदे मातरम् पूरे देश में राष्ट्रीय गीत के रूप में लोकप्रिय हुआ।
प्रमुख नेता	सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता और अन्य पुराने नेता।	बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल, लाला लाजपत राय और अरविंद घोष।

- भारत में क्रांतिकारी गतिविधियों की शुरूआत महाराष्ट्र से हुई, जिसे उभारने का श्रेय बाल गंगाधर तिलक के पत्र केसरी को जाता है। जबकि क्रांतिकारी आंदोलन का प्रधान केंद्र बंगाल था।

➢ **क्रांतिकारी आंदोलन**

क्रांतिकारी आंदोलन दो क्षेत्रों में हुई–

1. भारत, 2. विदेश

- भारत में क्रांतिकारी आंदोलन दो चरणों में हुई- प्रथम चरण तथा द्वितीय चरण।

क्रांतिकारी आंदोलन का प्रथम चरण

- बाल गंगाधर तिलक ने क्रांतिकारी युवाओं को एकजुट होने, राष्ट्रवाद की भावना भरने तथा शस्त्र की प्रशिक्षण देने के लिए 1893 में गणपति महोत्सव तथा 1895 में शिवाजी महोत्सव प्रारंभ किया।
- इनका कहना था ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे।''

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- तिलक की प्रेरणा से महाराष्ट्र में 'आर्य बांधव समिति' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना हुई।

➢ **व्यायाम मण्डल**

- इसकी स्थापना 1897 में चापेकर बंधु तथा दामोदर हरि एवं बालकृष्ण हरि ने किया था।
- इन्होंने पूना के प्लेग अधिकारी डब्लू.सी.रेंड और आयर्स्ट की हत्या कर दी क्योंकि, वह भारतीय जनता से सहयोग करने के बजाय टैक्स वसूल रहा था।

➢ **मित्र मेला और अभिनव भारत**

- गणपति उत्सव मनाने के दौरान 1899 ई. में बी.डी. सावरकर द्वारा नासिक में मित्र मेला की स्थापना की गई।
- यह मित्र मेला आगे जाकर 1904 ई. में अभिनव भारत के रूप में परिवर्तित हो गया।
- यह संस्था मेजिनी के तरूण इटली के सदृश्य एक गुप्त सभा थी।
- इसी अभिनव भारत के एक सदस्य अनंत लक्ष्मण कान्हरे ने नासिक के मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या कर दी, इसी घटना को नासिक षड़यंत्र केस कहते हैं।
- इसी संस्था के सदस्य पांडुरंग महादेव वापट को बम बनाने की कला सिखने के लिए पेरिस भेजा गया था।
- 1906 ई. में सावरकर कानून की पढ़ाई के लिए लंदन चले गए। जहाँ 1857 के क्रांति की 50वीं सालगिरह मनाई जा रही थी।
- इन्होंने अपनी पुस्तक India War for Freedom में 1857 की क्रांति को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कहा है।

➢ **अनुशीलन समिति**

- यह बंगाल की पहली क्रांतिकारी संस्था थी, जिसकी स्थापना 24 मार्च, 1902 ई. को मिदनापुर में ज्ञानेंद्रनाथ बसु द्वारा तथा कलकत्ता में जतीन्द्र नाथ बनर्जी और बारीन्द्र कुमार घोष के द्वारा किया गया था।
- प्रारंभ में इस समिति का नाम भारत अनुशीलन समिति था। जिसके अध्यक्ष प्रमथ नाथ मित्रा और उपाध्यक्ष चितरंजन दास थे।
- इस संस्था में निवेदिता एक मात्र महिला सदस्य थी।

➢ **युगांतर समिति**

- बंगाल के क्षेत्र से क्रांतिकारी आंदोलन वरिन्द्र नाथ घोष तथा भूपेन्द्र नाथ घोष ने किया। इन्होंने युगांतर नामक पत्रिका में कहा कि यदि 30 करोड़ भारतीयों के 60 करोड़ हाथ एक साथ खड़े हो जाए तो कोई अंग्रेज की ताकत नहीं की उसे रोक सके।
- खुदीराम बोस एवं प्रफुल्ल चाकी इस समिति के सक्रिय सदस्य थे।
- प्रफुल्ल चाकी तथा खुदीराम बोस ने 1908 ई. में मुजफ्फरपुर के जज किंग्स फोर्ड की गाड़ी पर बम फेंक दिया, किन्तु दुर्भाग्य से किंग्स फोर्ड की पत्नी कैनेडी एवं पुत्री की मृत्यु हो गई।
- प्रफुल्ल चाकी पुलिस की डर से आत्म हत्या कर लिए जबकि अंग्रेजों ने खुदीराम बोस को 11 अगस्त, 1908 ई. को लगभग 18 वर्ष की आयु में मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दिया। यह सबसे कम उम्र में फाँसी चढ़ने वाले क्रांतिकारी थे।

➢ **अलीपुर षड़यंत्र केस**

- अंग्रेजी सरकार ने मानीकटोला उद्यान एवं कलकत्ता में अवैध हथियारों के तलाशी के दौरान कई व्यक्तियों को गिरफ्तार कर अलीपुर कारागार (कलकत्ता) में डाल दिया गया। जिसे अलीपुर षड़यंत्र केस कहते हैं।
- इसमें अरविंद घोष एवं बारीन्द्र घोष गिरफ्तार किए गए थे, जिसमें से बारीन्द्र घोष को आजीवन काला पानी की सजा दी गई एवं चितरंजन दास के बचाव से अरविंद घोष बरी हो गए।
- इस घटना के बाद अरविन्द घोष सन्यासी बन गए और पाण्डेचेरी चले गये जहाँ उन्होंने ओरेविले आश्रम की स्थापना की।

बंगाल विभाजन (1905)

- वर्ष 1905 तक आते-आते बंगाल में राष्ट्रवाद की भावना चरम सीमा पर पहुँच गया था। अत: राष्ट्रीय चेतना को समाप्त करने के लिए अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया।
- बंगाल विभाजन की घोषणा लार्ड कर्जन ने 19 जुलाई, 1905 ई॰ को किया जो 16 अक्टुबर, 1905 ई. को विभाजन लागू हो गया।
- बंगाल विभाजन के समय बंगाल का लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एण्ड्रूज फ्रेजर थे।
- इसी दिन 19 अक्टूबर, 1905 ई. को शोक दिवस के रूप में मनाया गया है।
- रविन्द्र नाथ टैगोर के कहने पर इसे रक्षाबंधन दिवस के रूप में मनाया गया।
- बंगाल विभाजन के अवसर पर ही रविन्द्र नाथ टैगोर ने अपना प्रसिद्ध गीत **अमार सोनार बांग्ला** लिखा जो वर्तमान में बांग्ला देश का राष्ट्रीय गान है।
- बंगाल विभाजन लॉर्ड कर्जन ने साम्प्रदायिकता के आधार पर विभाजन कर दिया, किन्तु अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन का कारण प्रशासनिक सुधार को बताया।
- पूर्वी बंगाल में मुसलमानों को अधिक रखा और पश्चिम बंगाल में हिन्दुओं को अधिक रखा।
- अंग्रेज मुसलमानों के संरक्षक का काम करने लगे और उन्हें पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं से लड़वाने लगे। जबकि पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक मुसलमानों से अंग्रेज यह कहते थे कि हम तुम्हारे संरक्षक बनकर रहेंगे।
- अंग्रेज बंगाल से फुट डालो और शासन करो की नीति प्रारंभ कर दिया। अंग्रेजों की बंगाल विभाजन की नीति सफल नहीं हो पाई क्योंकि 1905 ई. में बंगाल के टाउन हाउस से स्वदेशी तथा बहिष्कार आंदोलन प्रारंभ हो गया था।
- भारतीयों ने अंग्रेजों के वस्त्र, विद्यालय, वस्तुएँ इत्यादि का बहिष्कार किया और स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया।
- भारतीय लोगों ने अंग्रेजों के कपड़े धुलने, उनके यहाँ नौकरी करने तथा उनके विद्यालय में पढ़ने से मना कर दिया।

- इस आंदोलन के दौरान भारतीयों ने विदेशी कपड़ों को जला दिया। जिसे रविन्द्र नाथ टैगोर ने एक निष्ठुर अपराध कहा।
- बंगाल में ब्रिटेन के वस्तुओं के बहिष्कार का सुझाव सर्वप्रथम कृष्ण कुमार मित्र ने दिया था।
- स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख नेता व्योमेश चंद्र बनर्जी, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, बिपीन चन्द्र पाल एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर इत्यादि थे। इन्होंने बंगाल विभाजन को रद्द करने के लिए बंग भंग आंदोलन चलाया।
- मद्रास में स्वदेशी आंदोलन का नेतृत्व चिदम्बरम पिल्लै, पंजाब में अजित सिंह एवं लाला लाजपत राय, बम्बई और पूणे में लोकमान्य तिलक तथा दिल्ली में सैयद हैदर रजा ने किया था।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान ही **वन्दे मातरम्** भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का शीर्षक गीत बना था।
- स्वदेशी के प्रचार प्रसार हेतु बालगंगाधर तिलक द्वारा महाराष्ट्र में 'स्वदेशी वस्तु – प्रचारिणी सभा' का गठन किया गया।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान रवीन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन से प्रेरणा लेकर कलकत्ता में 14 अगस्त, 1906 ई. को बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना की।
- इस कॉलेज के प्रथम प्रधानाचार्य अरविन्द्र घोष को बनाये गये।
- ब्रिटिश पत्रकार एच.डब्लू. नेविन्सन स्वदेशी आंदोलन से जुड़े हुए थे।

Note :– सामान्यत: कृषक वर्ग के लोग एवं मुसलमान 1905 ई. के स्वदेशी आंदोलन से अप्रभावित रहे थे जबकि महिलाएँ एवं बुद्धिजीवि वर्ग के लोग इस आंदोलन से प्रभावित थे।

- 1911 ई. में लॉर्ड हार्डिंग के समय ब्रिटेन के राजा जार्ज पंचम भारत आए। उनके आगमन पर दिल्ली में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसे दिल्ली दरबार कहते हैं। इसी दोरान 1911 ई. में तीन घोषणाएँ की गई।
  (i) बंगाल विभाजन को रद्द किया जाएगा।
  (ii) बंगाल से बिहार को अलग कर दिया जाएगा।
  (iii) भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली बनाई जाएगी।
- इन तीनों घोषणाओं को 1 जनवरी, 1912 ई. को लागू किया गया।

Note :– 1912 ई. में बंगाल से बिहार अलग हुआ। 1936 ई. में बिहार से उड़ीसा अलग हुआ।

- 15 नवम्बर, 2000 ई. को बिहार से झारखण्ड अलग हुआ।

Remark :– लॉर्ड कर्जन ने जब बंगाल का विभाजन किया तो गोपाल कृष्ण गोखले ने लॉर्ड कर्जन की तुलना औरंगजेब से कर दी।

- 1910 ई. आते-आते क्रांति आंदोलन का पहला चरण समाप्त हो गया।

क्रांतिकारी आंदोलन का दूसरा चरण

- द्वितीय चरण की शुरूआत महात्मा गाँधी के अचानक असहयोग आंदोलन समाप्त करने के कारण हुआ।

➢ हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)

- इसकी स्थापना शचीन्द्र नाथ सान्याल ने Oct, 1924 ई. में कानपुर में की थी।
- इसका उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों के माध्यम से देश में समाजवादी संघीय गणतंत्र की स्थापना करना था।
- इस संगठन को धन की आवश्यकता थी जिसे एकत्रित करने के लिए इस संस्था के सदस्य ने काकोरी षडयंत्र किया।

➢ काकोरी षडयंत्र (9 August, 1925 ई.)

- सहारनपुर से लखनऊ आ रही ट्रेन को काकोरी नामक स्थान पर 8 डॉउन सहारनपुर– लखनऊ पैसेंजर ट्रेन को रोक कर उसमें से ब्रिटिश खजाने को लूट लिया गया।
- इस आरोप में अस्फाकउल्ला खान को फैजाबाद जेल में, रौशन सिंह को इलाहाबाद जेल में, राजेन्द्र लाहिड़ी को गोंडा जेल में तथा राम प्रसाद विस्मिल को गोरखपुर जेल में फाँसी दे दिया गया।
- फाँसी पर चढ़ने वाले पहले मुस्लिम क्रांतिकारी अस्फाकउल्ला खान थे।
- इस कांड के सरकारी वकील जगत नारायण मुल्ला थे।
- काकोरी कांड के मुख्य अभियुक्त चंद्रशेखर आजाद वहां से फरार हो गए बाद में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अंग्रेजों से मुठभेड़ हो गई।
- चंद्रशेखर आजाद ने अपनी आखिरी गोली से खुद को गोली मार ली। इस प्रकार 27 फरवरी, 1931 ई. को इनकी मृत्यु हो गई। इनका कहना था "English has no bullet to shoot me."
- राम प्रसाद बिस्मिल का नारा था "सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।"

➢ नौजवान सभा

- इसकी स्थापना मार्च 1926 ई. में भगत सिंह, छबील दास एवं यशपाल द्वारा पंजाब में किया गया था।
- 1928 ई. में इस सभा को हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन में विलय कर दिया गया। (पुनः बाद में इसे HSRA में विलय कर दिया गया।)

➢ हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)

- इसकी स्थापना 10 सितम्बर, 1928 ई. को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में चन्द्रशेखर आजाद द्वारा किया गया।
- यह संस्था काकोरी कांड के बाद समाप्त हुए हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थान पर स्थापना किया गया था।
- यह संस्था एक लोकतांत्रिक संगठन था जिसमें फैसले बहुमत के आधार पर होते थे।
- इसी संगठन के सदस्यों द्वारा साण्डर्स की हत्या, असेम्बली बम कांड एवं लाहौर षड्यंत्र केस को अंजाम दिया गया।

Note :– साईमन कमीशन का विरोध एवं सॉण्डर्स की हत्या नौजवान सभा के सदस्यों ने भी किया था।

- **साण्डर्स की हत्या**

☞ लाला लाजपत राय की साइमन कमीशन के विरोध के दौरान लाठी चार्ज में घायल होने के उपरांत मृत्यु होने पर इसका बदला 17 दिसम्बर, 1928 ई. को लाहौर के सहायक पुलिस अधीक्षक सॉण्डर्स की गोली मारकर हत्या कर के ली।

☞ इस कांड में भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव और जय गोपाल शामिल थे।

Note :– लाला लाजपत राय को शेर-ए-पंजाब के उपाधि से विभूषित किया गया था।

- **असेम्बली बम कांड**

☞ 8 अप्रैल, 1929 ई. को भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त द्वारा केन्द्रीय विधान सभा में ट्रेड डिसप्यूट बिल और पब्लिक सेफ्टी बिल के विरोध में बम फेका गया।

☞ असेम्बली में बम फेकते समय भगत सिंह की उम्र 21 वर्ष से थोड़ा ज्यादा थी।

☞ असेम्बली में बम फेकते समय पहली बार भगत सिंह ने **इन्कलाब जिन्दाबाद** का नारा दिया था।

Note :– यह नारा मौलाना हसरत मोहानी द्वारा लिखा गया था।

☞ इस बम कांड का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं था बल्कि बहरे कानों तक अपनी आवाज पहुंचाने के लिए था।

☞ भगत सिंह ने कहा अंग्रेज सोये हुए हैं इन्हें जगाने का यही रास्ता है।

☞ इस कांड के लिए भगत सिंह एवं बटुकेश्वर दत्त को उम्र कैद की सजा दी गई।

- **लाहौर षड्यंत्र केस**

☞ असेम्बली बम कांड एवं सॉण्डर्स हत्या कांड में शामिल अभियुक्तों के खिलाफ लाहौर में मुकदमा चलाया गया जिसे लाहौर षड्यंत्र केस या भगत सिंह ट्रायल के नाम से जाना जाता है।

☞ इस केस के निर्णय के आधार पर भगत सिंह, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त पर मुकदमा चलाया गया और 14 फरवरी, 1931 ई. को इन्हें मौत की सजा सुना दी गई। और 23 मार्च, 1931 ई. को इन्हें फाँसी दे दिया गया।

Note :– जतीनदास जेल में भूख हड़ताल पर बैठ गए और जेल में 64 दिन की भूख हड़ताल के बाद उनकी मृत्यु हो गई।

➢ **इण्डियन रिपब्लिकन आर्मी (IRA)**

☞ इसकी स्थापना 1930 ई. में सूर्य सेन (मास्टर दा) द्वारा बंगाल के चटगांव में किया गया।

☞ इस संस्था के प्रमुख कार्य चटगांव स्थित शस्त्रागारों का लूटना था।

➢ **चटगांव शस्त्रागार षडयंत्र–** बंगाल क्षेत्र में सूर्यसेन ने क्रांतिकारी आंदोलन को 1930 ई. में बढ़ावा दिया। इन्होंने अप्रैल, 1930 ई. को चटगांव में अंग्रेजों के शस्त्रागार को लुट लिया। जिस कारण अंग्रेजों ने इन्हें 1934 ई. में फाँसी दे दिया। इस प्रकार भारत का क्रांतिकारी आंदोलन समाप्त हो गया।

विदेशों में हुए क्रांतिकारी आंदोलन

➢ **इंडियन होमरूल सोसाइटी**

☞ इसकी स्थापना 1905 ई. में लंदन में हिडमेन के सुझाव पर श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा किया गया।

☞ इसका उद्देश्य भारत में स्वशासन की स्थापना करना था।

☞ भारत से बाहर विदेश के धरती पर स्थापित यह पहली क्रांतिकारी संस्था थी।

- **विलियम कर्जन वाइली की हत्या**

☞ इण्डिया हाउस के सदस्य मदन लाल ढींगरा द्वारा 1 जुलाई, 1909 ई. को लंदन में भारत सचिव विलिय कर्जन वाइली की गोली मारकर हत्या कर दी।

☞ इस हत्या का कारण था कि कर्जन वाइली ने उदयपुर रियासत के रेजिडेंट की हैसियत से श्यामीजी कृष्ण वर्मा को प्रताडित करने से।

➢ **स्टुटगार्ट सम्मेलन (1907 ई.)**

☞ 1907 ई. में जर्मनी के स्टुटगार्ट शहर में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस के सम्मेलन में विभिन्न राष्ट्रों को बुलाया गया जिसमें भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए 22 अगस्त, 1907 ई. को भारतीय स्वतंत्रता की जननी मैडम भिखाजी कामा ने भारत का प्रथम राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया।

☞ इस झंडा का डिजाइन मैडम भिखाजी कामा के साथ सरदार सिंह राना ने किया था।

☞ इस झंडे में तीन रंग– लाल, हरा एवं पीला का प्रयोग किया गया था तथा इसमें आठ कमल के फूल एवं आठ राज्यों के प्रतीक थे। इस झंडे मध्य में देवनागिरी अक्षरों में **वन्देमातरम्** लिखा था।

➢ **गदरपार्टी**

☞ इसकी स्थापना लाला हरदयाल ने 1 नवम्बर, 1913 ई. में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में किया गया।

☞ इसके प्रथम अध्यक्ष सोहन सिंह भाखना थे तथा इसी के सुझाव पर गदरपार्टी का स्थापना किया गया।

☞ यह पार्टी **हिन्दुस्तान गदर** नामक पत्र निकालती थी जिसका प्रथम अंक उर्दू में छपता था और बाद में गुरूमुखी लिपि में भी छपने लगा।

☞ यह पत्रिका कालान्तर में उर्दू एवं गुरूमुखी के अलावा हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, पंजाबी एवं गुजराती में भी छपने लगी।

☞ इस पत्रिका का संपादन रामचन्द्र पेशावरी करते थे।

☞ यह एक क्रांतिकारी संगठन था।

☞ अमेरिका में गदर पार्टी पर प्रतिबंध के बाद लाला हरदयाल ने मैडम भिखाजी कामा से मिलकर 1916 ई. में **भारतीय स्वतंत्रता समिति** की स्थापना बर्लिन में की।

➢ **कामागाटा मारू (1914 ई.)**

☞ गुरुदत्त सिंह ने कामागाटा मारू नामक जापानी जहाज को भाड़े पर लिया और कुछ भारतीयों को कलकत्ता से लेकर कनाडा की ओर चल दिया किन्तु कनाडा सरकार अँग्रेजों के दबाव में आकर यह घोषणा किया कि वैंकुवर बंदरगाह पर उसी जहाज को रूकने दिया जाएगा जो रास्ते में बिना कहीं रूके आया है किन्तु कामागाटामारू जहाज सिंगापुर में रूका था।

☞ कनाडा सरकार ने उस जहाज को वैंकुवर बंदरगाह पर रूकने नहीं दिया। अत: जहाज वापस कलकत्ता बंदरगाह लौट आया।

☞ जब ये क्रांतिकारी वापस कलकत्ता के बजबज बंदरगाह पर पहुंचे तो अंग्रेजों और इनके बीच गोलीबारी शुरु हो गई इस घटना को ही कामागाटा मारू की घटना कहते हैं।

25. सामाजिक सुधार संगठन (Social Reform Organization)

1. ब्रह्म समाज

- इसके संस्थापक राजाराम मोहन राय थे। जिन्होंने इसकी स्थापना 1828 ई. में की थी।
- इन्हें राजा की उपाधि अकबर द्वितीय ने दिया था।
- ये हिन्दू धर्म के कुप्रथाओं के विरूद्ध आवाज उठाए जिस कारण उन्हें भारतीय पुनर्जागरण (सुधार) तथा आधुनिक भारत का अग्रदूत कहा जाता है।
- सुभाष चंद्र बोस ने इन्हें युग दूत कहा है। इन्होंने डेविड हेयर की सहायता से 1817 ई. में हिन्दू कॉलेज की स्थापना तथा 1825 ई. में वेदांत कॉलेज की स्थापना की। 1829 ई. में विलियम बेंटिक के सहयोग से इन्होंने सती प्रथा का अंत कर दिया।
- इन्होंने सती प्रथा का घोर विरोध अपनी पुस्तक संवाद कौमुदी के माध्यम से किया।
- इन्हें फारसी, बंगाली, अंग्रेजी तथा उर्दू का अच्छा ज्ञान था। इन्होंने सर्वाधिक पत्रिका फारसी भाषा में लिखा।
- 1821 ई. में संवाद कौमुदी बंगाली भाषा में तथा 1822 ई. में मिरातुल अखबार फारसी में प्रकाशन किया।
- 1833 ई. में लंदन में मेनिनजाइटिस के कारण इनकी मृत्यु हो गई।
- इनके दो प्रमुख शिष्य देवेन्द्र नाथ टैगोर तथा केशवचन्द्र सेन थे।
- इसके पश्चात् 1843 ई. में देवेन्द्र नाथ टैगोर ने ब्रह्म समाज का नेतृत्व किया।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर तथा केशवचन्द्र के बीच मतभेद हो गया। जिस कारण इन दोनों ने ब्रह्म समाज को छोड़ दिया।
- देवेन्द्र नाथ टैगोर ने 1865 ई. में भारतीय आदि ब्रह्म समाज की स्थापना की जबकि 1865 ई. में केशवचन्द्र सेन ने एक नया संगठन नवीन ब्रह्म समाज या भारतीय ब्रह्म समाज की स्थापना की।

2. आर्य समाज

- इसके संस्थापक दयानंद सरस्वती थे।
- दयानंद सरस्वती का जन्म गुजरात में 1834 ई. में हुआ था।
- इनका वास्तविक नाम मूलशंकर था। इनके गुरु विरजानंद थे।
- इन्होंने आर्य समाज की स्थापना 1875 ई. में मुम्बई में किया और 1877 ई. में इसकी शाखा लाहौर में खोली।
- आर्यसमाज का नारा था- ''भारत भारतीयों के लिए है।'' जबकि दयानंद सरस्वती का नारा था- ''वेदों की और लौटो।''
- दयानंद ने सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का विरोध किया किन्तु महिला शिक्षा तथा विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।
- इनके मृत्यु के बाद 1886 ई. में इनके शिष्य हंसराज ने DAV (दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज) की स्थापना किया जो भारत के लगभग सभी जिलों में फैल चुका है।
- भारतीय चिंतकों में स्वराज शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम स्वामी दयानंद ने ही किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया।
- स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ में अपने विचारों को प्रतिपादन किया।
- वेलेंटाइल शिरॉल ने अपनी पुस्तक इंडियन अनरेस्ट में आर्य समाज को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा।

  Note:– वेलेंटाइल ने बाल गंगाधर तिलक को 'भारतीय असंतोष का पिता' के रूप में बताया।

3. राम कृष्ण मिशन

- इन्होंने अपने गुरु परमहंस की स्मृति में 1897 ई. में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- इसके संस्थापक स्वामी विवेकानंद थे। इन्होंने अपने गुरु रामकृष्ण के नाम पर इसका नामकरण किया।
- विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 ई. को कलकत्ता में हुआ।
- इनका नाम नरेन्द्र दत्त था। रामकृष्ण परमहंस ने इन्हें हिन्दू धर्म की शिक्षा दी थी।
- 1887 ई. में इन्होंने कलकत्ता में बेलुरमठ की स्थापना की।
- 1893 ई. में इन्होंने ऐतिहासिक शिकागो धर्म सम्मेलन में भाग लिया।
- इन्होंने अमेरिका के न्यूयार्क में वेदान्त सोसायटी की स्थापना 1896 ई. में कर दिया।
- 1897 ई. में इन्होंने बेलुरमठ को रामकृष्ण मिशन का अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय बना दिया।
- 1902 ई. में इनकी मृत्यु हो गई। इन्हें हिन्दू नेपोलियन या तुफानी हिन्दू कहते हैं। सुभाषचन्द्र बोस ने इन्हें भारत का अध्यात्मिक गुरु कहा।
- इन्हें स्वामी विवेकानंद नाम खेतड़ी के महाराजा ने दिया था।

4. थियोसोफिकल सोसायटी

- इसकी स्थापना मैडम ब्लावाटस्की तथा कर्नल आलकाट ने 1875 ई. में अमेरिका के न्यूयॉर्क में किया। यह संस्था विभिन्न देशों में संस्कृति तथा शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कार्यरत थी।
- थियोसोफिस्टों का हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म तथा कर्म के सिद्धांतों पर विश्वास था और वे सांख्य तथा वेदान्त (उपनिषदों) दर्शन को अपना प्रेरणास्त्रोत मानते थे।
- 1886 ई. में इसकी एक शाखा मद्रास के अडियार में खोली गई जो आगे चलकर इस संस्था का मुख्यालय बन गया। इसी शाखा की एक सदस्य बनकर आयरलैण्ड की महिला एनी बेसेंट भारत आयी।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- इन्होंने आयरलैण्ड की भांति भारत में भी होमरूल आंदोलन प्रारंभ करना चाहती थी किन्तु भारत में यह सफल नहीं हो पाया।
- बेसेन्ट ने 1898 ई. में बनारस में 'सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज' की नींव रखी जो आगे चलकर 1916 ई. में मदन मोहन मालवीय के प्रयासों से यह कॉलेज बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ।

5. यंग बंग आंदोलन

- इसे हेनरी विलियम डेरीजीयो ने 1828 ई. में प्रारंभ किया। यह बंगाल के युवाओं का आंदोलन था। ये भारतीय प्रेस की स्वतंत्रता की मांग करते थे।
- डेरीजीयो ने 'ईस्ट इंडिया' नामक दैनिक पत्र का भी संपादन किया।
- हेनरी विवियन डेरीजीयो को आधुनिक भारत का प्रथम राष्ट्रवादी कवि माना जाता है।

6. वेद समाज तथा प्रार्थना समाज

- केशव चन्द्र सेन के प्रयासों से वेद समाज की स्थापना मद्रास के **के. श्री धरालु नायडू** ने 1864 ई. में की थी।
- केशवचन्द्र सेन के प्रभाव से 1867 ई. में बम्बई में डॉ. आत्माराम पाण्डुरंग ने प्रार्थना समाज को स्थापित किया।
- डॉ. आत्माराम पाण्डुरंग तथा महादेव गोविंद रानाडे ने प्रार्थना समाज को स्थापित किया।
- प्रार्थना समाज ने दलितों, अछूतों, पिछड़ों तथा पीड़ितों की दशा एवं दिशा में सुधार हेतु 'दलित जाति मण्डला (Depressedclassed mission) 'समाज सेवा संघ' (Social Service League), का गठन किया।
- शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु रानाडे ने पूना में 1884 ई. में दक्कन एजुकेशनल सोसाइटी तथा 1891 ई. में विधवा-पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करने के लिये 'विधवा पुनर्विवाह संघ' की स्थापना की।
- रानाडे को पश्चिम भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अग्रदुत माना जाता है।
- स्त्री शिक्षा के लिए श्री केशव कर्वे ने 1916 ई. में बम्बई में प्रथम 'भारतीय महिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की।

7. परमहंस मण्डली

- 1849 ई. में महाराष्ट्र में आत्माराम पाण्डुरंग तथा उनके तीन सहयोगियों दादोबा पाण्डुरंग, बालकृष्ण जयकर एवं जाम्बेकर शास्त्री के साथ मिलकर परमहंस मण्डली की स्थापना की थी।
- इस मण्डली का मुख्य उद्देश्य धर्म तथा समाज के प्रति सुधार लाकर सामाजिक असमानता तथा भेदभाव को मिटाना था।

8. सत्य शोधक समाज

- इसकी स्थापना ज्योतिराव गोविन्दराव फुले उर्फ ज्योतिबा फुले ने 1873 ई. में मम्बई (महराष्ट्र) में की थी।
- इसने निम्न जातियों को ब्राह्मणवादी व्यवस्था से मुक्त कराने हेतु स्थापना किया गया था।
- ज्योतिराव फुले ने एक पुस्तक गुलामगिरी का प्रकाशन किया जिसमें ब्राह्मणों को प्रभुत्व चुनौती दी और पुरोहीत वर्ग को समाज का शोषक सिद्ध किया।

9. वायकोम सत्याग्रह

- यह आन्दोलन केरल में 1924 ई. में चलाया गया था।
- इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य मंदिर में निम्न जाति को प्रवेश को लेकर चलाया गया था।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व श्री नारायण गुरु ने किये थे।
- नारायण गुरु ने कहा था कि मानव के लिए एक धर्म, एक जाति और एक ईश्वर हैं।
- अरुविप्पुरम आन्दोलन 1888 ई. में नारायण गुरु के ही द्वारा चलाया गया था।

कुछ अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक कानून

- गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा 1829 ई. में अधिनियम 17 द्वारा सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया।

➢ शिशु हत्या

- राजपुताना उ.प. प्रांत और पंजाब में कन्या हत्या का प्रचलन था जिस पर रोक लगाने हेतु 1870 ई. में प्रभावकारी कानून बनाए गए।

➢ विधवा विवाह

- विधवा विवाह को प्रोत्साहन देने हेतु जुलाई, 1865 ई. में गवर्नर जनरल कौंसिल के सदस्द जे.पी. ग्रान्ट ने एक अधिनियम प्रस्तुत किया जो 13 जुलाई, 1856 ई. को पास हुआ इसे विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 ई. के नाम से जाना जाता है।
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के प्रयास से पहला विधवा विवाह श्री चन्द्र विद्या रत्न और काली मती देवी का हुआ था।

➢ नरबली प्रथा

- लॉर्ड हार्डिंग ने गोंड जाति में प्रचलित नर बलि की प्रथा को कानून बना कर समाप्त किया।

➢ बाल विवाह

- बाल विवाह को समाप्त करने के लिए केशव चन्द्र सेन (1870 ई.) ने Indian Reform Association की स्थापना की।
- केशव चन्द्रसेन के प्रयास से सरकार ने 1872 ई. में बाल विवाह अधिनियम बनाया जिसमें लड़कियों के लिए न्यूनतम उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई।
- बहरामजी मालावारी के प्रयत्न से 1891 ई. में सम्मति आयु अधिनियम (Age of Consent Act.) के द्वारा 10वें नियम के तहत बालिका के विवाह की उम्र घटाकर 12 वर्ष कर दिया गया।
- हरविलास शारदा के प्रयत्न से 1930 ई. में शारदा अधिनियम लाया गया जिसमें लड़कियों की विवाह की उम्र 14 वर्ष निर्धारित की गई।

- 1949 ई. में 15 वर्ष तथा 1978 ई. में लड़कियों के लिए विवाह की उम्र 18 वर्ष निर्धारित किया गया।

मुस्लिम सुधार आंदोलन

1. वहावी आंदोलन

- इसका प्रारंभ वरेली से हुआ किन्तु पटना इसका केन्द्र बन गया। यह पश्चिमी संस्कृति का विरोध करते थे। इसके संस्थापक सैयद अहमदबरेली थे। यह सबसे संगठित आंदोलन था।
- बंगाल में वहाबी आंदोलन का नेतृत्व सैयद अहमद बरेलबी के शिष्य मीर निसार अली (टीटू मीर) ने किया।

2. अलीगढ़ आंदोलन

- इसका प्रारंभ अलीगढ़ से हुआ। इसका उद्देश्य मुसलमानों को उच्च शिक्षा देना था। इसके संस्थापक सर सैयद अहमद खान ने 1875 ई. में अलीगढ़ एंग्लो ओरिएण्टल कॉलेज की स्थापना किया। जो 1920 ई. में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय का रूप ले लिया। सर सैयद अहमद खां ने Petriotic Association की स्थापना किये थे।
- सैयद अहमद ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए 1870 ई. में 'तहजीब-उल-अखलाख' (सभ्यता और नैतिकता) नामक फारसी पत्रिका लिखी।
- सर सैयद अहमद खाँ के अलीगढ़ आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य था– मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा देकर ब्रिटिश राज का भक्त बनाना।
- अंग्रेजों का राजभक्त होने के कारण 'राजभक्त मुसलमान' पत्रिका का भी प्रकाशन किया तथा 'असबाब-ए-बगावत-ए-हिन्द' नामक पुस्तक 1857 के विद्रोह पर लिखी।

3. अहमदिया आंदोलन

- इसका प्रारंभ गुरुदासपुर जिले के कादिया नाम स्थान से हुआ था।
- इसके संस्थापक मिर्जा गुलाम अहमद थे।
- ये हिन्दू-मुस्लिम में एकता लाना चाहते थे।
- अहमदिया आन्दोलन उदारवादी सिद्धांतों पर आधारित था।
- इन्होंने स्वयं को कृष्ण एवं ईसा-मसीह का अवतार घोषित कर दिया जिस कारण हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही इस संस्था से हट गए।
- मिर्जा गुलाम अहमद ने अपने सिद्धांतों की व्याख्या अपनी पुस्तक बराहीन-ए-अहमदिया में की।

4. देवबंद आंदोलन

- यह उत्तर प्रदेश के सहारनपुर से प्रारंभ हुआ।
- इसके संस्थापक उलेमा मुहम्मद कासिम ननौत्वी तथा राशिद अहमद गंगोही थे।
- यह आंदोलन एक पुनर्जागरण आन्दोलन था जिसका उद्देश्य कुरान तथा हदीस की शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना और विदेशी शासकों के विरुद्ध 'जिहाद' की भावना को जीवित रखना था।
- यह पश्चिमी संस्कृति का विरोध करता था तथा इस्लामिक संस्कृति शिक्षा को बढ़ावा देता था।

Note :– डब्ल्यु.डब्ल्यू. हंटर ने कहा था कि ''मुसलमान यदि खुश और संतुष्ट हैं तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महत्तम बचाव होगा।''

मुस्लिम सामाजिक धार्मिक आंदोलन

आंदोलन	वर्ष	स्थान	संस्थापक	मुख्य उद्देश्य
फरायजी आंदोलन	1804	फरीदपुर (पू.बंगाल)	हाजी शरीयत उल्ला, दादू मियां	इस्लाम के मूल सिद्धांतों पर बल
तैय्यूनी आंदोलन	1839	ढाका	करामत अली जौनपुरी	–
मोहम्डन लिटरेटी सोसायटी	1863	कलकत्ता	अब्दुल लतीफ	शोषित एवं पिछड़े मुस्लिम समाज को शिक्षित कर विकास की मुख्य धारा मं लाना।
नदवतुल आंदोलन	1894-96	लखनऊ	मौलाना शिवली नूमानी	मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में वैज्ञानिक एवं अंग्रेजी शिक्षा का प्रवेश।

पारसी सुधार आन्दोलन

➢ **रहनुमाई मजद्यासन सभा**

- इस सभा की स्थापना 1851 ई. में बम्बई में दादा भाई नौरोजी तथा उनके सहयोगियों– नौरोजी फरदोनजी, जे.बी.वाचा तथा एच.एस. बंगाली द्वारा किया गया था।
- इस सभा को प्रमुख उद्देश्य पारसियों की सामाजिक स्थिति का पुनरुद्धार तथा पारसी धर्म की प्राचीन पवित्रता को पुर्नस्थापित करना था।
- इस सभा ने गुजराती भाषा में साप्ताहिक पत्र 'रास्त गोफ्तार' (सत्यवादी) का प्रकाशन किया था।

सिक्ख सुधार आन्दोलन

- सिक्ख धर्म संसार का सबसे नवीनतम धर्म है। इसके संस्थापक गुरु नानक थे।

1. निरंकारी आन्दोलन

- इस आन्दोलन के संस्थापक दयाल साहिब थे।
- इसका मुख्य उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित हिन्दू रीति-रिवाजों एवं कुरीतियों को दूर करना था।

2. कूका आन्दोलन

- यह 1840 ई. में पंजाब के क्षेत्र से शुरू हुआ इसका नेतृत्व भगत जवाहर मल ने किया।
- इस आन्दोलन के स्थापना 1840 ई. में की गई।
- यह आन्दोलन शीघ्र ही खत्म हो गया था क्योंकि यह धार्मिक आन्दोलन से ज्यादा राजनीतिक आंदोलन बन गया था।

3. नामधारी आन्दोलन

- इस आन्दोलन के प्रणेता बाबाराम सिंह (1816-85) एवं उनके शिष्य बालक सिंह थे।
- यह आन्दोलन कूका आन्दोलन का ही एक शाखा था।
- इस आन्दोलन के कार्यकर्ता को नामधारी कहते हैं।
- ये मूर्ति पूजा, वृक्ष पूजा एवं दरगाह की पूजा के विरूद्ध थे।
- ये गो मांस भक्षण के विरोधी और महिलाओं की समानता एवं पुनर्विवाह के समर्थक थे।
- इस आन्दोलन के अनुयायी श्वेत पगड़ी एवं श्वेत वस्त्र धारण करते थे।

जनजातीय आंदोलन

- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले जनजाति (आदिवासी) जो अंग्रेजी नीति से त्रस्त हो चुके थे वे सभी मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध कई विद्रोह किये थे।
- जनजाति को **आदिवासी** नाम से सर्वप्रथम ठक्कर बापा ने सम्बोधित किया था।
- आदिवासी लोग बाहरी लोगों को **दीकू** नाम से पुकारते थे।

1. सन्यासी विद्रोह

- इस विद्रोह की शुरूआत 1760 ई. से माना जाता है जो लगभग 1800 ई. तक चला।
- अंग्रेजों ने आकाल पड़ने के बाद भी कर में कोई कमी नहीं किया जिस कारण सन्यासियों ने विद्रोह कर दिया।
- यह विद्रोह बंगाल से प्रारंभ हुआ था।
- इस विद्रोह को वारेंग हेस्टिंग्स के द्वारा नियंत्रित किया गया।
- इस विद्रोह में शामिल लोग 'ओउम् वन्देमारत्' का नारा लगाते थे।
- इसकी चर्चा बंकिम चंद्र चटर्जी की पुस्तक आनंदमठ में है।

2. पागलपंथी विद्रोह

- पागलपंथी गारो जनजाति का एक अर्थ– धार्मिक सम्प्रदाय था।
- यह धार्मिक पंथ सत्य, समानता, बन्धुत्व आदि पर बल देता था।
- यह बंगाल के क्षेत्र से हुआ इसकी शुरूआत 1825 में करमशाह ने किया। बाद में इसका नेतृत्व उनके पुत्र टीपू मीर ने किया।

3. फरैजी विद्रोह

- इसकी शुरूआत बंगाल में हाजी शरीय तुल्ला तथा दादू मीर के नेतृत्व में किया गया था।

4. चुआर तथा हो विद्रोह

- इस विद्रोह को भूमि विद्रोह के नाम से भी जानते है।
- इस विद्रोह का प्रमुख केंद्र बंगाल के मेदनीपुर जिले थे जो छोटानागपुर तथा सिंह भूमि जिले की हो जनजाति के क्षेत्र तक फैले हुए थे।
- इस विद्रोह के नेतृत्व राजा जगन्नाथ तथा दुर्जन सिंह कर रहे थे।

5. भूमिज विद्रोह

- यह विद्रोह पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले के बाराभूमि की जमींदारी में विरासत के मुद्दे के रूप में शुरू हुआ था।
- इस विद्रोह की शुरूआत 1832 ई. में हुई तथा इसके नेतृत्वकर्ता गंगानारायण था।

6. अहोम विद्रोह

- यह असम में प्रारंभ हुआ था।
- इसका नेतृत्व 1828 ई. में गोमघर कुंवर ने किया।

7. खासी विद्रोह

- यह मेघालय में खासी पहाड़ी से 1833 में प्रारंभ हुआ इसका नेतृत्व तीरथ सिंह ने किया था।
- खासी लोग मेघालय मे फैली जयंतिया तथा गारो पहाड़ियों के बीच निवास करते हैं।

8. रामोसी विद्रोह

- रामोसी जनजाति मुख्यत: पश्चिमी घाट (महाराष्ट्र) में रहने वाली एक आदिम जाति थी।
- यह विद्रोह 1822 ई. में चित्तर सिंह के द्वारा प्रारंभ किया गया।
- चित्तर सिंह के बाद इस विद्रोह के नेतृत्व नरसिंह दत्तात्रेय पंतत्तकर ने किया था।
- यह किसानों का विद्रोह था।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

9. संथाली विद्रोह
- यह झारखण्ड के राजमहल के पहाड़ी से शुरू हुआ था। इस क्षेत्र को दमन-ए-कोह के नाम से भी जाना जाता है।
- यह विद्रोह जमींदारों के विरुद्ध था।
- इस विद्रोह का प्रमुख 1793 ई. में स्थाई बन्दोबस्त व्यवस्था द्वारा संथालों की जमीन का छिना जाना था।
- इसका नेतृत्व सिद्धु कान्हु ने किया।
- 1856 आते-आते यह विद्रोह समाप्त हो गया।

10. मुंडा विद्रोह
- यह झारखण्ड का जनजाति विद्रोह था जो मुण्डा जनजातियों ने किया था।
- इस विद्रोह का सरदारी लड़ाई के लिए भी जाना जाता है।
- इसका नेतृत्व विरसा मुण्डा ने किया।
- बिरसा मुण्डा का जन्म 15 Nov. 1874 ई. को हुआ।
- 1895 ई. में बिरसा ने स्वयं को भगवान का दूत भी घोषित किया था।
- बिरसा मुंडा के अनुयायी उन्हें 'धरती आबा' मानते थे।

11. ताना भगत आंदोलन
- यह झारखण्ड से प्रारंभ हुआ इसका नेतृत्व जतारा भगत ने किया।

12. कोल विद्रोह
- इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र छोटा नागपुर की पहाड़ी के हजारीबाग, सिंहभूम, पलामू तथा रांची क्षेत्र था।
- इसका नेतृत्व 1831 में बुद्धो भगत द्वारा किया गया था।
- कोल जाति द्वारा चावल से निर्मित शराब पर उत्पादन शुल्क लगा देने से यह विद्रोह हुई थी।

13. तमाड़ विद्रोह
- यह विद्रोह छोटा नागपुर के क्षेत्र में 1779-1794 ई. के बीच हुआ था।
- इसका नेतृत्व ठाकुर भोलानाथ सिंह के द्वारा किया गया था।
- इस विद्रोह का संबंध उरांव जनजाति से था।

14. खेरवार आन्दोलन
- इस विद्रोह का क्षेत्र झारखण्ड के संथाल परगना था।
- इस विद्रोह का नेतृत्व भागीरथ मांझी ने किए थे।
- यह आन्दोलन 1870 ई. में किया गया था।
- इस आन्दोलन को सफाहार आन्दोलन भी कहा जाता है।
- इस विद्रोह का मुख्य उद्देश्य जनजातिय परम्पराओं और प्राचीन मूल्यों को स्थापित करना था।

15. पाइक विद्रोह
- यह विद्रोह 1817 ई. में उड़ीसा के क्षेत्र में हुआ था।
- इस विद्रोह का नेतृत्व जगबंधु के द्वारा किया गया था।
- पाइक लगान मुक्त भूमि का उपयोग करने वाले उड़ीसा के खुर्दा क्षेत्र के सैनिक थे।

16. गड़करी विद्रोह
- गड़करी विद्रोह 1844 ई. में महाराष्ट्र के कोल्हापुर में हुआ था।
- इस विद्रोह के प्रमुख नेता बाबाजी अहीरेकर थे।

17. भील विद्रोह
- इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र महाराष्ट्र के पश्चिमी तट का खान देश जिला था।
- इस विद्रोह के नेतृत्व 1820 ई. में सरदार दशरथ ने किया था।

18. रम्पा विद्रोह
- यह विद्रोह आंध्र प्रदेश के गोदावरी जिले के उत्तर में स्थित तटवर्ती पहाड़ी क्षेत्र था।
- इस विद्रोह का नेतृत्व अल्लूरी सीता राम राजू ने किया था जो एक गैर आदिवासी था।
- सीताराम राजू गांधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित था लेकिन आदिवासी कल्याण हेतु हिंसा को आवश्यक मानता था।

19. चेंचू आन्दोलन
- इस आन्दोलन का प्रारंभ 1920 ई. में चरवाहा शुल्क के विरोध में आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिलें में जंगल सत्याग्रह के रूप में हुआ।
- इस आन्दोलन का नेतृत्व वेंकट्टप्पया ने किया।

20. पालीगारों का विद्रोह
- इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र दक्षिण भारत के मालावार क्षेत्र था
- इस विद्रोह का नेतृत्व वीर पी. कट्टवामन (कट्टवोम नाइकन) ने किया था।
- अंग्रेजों के विरुद्ध हुए विद्रोहों में दक्षिण भारत के पोलिगारों का विद्रोह सबसे बड़ा था।

किसान विद्रोह

- अंग्रेजों ने भारतीय किसानों का शोषण बहुत बड़े पैमाने पर करने लगे थे जिस कारण भारतीय किसान अत्यधिक गरीब हो गए और उसने भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विद्रोह प्रारंभ कर दिया।

1. नील विद्रोह (1859 – 1860 ई.)
- यह बंगाल के नदियां जिला से प्रारंभ हुआ किसानों का आंदोलन था।
- इसका नेतृत्व दिगम्बर विश्वास तथा विष्णु विश्वास ने किया था।
- इसकी चर्चा दिनबंधु मित्र की रचना नील दर्पण तथा हरिश्चन्द्र मुखर्जी की पुस्तक हिन्दू Patriotic में है।

2. पाबना विद्रोह (1873 ई.)
- यह विद्रोह मध्य बंगाल के पाबना जिले के युसुफशाही परगना से शुरू हुआ।
- इस विद्रोह के प्रमुख कारण थे जमींदारों और लगान की दरों में अत्यधिक सीमा से अधिक बढ़ा देना।
- इस विद्रोह के प्रमुख नेता ईशानचन्द्र राय, शंभुपाल तथा केशव चन्द्र राय एवं खोदी मल्लाह आदि थे।

- लेफ्टिनेंट गवर्नर कैम्बेल ने इस विद्रोह का समर्थन किया था क्योंकि यह विद्रोह अंग्रेजी शासन के विरोध में न होकर जमींदारों के विरोध में था।

3. मोपला विद्रोह (1836 ई.)

- यह विद्रोह केरल राज्य के मालावार क्षेत्र में हुआ था।
- आठवीं एवं नौवीं शताब्दी में अरब मुल्क के कुछ लोग इस क्षेत्र में आकर बस गए जिसे मोपला कहा गया।
- इस विद्रोह के नेतृत्व अली मुसलियार ने किया था।
- मोपला विद्रोह का समर्थन खिलाफत आन्दोलन के नेता मौलाना अबुल कलाम आजाद और शौकत अली तथा गाँधी जी ने किए थे।

4. चम्पारण सत्याग्रह (1917 ई.)

- यह बिहार के चम्पारण से प्रारंभ हुआ इसका नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया।
- यह निलहे जमींदारों के विरुद्ध एक आंदोलन था।
- ये जमींदार तीन कठिया पद्धति के तहत 20 कट्ठा खेत में जबरदस्ती 3 कट्ठे पर नील की खेती करवाते थे।
- एक बार नील बोने पर तीन साल के लिए खेत बंजर हो जाती थी। महात्मा गांधी ने इस पद्धति को समाप्त करवा दिया।

5. खेड़ा सत्याग्रह (1918 ई.)

- इसे गुजरात के खेड़ा से महात्मा गांधी ने प्रारंभ किया।
- अंग्रेज खेड़ा में आकाल पड़ने के बाद भी टैक्स वसूल कर रहे थे इसे महात्मा गांधी ने माफ करवा दिया।

6. अवध किसान सभा (1920 ई.)

- इसे रामचन्द्र ने प्रारंभ किया यह किसानों का एक संगठन था।

7. एका आन्दोलन (1921 ई.)

- यह आन्दोलन अवध प्रांत के किसानों के हित में चलाया गया।
- इसका नेतृत्व मदारी पासी और सहदेव ने किया था।
- इस आन्दोलन में सभास्थल पर गंगा की सौगंध दी जाती थी कि किसान निर्धारित लगान से एक पैसे भी अधिक नहीं देंगे।

8. बारदोली सत्याग्रह (1928 ई.)

- यह गुजरात के वारदोली से आकाल के दौरान टैक्स वसूलने के विरुद्ध एक आंदोलन था जिसका नेतृत्व सरदार बल्लभभाई पटेल ने किया।
- इस आन्दोलन में कस्तूरबा गांधी, मनीबेन पटेल, शारदाबेन शाह और शारदा मेहता जैसी महिलाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया था।
- इस आंदोलन की सफलता के बाद बारदोली की महिलाओं ने गांधी जी के माध्यम से बल्लभ भाई को सरदार की उपाधि दिया।

9. बिहार किसान सभा (1929 ई.)

- यह बिहार के किसानों का एक संगठन था जिसका नेतृत्व स्वामी सहजानंद ने किये थे।

10. तेभागा आन्दोलन (1946 ई.)

- यह आन्दोलन बंगाल और त्रिपुरा के क्षेत्र में हुआ था।
- इसके नेतृत्वकर्ता मुख्यत: कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह थे।
- यह आन्दोलन मूलत: बटाईदार किसानों का संघर्ष था।

प्रमुख किसान सभा का गठन

किसान सभा	संस्थापक/नेता	वर्ष	क्षेत्र
फड़के विद्रोह	वासुदेव बलवंत फड़के	1879	महाराष्ट्र
बिजौलिया आंदोलन	साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक	1913-41	बिजौलिया (राजस्थान)
अवध किसान सभा	बाबा रामचन्द्र	1920	उत्तर प्रदेश
कृषक प्रजा पार्टी	फजलुलहक, अकरम खन, अर्ब्दुरहीम	1929	बंगाल
अखिल भारतीय किसान सभा	स्वामी सहजानन्द सरस्वती	1936	लखनऊ
बकाश्त कृषक आन्दोलन	यदुनंदन शर्मा, यमुना कार्यी एवं राहुल सांस्कृत्यायन, स्वामी श्रद्धानंद	1938-47	बिहार
वर्ली विद्रोह	गोदावरी पुरूलेकर	1945	बम्बई
तेलंगाना आन्दोलन	कमरैया	1946-51	आन्ध्र प्रदेश

ब्रिटिशकालीन भारत की प्रमुख संस्थाएँ एवं संगठन			
संस्था/संगठन	**संस्थापक**	**स्थान**	**स्थापना वर्ष**
एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल	विलियम जोंस	कलकत्ता	1784
कलकत्ता मदरसा	वारेन हेस्टिंग्स	कलकत्ता	1780
संस्कृत कॉलेज	जोनाथन डंकन	बनारस	1791
आत्मीय सभा	राजा राममोहन राय	बंगाल	1815
हिंदू कॉलेज (कलकत्ता)	डेविड हेयर एवं राजा राममोहन राय	कलकत्ता	1817
यंग बंगाल	हेनरी विवियन डिरोजियो	बंगाल	1826-1832
ब्रह्म समाज	राजा राममोहन राय	बंगाल	1828
धर्म सभा	राधाकांत देव	बंगाल	1830
लैंडहोल्डर्स सोसायटी	द्वारकानाथ टैगोर	बंगाल	1838
रहनुमाई मजदायसन सभा	दादाभाई नौरोजी	बंबई	1851
राधास्वामी आंदोलन	स्वामीजी महाराज	आगरा	1861
प्रार्थना सभा	महादेव गोविंद रानाडे, आत्माराम पांडुरंग	महाराष्ट्र	1867
भारतीय सुधार संघ	केशवचंद्र सेन	कलकत्ता	1870
पूना सर्वाजनिक सभा	महादेव गोविंद रानाडे	महाराष्ट्र	1870
सत्यशोधक समाज	ज्योतिबा फुले	पुणे	1873
आर्य समाज	दयानंद सरस्वती	बंबई	1875
थियोसोफिकल सोसायटी	कर्नल अल्काट एवं मैडम ब्लावात्स्की	न्यूयॉर्क, अड्यार (मद्रास)	1875-82
मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल कॉलेज	सर सैयद अहमद खाँ	अलीगढ़	1875
दक्कन एजुकेशन सोसाइटी	विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, तिलक, गोपाल गणेश आगरकर तथा महादेव बल्लाल नामजोशी	पुणे	1884
सेवा सदन	बी.एम. मालाबारी	बंबई	1885
देव समाज	शिवनारायण अग्निहोत्री	लाहौर	1887
अहमदिया आंदोलन	मिर्जा गुलाम अहमद	गुरुदासपुर (पंजाब)	1889
दि सर्वेंट ऑफ इंडियन सोसायटी	गोपालकृष्ण गोखले	पुणे (महाराष्ट्र)	1905
भारत स्त्री मंडल	सरलाबाई देवी चौधरानी	इलाहाबाद	1910
जस्टिस पार्टी	सी.एन. मुदलियार, टी.एम. नायर, पी. त्यागराया चेट्टी	मद्रास	1916-17
विश्व भारती	रवींद्रनाथ टैगोर	शांति निकेतन (बीरभूम जिला, पश्चिम बंगाल)	1921

❑❑❑

26. गांधी युग (Gandhi Era)

गांधी युग

- महात्मा गांधी का जन्म 2 oct, 1869 ई. को गुजरात के पोरबंदर में हुआ।
- इनका पूरा नाम मोहन दास करमचन्द गांधी था जबकि प्यार से इन्हें लोग भाई कहते थे।
- इनके पिता करमचन्द गाँधी पोरबंदर, राजकोट तथा बीकानेर रियासतों के दिवान थे। इनकी माता पुतलीबाई थी। 1883 ई॰ में 13 वर्ष की अवस्था में कस्तुरबा गांधी से इनका विवाह हो गया। इनके चार पुत्र थे। हरिलाल, मनिलाल, रामदास देवदास तथा यमुना लाल बजाज को इनका पांचवां (दत्तक) पुत्र कहा जाता है।
- गांधीजी की प्राथमिक शिक्षा राजकोट में हुई थी तथा उच्च शिक्षा के लिए 1887 ई. में भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश किया।
- गांधीजी 4 सितम्बर, 1888 ई. को अपनी उच्च शिक्षा बैरिस्टरी के लिए लंदन चले गए और वहाँ वकालत की पढ़ाई (LLB) पूरी करके बैरिस्टर बने।
- 1891 ई. में पढ़ाई पूरी कर भारत लौटे और बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की।
- एक गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का केस लड़ने के लिए 1893 ई. में वो दक्षिण अफ्रिका के ट्रान्सवाल की राजधानी प्रिटोरिया चले गए। जहाँ उन्हें रंगभेद का सामना करना पड़ा।
- 1894 ई. में वहीं रहकर सामाजिक कार्य तथा वकालत करने का फैसला किया एवं इसी वर्ष नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना की।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 22 मई, 1894 ई. को गांधीजी को सचिव पद पर मनोनीत किया।
- दक्षिण अफ्रीका में नेटाल क्षेत्र के समीप डरबन में पीटरमारित्जबर्ग स्टेशन पर इन्हें ट्रेन से नीचे ढकेल दिया गया, क्योंकि प्रथम श्रेणी में भारतीयों और कुत्तों को जाना मना था।
- इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार को गांधीजी से माफी मांगनी पड़ी। दक्षिण अफ्रिका में महात्मा गांधीजी ने भारतीयों के लिए अपना पहला सत्याग्रह किया।
- 1896 ई. के मध्य भारत आए किन्तु कुछ ही महीने के बाद पुन: अपने परिवार के साथ नेटाल वापस चले गये।
- 1899 ई. में गांधीजी ने ब्रिटिश सेना के लिए बोअर युद्ध में भारतीय एबुलेंस सेवा तैयार की थी।
- 1901 ई. में भारत रवाना हुए तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों को आश्वासन दिया कि वे जब भी आवश्यकता महसूस करेंगे वे वापस लौट आएंगे।
- गांधीजी 1901 ई. में पहली बार कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिए।
- 1902 ई. में भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर दक्षिण अफ्रीका पुन: वापस लौटे।
- 1903 ई. में जोहान्सबर्ग में वकालत का दफ्तर खोला।
- इन्होंने 1904 ई. में दक्षिण अफ्रिका में शिल्पकार कालेनवाख की मदद से फीनिक्स फार्म (Phenix form) की स्थापना किया। महात्मा गांधी ने Indian opinion नामक सप्ताहिक पत्रिका लिखी जो कई भाषाओं में प्रकाशित हुई किन्तु इसका प्रकाशन उर्दू में नहीं हुआ।
- 1906 ई. में आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। एशियाटिक आर्डिनेंस के विरुद्ध जोहान्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरम्भ किया।
- 1907 ई. में 'ब्लैक एक्ट'–भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों के जबरदस्ती पंजीकरण के विरुद्ध सत्याग्रह।
- 1908 ई. में सत्याग्रह के लिए जोहान्सबर्ग में **प्रथम बार कारावास** दण्ड आंदोलन जारी रहा तथा द्वितीय सत्याग्रह में पंजीकरण प्रमाणपत्र जलाए गए। पुन: कारावास दण्ड मिला।
- जून, 1909 ई. में भारतीयों का पक्ष रखने हेतु इंग्लैंड रवाना हुए और नवम्बर में दक्षिण अफ्रिका से वापसी के समय जहाज में 'हिन्द-स्वराज' नामक पुस्तक लिखी।
- मई, 1910 ई. में महात्मा गांधी ने जोहान्सबर्ग के निकट टॉलस्टॉय फार्म की स्थापना की थी।
- 1913 ई. में रंगभेद तथा दमनकारी नितियों के विरूद्ध सत्याग्रह जारी रखा।
- 'द ग्रेट मार्च' का नेतृत्व महात्मा गांधी के द्वारा किया गया, जिसमें 2000 भारतीय खदान कर्मियों ने न्यूकासल से नेटाल तक की पदयात्रा की।
- दक्षिण अफ्रिका में ही महात्मा गांधी ने गोपालकृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मान लिया।
- महात्मा गाँधी को आंदोलन की प्रेरणा रूस के विद्वान लियो टॉलस्टॉय से मिली। इन्हीं से महात्मा गांधी सर्वाधिक प्रभावित थे।
- महात्मा गांधी को भुख हड़ताल की प्रेरणा जर्मन विद्वान रस्किन से मिली थी।
- महादेव देसाई महात्मा गाँधी के (सलाहकार) सचिव थे।
- अमेरिकी पत्रकार मिलर महात्मा गाँधी का सहयोगी था।
- 9 Jan. 1915 ई. को महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी बम्बई लौट आये। उनके स्वागत में फिरोजशाह मेहता की अध्यक्षता में एक नागरिक अभिनंदन की तैयारी की गई जिसमें हर समुदाय के लोगों ने भाग लिया।

- आज भी इस दिन को प्रवासी भारतीय दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- 1915 ई. में फीनिक्स एवं टॉलस्टाय फॉर्मों के अनुरूप मई में अहमदाबाद के निकट 1917 ई. में कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की। इस आश्रम के लिए धन अम्बालाल साराबाई ने दिया था। इस आश्रम के अंदर महात्मा गांधीजी की कुटिया हृदय कुंज कहलाता था।
- 4 फरवरी, 1916 में गांधीजी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में भाषण दिए थे।

गांधीजी के स्वदेश में प्रारंभिक सत्याग्रह की शुरूआत

- गांधीजी को सत्याग्रह की प्रेरणा डेविड थ्योरो के लेख सिविल डिसओबीडियन्स से मिली थी।
- गांधीजी सबसे अधिक प्रभावित लियो टॉलस्टाय से थे।
- गांधीजी ने अपने साप्ताहिक समाचार पत्र इण्डियन ओपीनियन में सत्याग्रह को कल्याणकारी कार्यों हेतु दृढ़ रूप बताया है।
- यंग इण्डिया में इन्होंने सत्याग्रह को स्वयं कष्ट सहने वाले के सिद्धांत के रूप में वर्णित किया है। जबकि हिन्द स्वराज में सत्याग्रह को दूसरों के लिए स्वयं का त्याग श्रेष्ठ बताया है।
- 1916 ई. में महात्मा गांधी ने कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में भाग लिया इसकी अध्यक्षता अम्बिका चंद्र मजूमदार कर रहे थे। इसी अधिवेशन में राजकुमार शुक्ल ने गांधी जी को चम्पारण के निलहे जमींदारों के तीन कठिया पद्धति (3/20) की जानकारी दी और उन्हें चम्पारण आने का आग्रह किया।
- 1917 ई. में महात्मा गांधी राजेन्द्र प्रसाद तथा अनुग्रहनारायण सिन्हा के साथ चम्पारण पहुंचे और वहाँ सफल सत्याग्रह किए। अंग्रेजों ने तीनकठिया पद्धति समाप्त कर दी यह आंदोलन निलहे जमिंदारो के विरूद्ध था।
- यह भारत में महात्मा गांधी का पहला सफल आंदोलन था।
- इसकी सफलता के बाद रविन्द्र नाथ टैगोर ने इन्हें महात्मा की उपाधि दिया।
- इस आंदोलन में महात्मा गांधी के साथ राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य जे.बी. कृपालानी, महादेव देसाई और बाबा नरहरि पारिख ने दिया।
- 15 मार्च, 1918 ई. में ही महात्मा गांधी ने अहमदाबाद मिल मजदूर सत्याग्रह किया, इस समय अहमदाबाद में प्लेग फैला हुआ था जिसके चलते मजदूर पलायन कर रहे थे जिसे रोकने के लिए मिल मालिको ने 50 प्रतिशत बोनस की घोषणा कर दी लेकिन प्लेग समाप्त होते ही इस बोनस को वापस ले लिया।
- इस सत्याग्रह में मजदूरों के लिए पहली बार महात्मा गांधी ने भुख हड़ताल का प्रयोग किया, इसके फलस्वरूप मिल मालिक मजदूरों को के लिए 35 प्रतिशत बोनस देने के लिए तैयार हो गया।
- अत: इस प्रकार यह आंदोलन भी सफल रहा।
- गांधीजी ने 1918 ई. में अहमदाबाद लेबर टेक्सटाइल एसोसिएशन की स्थापना किया।
- 22 मार्च, 1918 ई. में महात्मा गांधी ने खेड़ा सत्याग्रह किया और किसानों के बढ़े हुए टैक्स को माफ कराया।

Remarks : महात्मा गांधी के आंदोलन के चार चरण थे– (i) सत्याग्रह (ii) भुखहड़ताल (iii) बहिष्कार (iv) हड़ताल।

Note :– गांधीजी के प्रमुख हथियार थे– सत्य एवं अहिंसा।

महात्मा गाँधी की उपाधियाँ

- अंग्रेजों ने गाँधीजी को सारजेण्ट की उपाधि दी, क्योंकि गाँधीजी ने प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना में बहुत से भारतीयों को भर्ती करवाया।
- अंग्रेजों का सहयोग करने के कारण महात्मा गाँधी को ब्रिटिश सरकार ने कैसर-ए-हिन्द की उपाधि दी।
- चम्पारण सत्याग्रह की सफलता के बाद रविन्द्रनाथ टैगोर ने महात्मा की उपाधि दी।
- जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें बापू की उपाधि दिया।
- सुभाष चंद्र बोस ने इन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि दिया।
- विस्टन चर्चिल ने इन्हें अर्द्धनग्न फकीर कहा था।
- रामधारी सिंह दिनकर ने इन्हें सर्वोदय का अग्रदूत कहा।
- शेख मुजिवुर रहमान ने इन्हें जादुगर की उपाधि दिया।
- खुदाई खिदमत गार संस्था ने मंगल बाबा की उपाधि दिया।
- आइंस्टीन ने कहा कि आने वाले 100, 200 वर्ष के बाद शायद ही कोई विश्वास करे की ऐसे हाड़मांस के शरीर वाला व्यक्ति इस पृथ्वी पर था, जिसने इतना बड़ा आंदोलन कर दिया था।

रॉलेक्ट एक्ट (18 मार्च 1919)

- भारतीय क्रांति को दबाने के लिए इंग्लैंड हाईकोर्ट के न्यायाधीश सिडनी रॉलेक्ट की अध्यक्षता में 10 दिसम्बर, 1917 ई. को एक समीति का गठन किया गया। जिसके तहत संदेह के आधार पर पुलिस किसी को भी गिरफ्तार कर सकती थी।
- इस समिति का रिपोर्ट 15 अप्रैल, 1918 ई. में आयी जिसे भारतीय नेताओं के कड़े विरोध के बावजूद अंग्रेजी सरकार ने 18 मार्च 1919 को रॉलेक्ट एक्ट पास कर दिया।
- इस एक्ट को द अर्नाक्रिकल एंड रिवोल्यूशनरी क्राइम एक्ट (The Anarchical and Revolutionary Crime Act.) भी कहते हैं।
- भारतीयों ने इसे काला कानून कहा तथा इसे बिना दलील, बिना अपील, बिना वकील का कानून कहा गया।
- 6 अप्रैल, 1919 को गाँधीजी के द्वारा देशव्यापी हड़ताल किया गया।

गांधीजी ने रॉलेक्ट सत्याग्रह के लिए तीन राजनीतिक मंच का उपयोग किया था–

1. होमरूल लीग
2. खिलाफत आंदोलन
3. सत्याग्रह सभा

- 8 अप्रैल, 1919 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर पंजाब के पलवल जिला में (वर्तमान में हरियाणा का जिला) गिरफ्तार कर बम्बई भेज दिया गया।
- रॉलेक्ट सत्याग्रह अखिल भारतीय राजनीति में गांधीजी का पहला साहसिक कदम था।
- इसी एक्ट के विरोध में स्वामी श्रद्धानन्द ने लगान न देने का आंदोलन चलाने का सुझाव दिया था।
- इसी कानून के तहत 9 अप्रैल को पंजाब के दो नेता सैफुदीन किचलु तथा डॉ. सत्यपाल को गिरफ्तार कर अमृतसर भेज दिया गया।
- इस सत्याग्रह का केन्द्र पंजाब था।

जलियाँवाला बाग (13 April 1919)

- रौलेक्ट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल, 1919 ई. को वैशाखी के दिन एक शांति सभा का आयोजन किया गया था।
- उसी समय पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर ओ. डायर ने गोरखा रेजीमेंट के ब्रिगेडियर आर. डायर को जलियाँवाला बाग सैनिको के साथ भेजा दिया। जहाँ आर. डायर ने निहत्थे लोगों पर गोलियां चलवा दी।
- आँकड़ों के अनुसार मरने वालों की संख्या 379 थी एवं 1200 व्यक्ति घायल हुए थे। लेकिन वास्तव में इससे कहीं ज्यादा लोग मारे गए।
- इस समय भारत का वायसराय (गवर्नर) लॉर्ड चेम्सफोर्ड था।
- हंस राज नामक भारतीय ने जलियाँवाला बाग की सूचना अंग्रेजों को दी थी।
- इस नरसंहार के विरोध में रविन्द्र नाथ टैगोर ने सर की उपाधि त्याग दिया एवं डॉ. शंकर नायर ने वायसराय की कार्यकारिणी परिषद् से त्याग पत्र दे दिया।
- अंग्रेजों ने इसके जाँच के लिए 1 अक्टूबर, 1919 को हंटर कमिशन का गठन किया। इस आयोग में तीन भारतीय सदस्य (चिमन लाल शितलवाड़, साहबजादा सुल्तान अहमद एवं जगत नारायण) और पाँच अंग्रेज सदस्य थे।
- इस समिति का अध्यक्ष लॉर्ड हण्टर थे।
- इस कमीशन ने जनरल डायर को सही ठहराया। जनरल ओ. डायर को लंदन में सम्मान के रूप में तलवार और 2600 पौंड की धनराशि दिया गया तथा ब्रिटेन में उसे **ब्रिटिश साम्राज्य का शेर** की उपाधि दी गई।
- कांग्रेस ने इस घटना की जाांच के लिए मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक समीति बनाई जिसके अन्य सदस्य पंडित मोती लाल नेहरू, गांधीजी, अब्बास तैयब जी, सी.आर. दास, और पुपुल जयकर थे। इस समिति ने कहा की यह जनरल डायर द्वारा जल्दबाजी में लिया गया मुर्खतापूर्ण कदम था।
- दीनबंधु सी.एफ. एन्ड्रूज ने इस कांड को जानबुझकर की गई क्रूर हत्या कहा था।
- जलियाँवाला बाग के हत्या कांड के समय ही पंजाब में चमनदीप के नेतृत्व में डांडा फौज का गठन किया गया।
- 13 मार्च, 1940 ई. को उधम सिंह ने लंदन जाकर जनरल ओ. डायर की गोली मारकर हत्या कर दी।

होमरूल आंदोलन

- यह आंदोलन आयरलैण्ड से प्रेरित था इसकी शुरुआत दो चरणों में हुई पहला चरण बालगंगाधर तिलक ने अप्रैल, 1916 ई. में महाराष्ट्र से प्रारंभ किया।
- इसी आंदोलन के दौरान उन्होंने कहा कि **''स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहूँगा।''**
- वैलेटाइन सिरोल ने तिलक जी को भारतीय अशांति का जनक (Indian Arnest) कहा था। जिस कारण ये उस पर केश करने लंदन चले गए।
- 1918 ई. तक होमरूल आंदोलन का पहला चरण समाप्त हो गया।

Remarks :– बालगंगाधर तिलक को लोकमान्य कहा जाता है। इनकी अर्थी को महात्मा गांधी तथा शौकत अली ने कंधा दिया था।

- होमरूल का दूसरा चरण सितम्बर, 1916 ई. में एनी बेसेंट ने प्रारंभ किया।
- इनका होमरूल आंदोलन पूरे भारत में फैल गया। किन्तु अंग्रेजों ने एनी बेसेंट को गिरफ्तार कर लिया और जब 1918 ई. में उन्हें छोड़ा दिया और तब तक होमरूल आंदोलन पूरी तरह समाप्त हो चूका था। होमरूल का उद्देश्य प्रांतीय स्वायत्ता (राज्यों का स्वशासन) थी।

खिलाफल आंदोलन

- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान इंग्लैंड के प्रधानमंत्री डेविड लायड जॉर्ज ने यह घोषणा की थी तुर्की के साथ किसी भी प्रकार का अन्याय नहीं किया जाएगा। लेकिन विश्वयुद्ध के बाद अंग्रेजों ने सेवर्स की संधि (10 अगस्त, 1920 ई.) के तहत तुर्की का विभाजन कर दिया। जिसका विरोध तुर्की के खलिफा ने किया।
- भारत में इसी विभाजन के विरोध में खिलाफत आंदोलन प्रारंभ किया गया। खिलाफत आंदोलन को मोहम्मद अली तथा सौकत अली ने शुरू किया था।
- 4 मार्च, 1919 ई. को इस आंदोलन के दौरान स्वामी श्रद्धांनन्द ने दिल्ली की जामा मस्जिद के मंच से हिन्दू-मुस्लिम एकता पर भाषण दिया था।
- इस आंदोलन के दौरान ही हकीम अजमल खां ने हाजिक-उल-मुल्क की पदवी त्याग दी थी।
- अखिल भारतीय खिलाफत की बैठक दिल्ली के फिरोज साह कोटला मैदान में हुई।

- 23 Nov. 1919 को महात्मा गांधी द्वारा हिन्दुओं और मुसलमानों का एक संयुक्त सम्मेलन दिल्ली में बुलाया गया जिसकी अध्यक्षता महात्मा गांधी ने किया।
- 1921 ई. में केरल में हुए मोपला आंदोलन की शाखा खिलाफत आंदोलन का ही एक भाग था।
- इस आंदोलन के बारे में एचिंसन ने कहा था कि इस आंदोलन में हम मुसलमानों को हिन्दुओं से भीड़ा नहीं पाए।
- अंतर्राष्ट्रीय दबाव में आकर अंग्रेजों ने तुर्की के विभाजन को रद्द कर दिया और भारत में भी खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया। और महात्मा गांधी को मुसलमानों का भी सहयोग प्राप्त हो गया।

असहयोग आंदोलन

- महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन 1 अगस्त, 1920 को शुरू किया था।
- असयोग आंदोलन के समय भारत के वायसराय लॉर्ड चेम्स फोर्ड थे।
- यह आंदोलन दुखद घटना के साथ प्रारंभ हुआ क्योंकि इसी दिन बाल गंगाधर तिलक के मृत्यु हो गई थी।
- यह महात्मा गांधी द्वारा चलाया गया पहला जन आंदोलन था, क्योंकि इसमें पूरे देश की जनता ने भाग लिया था।
- असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव 4 सितम्बर, 1920 को कलकत्ता में हुए विशेष अधिवेशन में लाया गया था। परंतु सी. आर. दास तथा लाला लाजपत राय के विरोध का कारण यह प्रस्ताव पारित नहीं हो पाया।
- इस आंदोलन की पुष्टि दिसम्बर, 1920 में हुए नागपुर अधिवेशन में मिली।
- महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि हमसब मिलकर अहिंसक रूप से अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करें तो निश्चित ही एक वर्ष में आजादी मिल जाएगी।
- महात्मा गांधी के कहने पर ही वकीलों ने न्यायालय जाना छोड़ दिया।
- यह आंदोलन प्रारंभ करने से पूर्व ही गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दिया गया **केसर-ए-हिन्द** उपाधि तथा जमनालाल बजाज ने भी अपनी **राय बहादुर** की उपाधि वापस कर दी।
- विद्यार्थियों ने अंग्रेजों का स्कूल छोड़ दिया नाई, धोबी, मोची, बावर्ची ने अंग्रेजों का काम करने से मना कर दिया। लोग अंग्रेजों के वस्तुओं को खरीदना छोड़ दिए और दुकानदार उसे बेचना छोड़ दिए। इससे अंग्रेजों को भारी नुकसान हुआ।
- इस आंदोलन के दौरान एक सर्वाधिक लोकप्रिय नारा था– **हिन्दू-मुसलमान की जय**।
- इसी अवसर ब्रिटिश युवराज प्रिंस ऑफ वेल्स ने भारत की यात्रा की।
- दक्षिण भारत से असहयोग आंदोलन का नेतृत्व गोपालचारी ने किया। इसी आंदोलन के दौरान मौलाना मजहरूल हक ने पटना में सदाकत आश्रम की स्थापना की।
- C.R. दास तथा मोतीलाल नेहरू ने प्रारंभ में इस आंदोलन का विरोध किया किन्तु बाद में वे भी इस आंदोलन से जुड़ गए।
- इस आंदोलन में जेल जानेवाले पहले पुरुष C.R. दास थे तथा पहली महिला वसंती देवी थी।
- असहयोग आंदोलन के दौरान बिहार में कृषको का नेतृत्व स्वामी विद्यानंद ने तथा छपरा में राहुल सांस्कृत्यानन ने किया था।

चौरी-चौरा कांड

- 5 फरवरी, 1922 को गोरखपुर के चौरी-चौरा कस्बे में भीड़ ने 22 पुलिस वालों को जिंदा जला दिया।
- इस जुलूस का नेतृत्व भूतपूर्व सैनिक भगवान अहीर कर रहा था।
- इस घटना के समय भारत के वायसराय लॉर्ड रिडिंग थे।
- इस घटना के समय महात्मा गांधी बारदौली (गुजरात) में थे। इन्होंने इस हिंसा से आहत होकर 12 फरवरी, 1922 ई. को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया। महात्मा गांधी के इस निर्णय का पूरे भारत में विरोध हुआ।
- असहयोग आंदोलन को वापस लेने के कारण डॉ. मुजे ने गांधीजी के विरोध में निंदा प्रस्ताव लाए थे।
- जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि **"यदि काश्मीर के किसी गांव में हिंसा हुआ है तो उसका सजा कन्याकुमारी के किसी गांव को क्यों दी जाए।"**
- सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि **"जब जनता का उत्साह अपने चरम पर था तो गांधी जी द्वारा आंदोलन स्थगित करना एक मुर्खता पूर्ण निर्णय था।"**
- 10 मार्च, 1922 ई. को न्यायाधीश ब्रूमफील्ड ने जनता को भड़काने के आरोप में गांधी जी को 6 वर्ष जेल की सजा सुनाई।
- 5 फरवरी, 1924 ई. में गांधीजी के खराब स्वास्थ हाने के कारण जेल से रिहा कर दिया गया।

स्वराज पार्टी

- 1922 ई. में कांग्रेस के गया अधिवेशन में स्वराज पार्टी के गठन की चर्चा हुई।
- 1 जनवरी, 1923 ई. को स्वराज पार्टी का गठन इलाहाबाद में किया गया। इसके पहले अध्यक्ष C.R. Das तथा महासचिव मोतीलाल नेहरू बने। यही दोनों इस पार्टी के संस्थापक भी थे।
- बिहार में स्वराज पार्टी का गठन श्रीकृष्ण सिंह ने किया था।

➢ **इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य था–**

(i) केन्द्रीय विधान सभा (संसद) में घुसकर सरकारी काम में बाधा डालना।
(ii) राज्यों की स्वायत्तता (स्वतंत्रता)।
(iii) डोमेनियन स्टेट।

- इसके लिए इन्होंने चुनाव लड़ने का निर्णय लिया और जनता से यह वादा किया कि वे कोई भी सरकारी पद नहीं लेंगे।

- केन्द्रीय विधान सभा के 100 सीटों में स्वराज दल को 42 सीटों प्राप्त हुई जिस कारण से 1923 ई. के चुनाव में स्वराज पार्टी सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी बनी।
- स्वराज दल ने ली कमीशन की रिपोर्ट नहीं लागू होने दिया जो जाति की उच्चता को बरकरार रखने की बात कर रहा था।
- स्वराज दल ने मुडीमैन कमीशन का भी रिपोर्ट पारित नहीं होने दिया जो राज्यों में स्वतंत्रता न लाकर द्वैध शासन की बात कर रहा था।
- विट्ठल भाई पहले भारतीय बने जो विधान सभा के अध्यक्ष बने ये स्वराज दल के थे।
- मोतीलाल नेहरू ने भी सरकारी पद ले लिया जिस कारण जनता का विशवस इस पार्टी से उठने लगा और 1928 ई. आते-आते यह पार्टी समाप्त हो गई।

➢ **बलसाड़ सत्याग्रह (1923-24 ई.)**

- डकैतियों का आतंक दबाने के लिए पुलिस व्यवस्था करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार ने सितम्बर, 1923 ई. में बलसाड़ के प्रत्येक व्यस्क व्यक्ति पर कर लगाने की घोषणा कर दी इसे ही **डकैती कर** कहते हैं।
- इसका प्रारंभ गुजरात के बलसाड़ से किया गया था। जिसका विरोध स्थानीय लोगों के द्वारा किया गया। इसका नेतृत्व बल्लभ भाई पटेल ने किया था। अंततः विरोध के कारण अंग्रेजों को डकैती कर रद्द करना पड़ा।

➢ **वायकोम सत्याग्रह (1924-25 ई.)**

- यह केरल के मालवाड़ तट से प्रारंभ हुआ। इजवा जनजाति के लोगों को मंदिर के आगे के रास्ते पर जाने से रोका गया था।
- जिसके विरूद्ध T.K. माधवन ने यह आंदोलन प्रारंभ किया। यह आंदोलन सफल रहा।

साइमन कमीशन

- 1919 ई. के माटेग्यू चेम्सफोर्ड अधिनियम की समीक्षा हेतु तथा प्रशासनिक सुधार पर विचार करने के लिए दस वर्ष बाद एक संवैधानिक आयोग की नियुक्ति की जाएगी, जो यह जाँच करेगी कि भारत उत्तरदायी शासन की दिशा में कहाँ तक प्रगति करने की स्थिति में है।
- आयोग की नियुक्ति तो 10 वर्ष के बाद की जानी चाहिए थी, लेकिन ब्रिटेन की तत्कालीन कंजरवेटिव सरकार ने दो वर्ष पूर्व ही साइमन कमीशन की नियुक्ति (8 नवम्बर, 1927 ई.) कर दी, क्योंकि उसे आशंका थी कि दो वर्ष बाद लेबर पार्टी की सरकार भारत समर्थक सदस्यों वाले वैधानिक आयोग की नियुक्ति कर सकती है।
- किन्तु भारतीयों में आपसी मतभेद बहुत अधिक था। जिस कारण भारत के राज्य सचिव वरकेन हेड ने 1927 ई. में साइमन कमीशन का गठन करवा दिया।
- इस 7 सदस्यों वाले आयोग के सभी सदस्य अंग्रेज सदस्य थे। इसिलिए इसे श्वेत कमीशन भी कहते है। भारतीयों को इससे बाहर लॉर्ड इरविन के कहने पर किया गया था।
- इस कमीशन के अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे।
- क्लीमेंट एटली भी इसके सदस्य थे जो आगे जाकर ब्रिटेन के PM बने।
- साइमन कमीशन 1919 ई. की अधिनियम की जाँच करने भारत आया था। इसका मूल नाम Indian Statuery Commission (भारतीय वैधानिक आयोग) था।
- 3 फरवरी, 1928 ई. को जब साइमन कमीशन बम्बई पहुंचा तो उसका अत्यधिक विरोध हुआ तथा साइमन वापस जाओ (Simon go back) का नारा लगाए गया।
- इस कमीशन के विरोध के बावजूद साइमन कमीशन ने 1930 ई. में अपनी रिपोर्ट दे दी। जिसके आधार पर लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन हुआ।
- इसी विरोध प्रदर्शन में पंजाब में लाला लाजपत राय के ऊपर सांडर्स के नेतृत्व में पुलिस लाठी चार्ज हो गई जिसमें चोट लगने से लाला लाजपत राय की मृत्यु हो गई।
- लाला लाजपत राय ने कहा कि **''मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी अंग्रेजों के ताबुत की आखिरी कील साबित होगी।''**
- दक्षिण भारत की जस्टिस पार्टी (मद्रास), यूनियन पार्टी (पंजाब) तथा डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन (अंबेडकर द्वारा संचालित) ने इस आंदोलन का समर्थन किया था।

नेहरू रिपोर्ट

- साइमन कमिशन के विरोध के कारण भारत के राज्य सचिव वरकेन हेड ने भारतीयों को यह चुनौती दी **''यदि सर्व सहमति से वह अपना कानून बना लेंगे तो मैं उसे ब्रिटेन में पारित करा दूंगा।''**
- इस चुनौती को स्वीकार करते हुए मोतीलाल नेहरू और तेज बहादुर सप्रु ने नेहरू रिपोर्ट तैयार किया था। इस रिपोर्ट में कूल 9 सदस्य थे।
- जिसका मुख्य उद्देश्य स्वायत राज्य (Dominion State) की स्थापना करना था किन्तु मुस्लिम लीग ने इसे स्वीकार नहीं किया जिस कारण नेहरू रिपोर्ट पारित नहीं हो सका।
- नेहरू रिपोर्ट के विरोध में जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस ने 1928 ई. में इंडिपेंडेंस फॉर इण्डिया लीग की स्थापना की।

➢ **14 सूत्री जिन्ना फार्मुला**

- नेहरू रिपोर्ट के प्रतिउत्तर में जिन्ना ने 14 सूत्री जिन्ना फर्मुला दिया।
- जिन्ना ने अपने इस 14 सूत्री की मांग को इंग्लैंड में हुए प्रथम गोलमेज सम्मेलन के समक्ष पेश किया। जिनमें से अधिकांश मांगें अगस्त 1932 में मैकडोनाल्ड के साम्प्रदायिक निर्णय में स्वीकार कर ली गई।

➢ **लाहौर अधिवेशन (1929 ई.)**

- इसकी अध्यक्षता जवाहर लाल नेहरू ने किया इसमें पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पारित किया गया। साथ ही यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक 26 जनवरी को स्वाधीनता दिवस मनाया जाएगा।

- इसी कारण 26 नवम्बर, 1949 ई.को संविधान बनने के बावजूद इसे 26 जनवरी, 1950 ई. को लागु किया गया।
- इसी अधिवेशन में लाहौर में रावी नदी के तट पर मध्य रात्री को जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा लहराया और कहा कि मध्यरात्रि को जब पूरी दुनिया सो रही है भारत अपनी स्वतंत्रता की नीव रख रहा है।

➢ **गांधीजी की 11 सूत्री मांगे**

- गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने से पहले 2 मार्च, 1930 को वायसराय इरविन को लिखे पत्र में 11 सूत्री मांगे पेश की थी।
- इसका उल्लेख इन्होंने अपने समाचार पत्र इण्डिया में प्रकाशित लेख के द्वारा किया।

दाण्डी मार्च

- गाँधीजी ने इरविन को अपनी 11 सूत्री माँग सौंप दी। किन्तु इरविन ने उसे अस्वीकार कर दिया। जिस कारण महात्मा गाँधी ने 12 मार्च 1930 ई. को साबरमती आश्रम से अपने 78 सहयोगियों के साथ नामक कानून तोड़ने के लिए दांडी की ओर चल दिए। उनके साथ सरोजनी नायडू भी थी।
- इस 78 सहयोगियों में से बिहार के गिरिवरधारी चौधरी थे।
- इस यात्रा के दौरान 240 mile (240 × 1.61 = 386.22 km की यात्रा को 24 दिन में पूरा किया गया।
- 6 अप्रैल 1930 ई. को दाण्डी यात्रा पूरी हुई और गाँधी जी ने दाण्डी में आसबन विधि द्वारा नमक बनाया।
- भागलपुर में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व महादेव लाल सर्राफ ने किया था।
- इस यात्रा में गांधीजी के साथ वेब मिलर नामक अमेरिकी पत्रकार थे।
- नमक सत्याग्रह के दौरान शोलापुर में गांधीजी गिरफ्तार हो जाने के बाद इस आंदोलन का नेतृत्व अब्बास तैयब जी ने किया था।

सविनय अवज्ञा आंदोलन

- गांधीजी के 11 सूत्री के मांगों के न्यायोचित उत्तर नहीं मिलने के कारण विवश होकर गांधीजी को 12 मार्च, 1930 ई. को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करना पड़ा।
- गांधीजी ने 11 सूत्री मांगे लॉर्ड इरविन के सामने रखी थी उनमें से एक नमक कर की समाप्ति थी लेकिन इरविन ने इसकी अवहेलना कर दी। इसी के कारण गांधीजी ने दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन करने का निश्चय किया।
- बिहार में इस आंदोलन के शुरूआत 6 अप्रैल, 1930 ई. को हुई थी। जिसकी रूपरेखा राजेन्द्र प्रसाद ने तैयार की थी।
- मुम्बई में इसी आंदोलन के दौरान सरोजनी नायडू ने 25000 आंदोलनकारियों को लेकर धरसना नामक स्थान पर पहुंची किन्तु इसकी सूचना पहले ही अंग्रेजों को लग गई और अंग्रेजों ने इस आंदोलन को दबा दिया।
- इसी आंदोलन के दौरान लड़कों का बंदरी सेना तथा लड़कियों की मंजरी सेना का गठन किया गया।
- विनोबा भावे की पहली बार गिरफ्तारी सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान ही हुई थी।
- इस आंदोलन के दौरान गढ़वा रेजिमेंट (पेशावर) के सैनिकों ने प्रदर्शन कारियों पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था।
- इस रेजिमेंट का नेतृत्व बीरचंद्र सिंह गड़वाली कर रहे थे।
- सविनय अवज्ञा के समर्थन में उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में खान अब्दुल गफ्फर खाँ के नेतृत्व में खुदाई खिदमगार नाम से आंदोलन चलाया गया।
- इस आंदोलन को लाल कुर्त्ती आंदोलन भी कहते हैं क्योंकि इनके सदस्य लाल कुर्त्ती पहनते थे।
- भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर में इस आंदोलन के दौरान वहाँ की जनजातिओं ने **यदुनाग** के नेतृत्व में **जियातरंग** आंदोलन चलाए।
- मणिपुर के युवा (नागा जनजाति) महिला गैडिन्ल्यू (गाइडिंल्यू) को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इनकी संघर्ष क्षमता के कारण रानी की उपाधि प्रदान की थी।
- इस आंदोलन के दौरान बिहार में कर नाआदायगी आंदोलन तथा चौकीदारी कर अदा नहीं करने से संबंधित आंदोलन चलाया गया।

गाँधी-इरविन समझौता (दिल्ली-समझौता)

- जब सविनय अवज्ञा आंदोलन चल रहा था तो लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा था क्योंकि भारत के इस आंदोलन के कारण कोई कांग्रेस का प्रतिनिधि वहाँ भाग लेने नहीं गया।
- जिस कारण इंग्लैण्ड से इरविन पर दबाव आने लगा कि वे कांग्रेस को इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए भेजे।
- इसी दबाव में आकर इरविन ने समझौता करने का विचार किया।
- 5 मार्च, 1931 को दिल्ली में तेज बहादुर सप्रु और एम.आर. जयकर के प्रयत्नों से एक समझौता हुआ जिसे गाँधी-इरविन समझौता कहा जाता है।
- इस समझौते को एलन कैम्पबेल जॉनसन ने महात्मा गांधी के लाभ को सांत्वना पुरस्कार कहा।
- इरविन ने महात्मा गांधी से यह आग्रह किया गया कि यदि वे सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करके गोलमेज सम्मेलन में भाग लेंगे तो गांधीजी के कुछ बातों को मान लिया जाएगा जिसमे सबसे प्रमुख राजनीतिक कैदियों की रिहाई थी।
- इस समझौता के तहत भगत सिंह को रिहा नहीं किया गया क्योंकि उनपर अपराधिक मुकदमा था।

Note :– सरोजनी नायडू ने गांधी तथा इरविन को दो महात्मा कहा।

गोलमेज सम्मेलन (1930-1932)

- भारतीय प्रशासन पर चर्चा करने के लिए लंदन में गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।

➢ **प्रथम गोलमेल सम्मेलन (12 Nov, 1930-19 Jan, 1931 ई.)**

☛ यह सम्मेलन लंदन के सेन्ट जेम्स पैलेस में लॉर्ड इरविन के प्रयासों से साइमन कमिशन के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए बुलाई गई थी।

☛ इस सम्मेलन का उद्घाटन ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम तथा इसकी अध्यक्षता प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने किया था।

☛ इस सम्मेलन में कांग्रेस का कोई प्रतिनिधि भाग नहीं लिया क्योंकि महात्मा गांधी सविनय अवज्ञा आंदोलन कर रहे थे।

☛ इस सम्मेलन में मौलाना मुहम्मद अली जिन्ना, भीमराव अंबेडकर तथा के.टी. पॉल आदि ने भाग लिया था।

➢ **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 Sep, 1931 ई.)**

☛ इस सम्मेलन में कांग्रेस की ओर से महात्मा गाँधी ने भाग लिया किन्तु ब्रिटिश प्रधानमंत्री मैकडोनाल्ड ने सम्प्रदायिक पंचांट की बात कही जिस कारण गांधीजी सम्मेलन छोड़कर वापस चले आए।

☛ इस सम्मेलन में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व सरोजनी नायडू, एनीबेसेंट और मीराबेन कर रही थी।

☛ इस सम्मेलन में गांधीजी भाग लेने के लिए एस.एस. राजपुताना नामक जहाज से इंग्लैंड गये थे तथा 1 दिसम्बर, 1931 ई. को बेन्सटीयाना नामक इटली के जहाज से भारत वापस आये थे।

☛ गांधीजी वापस आने के बाद कहा कि **''मैं भारत खाली तो जरूर लौटा हूँ पर मैंने अपनी देश की इज्जत को बट्टा लगने नहीं दिया''**।

☛ भारत आने के बाद गांधी इरविन समझौते के प्रावधानों का उल्लंघन होने के कारण पुन: गांधीजी ने 4 जनवरी, 1932 ई. को द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत की जो 7 अप्रैल, 1934 ई. तक चला।

☛ द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के समय महात्मा गांधी का सचिव महादेव देसाई थे।

➢ **तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 Nov. 1932-24 Dec. 1932 ई.)**

☛ इस सम्मेलन में कांग्रेस, इंग्लैंड की लेबर पार्टी तथा जिन्ना ने भाग नहीं लिया।

☛ इसी सम्मेलन में मैकडोनाल्ड ने दलीतों के लिए पृथक क्षेत्र (साम्प्रदायिक पंचांट की घोषणा कर दी।

☛ इस सम्मेलन के बाद ब्रिटिश संसद में एक अधिनियम पारित किया गया जिसे भारतीय शासन अधिनियम 1935 ई. कहते हैं।

Note :– तेज बहादूर सप्रू तथा भीमराव अम्बेडकर तीनों ही गोलमेज सम्मेलन में भाग लिए थे।

पूना समझौता और साम्प्रदायिक पंचांट

☛ 16 अगस्त, 1932 ई. को इंग्लैंड के प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने एक घोषणा की जिसे साम्प्रदायिक पंचांट कहते हैं।

☛ जैसे ही साम्प्रदायिक पंचांट की घोषणा हुई और दलितों को आरक्षण सहित पृथक क्षेत्र दिया गया।

☛ महात्मा गांधी ने पूना के यरवदा जेल में अनशन कर दिया। तेज बहादुर सप्रू, राजेन्द्र प्रसाद तथा मदनमोहन मालीय के सहयोग से गांधी एवं अम्बेदकर के बीच 24 सितम्बर, 1932 ई. को एक समझौता हुआ। जिसे पूना पैक्ट कहते हैं। इसके तहत दलितों के आरक्षीत सीट को 71 से बढ़ाकर 147 कर दी गई।

☛ इसके तहत बौद्धों के लिए कोई सीट आरक्षित नहीं थी इसमें केवल मुसलमान, सिक्ख, अनुसूचित जाति तथा इसाईयों के लिए सीट आरक्षित थी।

Note :– इस समझौते पर अम्बेडकर के साथ महात्मा गांधी और इसके समर्थक हस्ताक्षर किये थे न कि गांधीजी।

हरिजन सेवक संघ

☛ महात्मा गांधी ने दलितों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए उन्हें हरिजन नाम दिया।

☛ 1932 में पून: पैक्ट के बाद गांधीजी ने अखिल भारतीय अस्पृश्यता संघ (All Indian Untouchability League) की स्थापना किया जो आगे चलकर हरिजन सेवक संघ कहलाया।

☛ हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष घनश्याम दास बिडला थे।

☛ 1933 में महात्मा गांधी ने साप्ताहिक **पत्रिका हरिजन** का प्रकाशन किया।

Note :– दलित वर्गो का संघ की स्थापना बाबू जगजीवन राम के द्वारा किया गया था।

मुस्लिम लीग

☛ इसकी स्थापना ढाका में 1906 ई. में आगा खाँ एवं सलीमुल्लाखाँ ने किया इस समय वायसराय लॉर्ड मिण्टो-II थे।

☛ 1909 ई. में मुस्लिम लीग की मांग पर मुसलमानों को पृथक निर्वाचन क्षेत्र मिल गया जिस कारण कांग्रेस तथा लीग में विवाद होने लगा।

☛ ऐनी बेसेंट तथा तिलक जी के सहयोग से 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में नरमदल, गरमदल तथा मुस्लिम लीग एक हो गए तथा कांग्रेस ने मुस्लिम लीग की पृथक निर्वाचन क्षेत्र को स्वीकार कर लिया।

☛ मुसलमानों के लिए एक पृथक राष्ट्र का विचार सर्वप्रथम मोहम्मद इकवाल ने 1930 ई. में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में दिया था।

☛ पाकिस्तान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र **चौधरी रहमत अली** ने 1933 ई. में किया था।

☛ 1937 ई. के चुनाव के फलस्वरूप कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनी थी और वायसराय के परिषद में कांग्रेस का दबदबा बन गया और मुस्लिम लीग की शक्तियां कमजोर होती चली गई।

☛ द्वितीय विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने बिना भारतीयों तथा कांग्रेस के अनुमती के ही यह घोषणा कर दी की 3 लाख भारतीय सैनिक इंग्लैंड की तरफ से लड़ेंगे जिस कारण कांग्रेस ने 22 Dec. 1939 ई. को वायसराय के परिषद से त्याग पत्र दे दिया।

इससे खुश होकर मुस्लिम लीग ने 22 Dec. 1939 ई. को मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।

- 1940 ई. में मुस्लिम लीग का लाहौर अधिवेशन हुआ। जिसकी अध्यक्षता जिन्ना ने किया। इन्होंने इस अधिवेशन में स्पष्ट रूप से पृथक पाकिस्तान की मांग कर दी।
- इस अधिवेशन में पाकिस्तान के सृजन का प्रस्ताव फजलूलहक ने प्रस्तुत किया तथा खली कुज्जमां ने इनका अनुमोदन किया था।
- 1945 ई. में लार्ड वेवेल ने भारत के विभिन्न पार्टियों को आपसी समन्वय तथा सहयोग बनाए रखने के लिए शिमला सम्मेलन बुलाया। किन्तु इस सम्मेलन में मुस्लिम लीग पूरी तरह पृथक पाकिस्तान कि माँग पर तुला हुआ था।
- इस सम्मेलन में मुस्लिम लीग की बात नहीं मानी गई। और मुस्लिम लीग के पाकिस्तान के मांग के कारण ही यह सम्मेलन विफल हो गया।

प्रत्यक्ष कार्यवायी दिवस

- शिमला सम्मेलन की विफलता के बाद मुस्लिम लीग ने 16 Aug 1946 ई. को प्रत्यक्ष कार्यवायी दिवस (Direct Action Plan) घोषित किया जिसके तहत पूरे भारत में साम्प्रदायिक दंगे फैल गए।
- सबसे बड़ा दंगा, बंगाल के नोआखली में हुआ। मुस्लिम लीग का नारा था। **''बांटो और आजाद करो।''**
- इन दंगों से तंग आकर कांग्रेस ने सी.आर. फर्मूला के आधार पर विभाजन का समर्थन किया।
- लार्ड माऊंटबेटन को यह विशेष सलाह पर भारत भेजा गया था कि यथा संभव वे भारत को संयुक्त रखे किन्तु साम्प्रदायिक दंगों से तंग आकर माऊंट बेटन ने भी सी.आर. फर्मूला का ही समर्थन किया और बाल्कन योजना के तहत 14 Aug. 1944 ई. को भारत का विभाजन कर दिया गया।
- सिरील रेडक्लिफ के नेतृत्व में भारत पाकिस्तान के बीच रेडक्लिफ नामक विभाजन रेखा खींच दी गई।
- मोहम्मद अल्ली जिन्ना को पाकिस्तान का निर्माता कहा जाता है। लिआकत अली पाकिस्तान के पहले प्रधानमंत्री बने जो संयुक्त भारत के वित्तमंत्री थे।

सुभाषचन्द्र बोस

- सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 Jan 1897 ई. को उड़ीसा के कटक में हुआ था। इनके गुरु चितरंजन दासथे। इन्होंने 1920 ई. में इंडियन सिविल सर्विस (I.C.S.) की परीक्षा पास की किन्तु 1921 ई. में उन्होंने त्याग पत्र दे दिया और राजनीति में प्रवेश कर गए। 1938 ई. में गुजरात के हरिपुरा कांग्रेस अधि वेशन में अध्यक्ष बने।
- सुभाष चंद्र बोस को मतभेद होने के कारण कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया और एक अलग पार्टी फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना 1930 ई. में कर लिया।
- 1940 ई. में भड़काऊ भाषण के आरोप में बोस को जेल हो गया और 1941 ई. में जेल से रिहा भी हो गए। ये जर्मनी में हिटलर से मिले।
- हिटलर ने इन्हें नेताजी की उपाधि दिया तथा हिटलर जिन भारतीय सैनिकों को बंदी बनाया था। सुभाष चन्द्र बोस ने उन्हें इंग्लैंड के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया।
- इन सैनिकों को हथियार और प्रशिक्षण जापान के द्वारा दिया जा रहा था, साथ ही जापान ने सुभाषचन्द्र बोस को अण्डमान और निकोबार द्वीप उपहार में दे दिया।
- सिंगापुर में इन सैनिकों को आजाद हिन्द फौज का हिस्सा बना दिया गया और महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहकर संबोधित किया गया।
- अपने सैनिकों में जोश भरते हुए जुबली हॉल में इन्होंने कहा कि–

  ''तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा''।
- सुभाष चन्द्र बोस ने अडमान निकोबार का नाम शहीद एवं स्वराज नाम दिया।

आजाद हिन्द फौज

- इसके गठन का सर्वप्रथम विचार Indian Caiptain मोहन सिंह ने दिया था अर्थात यह कैप्टेन मोहन सिंह के दिमाग की उपज थी।
- आजाद हिन्द फौज के संस्थापक रासबिहारी बोस थे। 4 July, 1943 ई. को सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज के कप्तान बनाई गयी।
- इन्हें इस फौज का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- 21 Oct. 1943 ई. को सिंगापुर में सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द सरकार की स्थापना की।
- सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को लेकर मणिपुर पर आक्रमण किया और उस को अपने नियंत्रण में कर लिया।
- सुभाष चन्द्र बोस ने **जय हिन्द** तथा **दिल्ली चलो** का नारा मणिपुर के इम्फाल से दिया था।
- 6 Aug तथा 9 Aug 1945 ई. को अमेरिका ने जापान पर परमाणु हमला कर दिया जिस कारण सुभाष चन्द्र बोस ने जापान छोड़ दिया किन्तु 18 Aug 1945 ई. को ताइबान (फार्मुसा) के समीप विमान दूर्घटना में इनकी मृत्यु हो गई।
- जापान सरकार ने इनकी मृत्यु की घोषणा 22 Aug 1945 ई. को किया। इनकी मृत्यु के बाद आजाद हिन्द फौज की सैनिकों पर लाल किला में मुकदमा चलाया गया। इन सैनिकों की वकालत जवाहर लाल नेहरू, तेगबहादुर तथा K.N कुंजरू जैसे वकीलों ने किया।

❑❑❑

27. प्रमुख प्रस्ताव एवं सम्मेलन (Major Proposals and Conferences)

अगस्त प्रस्ताव

- द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीयों ने अंग्रेजों का साथ देने से इंकार कर दिया तब अंग्रेजों ने भारतीयों को साथ में लाने के लिए वायसराय लिनलिथगो के द्वारा 8 अगस्त 1940 ई. को अगस्त प्रस्ताव लाया। इसमें निम्नलिखित बातें कही गयी–
  1. इसमें कहा गया कि अगर द्वितीय विश्वयुद्ध में भारत अंग्रेजों का साथ देता है तो हम उनके लिए डोमेनियन स्टेट की बात करेंगे।
  2. वायसराय के परिषद में भारतीयों की संख्या को बढ़ाई जाएगी।
  3. संविधान बनाने के लिए संविधान सभा पर भी विचार किया जाएगा।
- अगस्त प्रस्ताव को कांग्रेस सहित मुस्लिम लीग ने भी अस्वीकृत कर दिया अत: यह प्रस्ताव असफल रहा। इसके जवाब में महात्मा गाँधी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया।
- पं. जहवार लाल नेहरू ने अगस्त प्रस्ताव के विषय में कहा कि जिस डोमेनियम स्टेट की स्थिति पर यह प्रस्ताव आधारित है वह **'दरवाजे में जड़ी जंग लगी कील'** की तरह है।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

- 17 अक्टूबर, 1940 ई. को गांधी जी ने पवनार (महाराष्ट्र) नामक स्थान से व्यक्तिगत सत्याग्रही शुरू किया।
- इस सत्याग्रह के प्रथम सत्याग्राही विनोबा भावे, दूसरे सत्याग्रही पंडित जवाहरलाल नेहरू, तीसरी सत्याग्रही ब्रह्मदत्त थे।
- इस आंदोलन को दिल्ली चलो आंदोलन भी कहा जाता है।

क्रिप्स प्रस्ताव

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों से सहयोग प्राप्त करने के लिए क्रिप्स प्रस्ताव भारत आया।
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने भारत के राजनीतिक और वैधानिक गतिरोधों को दूर करने के लिए 23 मार्च, 1942 ई. को स्टैफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में क्रिप्स मिशन भेजा।
- क्रिप्स मिशन के साथ कांग्रेस के अधिकारी वार्ताकार पंडित जवाहर लाल नेहरू और मौलाना आजाद थे।
- यह प्रस्ताव 30 मार्च, 1942 ई. को प्रस्तुत किया गया।
- इसने भारतीयों के आगे यह प्रस्ताव रखा कि यदि द्वितीय विश्वयुद्ध में भारतीय उनका साथ देंगे तो युद्ध के बाद एक भारतीय संघ बनाया जाएगा। राज्यों की स्वयत्तता दी जाएगी। वायसराय के परिषद में भारतीयों की संख्या बढ़ा दी जाएगी। एक बार कौंसिल का गठन किया जाएगा जिसमें भारतीय भी होंगे।
- इस प्रस्ताव को कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग दोनों ने अस्वीकार कर दिया। अंतत: क्रिप्स प्रस्ताव असफल हो गया।
- गांधीजी ने इसपर कहा कि यह एक आगे की तारीख की चेक (Post Dated Cheque) था।
- जवाहर लाल नेहरू ने इसे कहा कि यह एक आगे की तारीख का चेक था जिसका बैंक नष्ट होने वाला था।

भारत छोड़ो आंदोलन

- क्रिप्स प्रस्ताव के असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव रखा इन्होंने इस आंदोलन की रूप रेखा तैयार करने की जिम्मेदारी जवाहर लाल नेहरू को दी।
- 1 अगस्त को तिलक दिवस पर इलाहाबाद में पण्डित नेहरू ने कहा, **''हम आग के साथ खेलने जा रहे हैं। हम दोधारी तलवार का प्रयोग करने जा रहे हैं, जिसकी चोट उल्टे हमारे ऊपर पड़ सकती है''**।
- इस आंदोलन नेतृत्व महात्मा गांधी ने किया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव 14 जुलाई, 1942 ई. को कांग्रेस के वर्धा अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया था।
- यह आंदोलन 8 अगस्त, 1942 ई. को मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान से प्रारंभ होना था किन्तु अंग्रेजों ने 9 अगस्त, को Operation Zero Hour के तहत सभी नेताओं को रात में ही गिरफ्तार कर लिया। अत: यह आंदोलन नेतृत्वविहिन हो गया।
- राजेन्द्र प्रसाद को पटना के बांकीपुर जेल में गिरफ्तार किया गया।
- जय प्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में गिरफ्तार किया गया किन्तु वे जेल का दीवार फांद कर भाग गए। तथा अन्य आंदोलनकारियों को संगठित कर **आजाद दस्ता** का गठन किया।
- महात्मा गाँधी तथा सरोजनी नायडू को आगा खाँ पैलेस में गिरफ्तार किया गया।
- आगां खाँ पैलेस में कैद के समय महात्मा गांधी के स्वास्थ्य में आमरण अनशन के कारण तेजी से गिरावट आ रही थी। चिकित्सकों के परामर्श पर भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा विचार किया गया कि अगर गांधीजी मर जाते हैं, तो बंबई सरकार, प्रांतीय सरकारों के पास 'रुबिकॉन' कूट शब्द भेज देगी। इसे ही ऑपरेशन रूबिकॉन कहते है।

- भारत छोड़ो का नारा यूसूफ मेहर अली ने दिया था।
- इस आंदोलन के समय महात्मा गांधी के साथ अमेरिकी पत्रकार लूई फिशर थे।
- गुप्त रूप से मदन मोहन मालवीय ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया इन्हें महामना कहा जाता है।
- बम्बई तथा नासिक में भूमिगत रेडियो स्टेशन की स्थापना की गई। उषा मेहता, राम मनोहर लोहिया एवं वी.एम. खाकर ने भूमिगत कांग्रेस रेडियों का संचालन किया।
- 9 अगस्त, 1942 ई. को महात्मा गाँधी ने करो या मरो का नारा दिया।
- भारत छोड़ो आंदोलन को अगस्त क्रांति भी कहा जाता है।
- इसी आंदोलन के दौरान 11 अगस्त, 1942 ई. को पटना सचिवालय पर तिरंगा झंडा लहराने के लिए विद्यार्थी का एक समूह आगे बढ़ा जिस पर पटना के जिलाधिकारी आर्यस ने गोली चलवा दी जिसमें सात विद्यार्थी शहीद हो गए।
- इस घटना को सचिवालय हत्याकाण्ड कहते हैं।
- इस आंदोलन के दौरान रेल पटरी उखाड़ने की सबसे ज्यादा घटना बिहार के मुंगेर में हुई थी।
- इसी आंदोलन के दौरान बलिया में चितु पाण्डेय ने अपनी स्वतंत्र सरकार की स्थापना कर दिया।
- इस आंदोलन के दौरान बड़े नेताओं के गिरफ्तारी के बाद मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में कांग्रेस का झंडा अरूणा आसफ अली ने फहराया था।
- कनकसता बरूआ (असम) भारत छोड़ो आंदोलन के समय गोहपुर पुलिस थाने पर तिरंगा फहराने के दौरान पुलिस गोलीबारी में शहीद हो गई थी।
- सतारा में नानापाटिल तथा वाई.बी. चौहान के द्वारा सरकार की स्थापना की गई जो सबसे लम्बे समय तक चलने वाली सरकार थी।
- इस आंदोलन में अरूणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, उषा मेहता आदि महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।
- इस आंदोलन में हिन्दू महासभा, कम्युनिष्ट पार्टी ऑफ इण्डिया, यूनियन पार्टी ऑफ पंजाब एवं मुस्लिम लीग ने भाग नहीं लिया था।
- भारत छोड़ो आंदोलन के उपरांत सी. राजगोपालाचारी ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच संवैधानिक गतिरोध को दूर करने लिए 1944 ई. में 'दी वे आउट' नामक अपना प्रपत्र जारी किया था।
- इस आंदोलन के समय भारत के प्रधान सेनापति लॉर्ड वेवेल जबकि गवर्नर (वायसराय) लॉर्ड लिनलिथगो थे।
- इस समय के वायसराय लिनलिथगो ने भारतीयों के दमन के लिए हवाई जहाज से गोली चलाने का निर्णय लिया, परंतु यह आंदोलन स्वत: समाप्त हो गया।

वेवेल योजना

- लिनलिथगो के बाद भारत के वायसराय वेवेल बने इन्होंने 21 मार्च, 1945 ई. को भारत के सभी राजनीतिक दलों में आपसी समन्यव बनाने के लिए तथा भारत की स्थिति सामान्य बनाने के लिए 14 जून, 1945 ई. को एक योजना बनाई। इस योजना को ही वेवेल योजना कहते हैं। इस योजना के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल थे।

इस योजना के प्रमुख प्रावधान निम्न थे–

1. केन्द्र में एक नई कार्यकारी परिषद का गठन किया जाएगा। जिसमें वायसराय तथा कमांडर-इन-चीफ के अतिरिक्त शेष सदस्य भारतीय होंगे।
2. इसके कार्यकारणी परिषद में हिन्दुओं एवं मुसलमानों की संख्या बराबर होगी।
3. कांग्रेस का नेता शीघ्र ही रिहा कर दिए जायेंगे।
4. गवर्नर जनरल बिना किसी कारण के निषेधाधिकार (वीटो) का प्रयोग नहीं करेगा।

- वेवेल योजना पर विचार विमर्श करने के लिए भारत के गृष्मकालीन राजधानी शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया जिसे शिमला सम्मेलन कहते हैं।

शिमला सम्मेलन

- वेवेल योजना के तहत् 25 जून से 14 जुलाई, 1945 ई. तक शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।
- इस सम्मेलन में विभिन्न राजनीतिक दलों के 21 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।
- मुस्लिम लीग की ओर से जिन्ना तथा कांग्रेस की ओर से अबुल कलाम आजाद ने भाग लिया।
- गांधीजी ने इस सम्मेलन में भाग नहीं लिए थे जबकि वे इस सम्मेलन के दौरान शिमला ही में थे।

इसमें वेवेल योजना के प्रावधानों को बताया गया जिसकी मुख्य बातें निम्नलिखित है–

(i) वायसराय के 14 सदस्यी परिषद में वायसराय तथा सेनापति का पद ब्रिटेन के पास रहेगा। शेष 12 पदों पर भारतीय रहेंगें।

(ii) परिषद में भारतीय 12 सदस्यों में 6 मुस्लिम तथा 6 हिन्दू सदस्य रहेंगे। अर्थात हिन्दू तथा मुस्लिम की संख्या समान रहेगी।

(iii) द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद भारतीय खुद का संविधान बनाएंगे।

➢ **विवाद का कारण**

- मुस्लिम लीग का कहना था की 6 मुस्लिम सदस्य का चुनाव मुस्लिम लीग से ही किया जाए, जिस पर कांग्रेस सहमत नहीं थी।

- जिस कारण 14 जुलाई, 1945 ई. को लॉर्ड वेवेल ने यह घोषणा कर दिया कि शिमला सम्मेलन विफल हो गया।
- अबुल कलाम आजाद ने कहा था कि शिमला सम्मेलन की विफलता भारत के राजनीतिक इतिहास में **'एक जल विभाजक'** की सूचक थी।
- इस सम्मेलन के विफलता के बाद मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवायी दिवस मनाया।

नौसेना विद्रोह

- INS तलवार के सैनिकों ने 18 फरवरी, 1946 ई. को भेदभाव के कारण विद्रोह कर दिया। देखते-ही-देखते विद्रोहियों की संख्या 5000 हो गई।
- इन सैनिकों ने आजाद हिंद फौज का विल्ला (logo) लगाया तथा आजाद हिंद फौज का झंडा लहराया जिस पर दहाड़ता हुआ शेर का चिन्ह बना हुआ था।
- ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह का कठोरतापूर्वक दमन किया तथा **एडमिरल गोलफ्रेड** को आदेश दिया कि 'चाहे संपूर्ण नौ-सैनिक शक्ति नष्ट हो जाए, परंतु इसका दमन जल्द-से-जल्द कर दिया जाए'।
- सरदार पटेल के मध्यस्थता में 25 फरवरी, 1946 ई. को विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसे ही नौ सेना विद्रोह कहते हैं।

कैबिनेट मिशन

- इंग्लैंड के लेबर पार्टी के प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली ने यह घोषणा किया कि 1948 ई. तक ब्रिटिश हिन्दुस्तान छोड़ देंगे।
- इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए एटली ने अपने कैबिनेट मंत्रियों को भारत भेजा जिसे कैबिनेट मिशन कहते हैं।
- यह मिशन 29 मार्च, 1946 ई. को भारत आया था। जिसमें 3 मंत्री थे।
  (i) सर स्टैफोर्ड क्रिप्स
  (ii) ए.वी. अलेक्जेंडर
  (iii) लॉर्ड पेथिक लारेंस

  Trick :– KAL
- कैबिनेट मिशन के अध्यक्ष सर स्टैफोर्ड क्रिप्स, नौ सेना मंत्री ए.वी. अलेक्जेंडर तथा भारत सचिव लॉर्ड पेथिक लारेंस थे।
- कैबिनेट मिशन ने घोषणा की कि ''इस मिशन का उद्देश्य भारत की अंतरिम सरकार के गठन के लिए आवश्यक प्रबंध करना तथा संविधान का निर्माण करने के लिए एक कार्य-प्रणाली तैयार करना है।''

➢ **कैबिनेट मिशन में दो प्रावधान किए–**

(i) संविधान सभा– जिसमें 389 सदस्य थे।

(ii) अंतरिम सरकार (Provisional Government)– अंतरिम सरकार के अध्यक्ष लॉर्ड वेवेल थे। कैबिनेट मिशन ने पृथक पाकिस्तान के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया जिस कारण भारत में साम्प्रदायिक दंगे बढ़ने लगे।

माउंटबेटन योजना

- 27 मार्च, 1947 ई. को लॉर्ड माउंटबेटन 34वें वायसराय बनाकर भारत भेजा एवं उन्हें यह विशेष हिदायत दिया गया कि यथासंभव भारत को संयुक्त रखा जाए।
- माउंटबेटन ने भारत को संयुक्त रखने का प्रयास किया किन्तु सामप्रदायिक तनाव के कारण बालकन प्लान के तहत भारत का विभाजन कर दिया गया।
- 2 अप्रैल, 1947 ई. को लॉर्ड माउंटबेटन ने गांधीजी से मुलाकात की। गांधीजी ने सुझाव दिया कि जिन्ना को सरकार बनाने दिया जाए, कम-से-कम इससे देश का विभाजन तो रूक जाएगा, परंतु गांधीजी के इस सुझाव का जवाहरलाल नेहरू तथा वल्लभभाई पटेल ने विरोध किया।
- 3 जून, 1947 ई. को भारत विभाजन योजना प्रस्तुत कर दी जिसे **माउंटबेटन योजना** के नाम से जाना जाता है।
- जुलाई 1946 ई. में कैबिनेट-मिशन के अनुसार संविधान सभा का निर्वाचन हुए।
- 4 जुलाई, 1947 ई. को भारत के स्वतंत्रता का विधेयक ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया।
- 18 जुलाई को भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पारित हो गया।
- 14 अगस्त को पाकिस्तान का निर्माण हुआ तथा 15 अगस्त को भारत को स्वतंत्रता मिली।

अंतरिम सरकार

- इसका निर्माण क्लीमेट एटली ने 2 सितम्बर, 1946 ई. में किया उस समय वायसराय लॉर्ड वेवेल थे।
- अंतरिम सरकार के अध्यक्ष लॉर्ड वेवेल थे तथा उपाध्यक्ष जवाहर लाल नेहरू थे।

➢ **अंतरिम सरकार के मंत्री–**

(i) जवाहर लाल नेहरू - प्रधानमंत्री
(ii) सरदार पटेल - गृह, सुचना प्रसारण
(iii) राजेन्द्र प्रसाद - कृषि एवं खाद्य आपूर्ति
(iv) बलदेव सिंह - रक्षा मंत्री
(v) जान मेथाई - उद्योग मंत्री
(vi) लियाकत अली - वित्त मंत्री
(vii) अरुणा असफ अली - रेल मंत्री
(viii) होमी जहांगीर भाभा - ऊर्जा मंत्री
(ix) योगेन्द्र नाथ - कानून मंत्री
(x) राजगोपालाचारी - शिक्षा मंत्री
(xi) जगजीवन राम - श्रम मंत्री

Note :– 1951-52 ई. के चुनाव के फलस्वरूप बनने वाली पहली सरकार में विदेश मंत्री जवाहर लाल नेहरू तथा शिक्षा मंत्री अबुल कलाम आजाद थे।

भारतीय प्रेस का विकास

- भारत में प्रेस का प्रारंभ 1556 ई. में पुर्त्तगालियों ने गोवा से किया।
- ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1684 ई. में बंबई में अपना पहला प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया।
- 1780 ई. में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने भारत का पहला अखबार द बंगाल गजट या द कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर नाम से प्रकाशित किया।
- 1780 ई. में ही प्रकाशित 'इंडिया गजट' दूसरा भारतीय पत्र था।
- सर्वप्रथम प्रेस सेंसरशिप लॉर्ड वेलेजली ने 1799 ई. में लागू की थी।
- किसी भी भारतीय द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित पहला समाचार-पत्र बंगाल गजट था, जिसका प्रकाशन गंगाधर भट्टाचार्य ने किया, जबकि हिन्दी में प्रकाशित प्रथम समाचार-पत्र उदंड मार्तंड था, जिसका प्रकाशन 1826 ई. में कलकत्ता से जुगल किशोर ने किया था।
- भारत में राष्ट्रीय प्रेस की स्थापना का श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। जिन्होंने सप्ताहिक समाचार पत्र संवाद कौमुदी (1821 ई.), फारसी भाषा में मिरातुल अखबार (1822 ई.) तथा अंग्रेजी भाषा में ब्रह्मनिकल का प्रकाशन किया।
- राजा राममोहन राय के सामाजिक तथा धार्मिक विचारों के विरोध में 1822 ई. में **'समाचार चंद्रिका'** का प्रकाशन भवानीचरण वन्द्योपाध्याय द्वारा कलकत्ता से किया गया तथा बम्बई से 1822 ई. में गुजराती भाषा में दैनिक **बंबई समाचार** का फर्दूनजी ने प्रकाश किया।
- 1851 ई. में दादा भाई नौरोजी द्वारा 'रस्तगोफतार' तथा 'अखबारे सौदागर' का प्रकाशन गुजराती में किया गया।
- 'हिन्दुस्तानी' तथा 'एडवोकेट ऑफ इण्डिया' का संपादन भी दादा भाई नौरोजी ने किया।
- 1853 ई. में हरिश्चन्द मुखर्जी ने हिन्दु पैट्रियाट का प्रकाशन कलकत्ता से किया।
- गणेश शंकर विद्यार्थी के द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र **प्रताप** के माध्यम से विजय सिंह पथिक ने बिजौलिया आंदोलन पूरे भारत में चर्चा का विषय बना दिया।
- क्रिस्टोफरदास पाल को भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार कहा जाता है।
- ये हरिश्चन्द्र मुखर्जी के मृत्यु के बाद इनके पत्रिका हिन्दु पैट्रियाट का संपादक बना था।

➢ अनुज्ञप्ति नियम (The Licensing Regulation)

- यह अधिनियम जॉन एड्मस द्वारा पारित किया गया था। इस अधिनियम के तहत मुद्रा तथा प्रकाशक को प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करने के लिए लाइसेंस लेना पड़ता था।
- इस अधिनियम के तहत 1823 ई. में मिरात-उल अखबार को प्रतिबंधित कर दिया गया था।

➢ वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट

- 1878 ई. में लॉर्ड रिटन ने भारतीय प्रेस का गला घोटने वाला अधिनियम वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लाया।
- इस अधिनियम को मुँह बंद करने वाला अधिनियम कहा गया है।
- इस एक्ट के तहत जिला मजिस्ट्रेट को यह अधिकार था कि वह किसी भी भारतीय भाषा के समाचार पत्र से बॉण्ड पेपर पर हस्ताक्षर करवा ले कि वह कोई भी ऐसी सामग्री नहीं छापेगा जो सरकार विरोधी हो।
- यह भारतीय भाषाओं में छापे जानेवाले अखबारों पर लागू होता था।
- इसके तहत अखबार छापने से पहले अंग्रेजों से अनुमती लेनी होती थी।
- पत्रकारिता के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा सजा पाने वाले प्रथम भारतीय बालगंगाधर तिलक थे।
- इस अधिनियम के द्वारा ईश्वर चन्द्र विद्यासागर की पत्रिका सोम प्रकाश को प्रतिबंधित कर दिया गया था।
- वर्नाक्यूलर एक्ट से बचने के लिए शिशिर कुमार घोष तथा मोतीलाल घोष ने अपनी अमृत बाजार पत्रिका को बंगाली से अंग्रेजी में कर लिया था।
- पाइनियर अखबार ने वर्नाक्यूलर एक्ट का समर्थन किया था। क्योंकि पाइनियर अंग्रेजी भाषा का अखबार था।
- लॉर्ड रिपन ने 1882 ई. में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया।
- चार्ल्स मेडकाफ को भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

➢ समाचार पत्र अधिनियम

- यह अधिनियम कर्जन की अलोकप्रिय नीतियों को दवाने के लिए सरकार ने 1908 ई. में द न्यूज पेपर एक्ट (समाचार पत्र अधिनियम) पारित किया।
- इस अधिनियम के तहत यदि कोई प्रकाशक समाचार पत्र में हिंसा अथवा हत्या प्रेरित करने वाले तथ्य छापेंगे तो प्रकाशक की सम्पति एवं मुद्राणालय को जब्त कर लिया जायेगा।
- इस अधिनियम के तहत बंगाल में वन्दे मातरम्, संध्या तथा यूगांतर देशी समाचार पत्रों को बंद करके उनपर मुकदमा चलाया गया।

प्रमुख आधुनिक भारतीय समाचार पत्र			
समाचार पत्र एवं पत्रिकाएँ	**भाषा**	**वर्ष**	**सम्पादक/संस्थापक**
द बंगाल गजट	अंग्रेजी	1780	जेम्स ऑगस्टस हिक्की (आयरिश)
इण्डिया गजट	अंग्रेजी	1780	हेनरी विवियन डिरोजियो
बंगाल गजट	अंग्रेजी	1818	गंगाधर भट्टाचार्य
समाचार दर्पण	बंगाली	1821	जे.सी. मार्शमैन
संवाद कौमुदी	बंगाली	1821	राजाराम मोहन राय
मिरातुल अखबार	फारसी	1822	राजाराम मोहन राय
जाम-ए-जहाँनुमा	उर्दू	1822	राजाराम माहेन राय
बाम्बे समाचार	गुजराती	1822	फर्दूनजी मार्जबान
उदन्त मार्तण्ड	हिन्दी	1826	जुगल किशोर
दर्पण	मराठी	1832	बाल शास्त्री
बाम्बे टाइम्स	अंग्रेजी	1838	थामस वेटेन/राबर्ट नाइट
रास्त गोफ्तार	गुजराती	1851	दादा भाई नौरोजी
हिन्दू पैट्रियाट	अंग्रेजी	1853	गिरीश चन्द्र घोष बाद में हरिश्चन्द मुखर्जी
सोम प्रकाश	बंगाली	1859	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
टाइम्स ऑफ इण्डिया	अंग्रेजी	1861	रॉबर्ट नाइट
पायनियर	अंग्रेजी	1865	जॉर्ज ऐलन
अमृत बाजार प्रत्रिका	बांग्ला	1868	मोती लाल घोष एवं शिशिर घोष
केसरी	मराठी	1881	बाल गंगाधर तिलक
मराठी	अंग्रेजी	1881	बाल गंगाधर तिलक
युगान्तर		1906	बारीन्द्र घोष, भूपेन्द्र नाथ दत्त दादा भाई नौरोजी
संध्या		1906	ब्रह्मबांधव उपाध्याय
वन्देमातरम्	अंग्रेजी	1906	अरविन्द्र घोष तथा विपिन चन्द्र पाल
वन्देमातरम्	अंग्रेजी	1909	लाला हरदयाल
द लीडर	अंग्रेजी	1909	मदन मोहन मालवीय
कामरेड	अंग्रेजी	1911	मौलाना मु. अली
अल हिलाल	उर्दू	1912	मौ. अबुल कलाम आजाद
हमदर्द	उर्दू	1913	मौलाना मु. अली
प्रताप	हिन्दी	1913	गणेश शंकर विद्यार्थी
गदर	उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, पंजाबी, हिन्दी	1913	लाला हरदयाल
कॉमन वील	अंग्रेजी	1914	एनीबेसेंट
डॉन	अंग्रेजी	1917	मु. अली जिन्ना

न्यू इण्डिया	अंग्रेजी	1919	एनीबेसेंट
यंग इण्डिया	अंग्रेजी	1919	महात्मा गांधी
नवजीवन	हिन्दी-गुजराती	1919	महात्मा गांधी
आज	हिन्दी	1920	शिव प्रसाद गुप्ता
हिन्दूस्तान टाइम्स	अंग्रेजी	1922	के.एम. पणिक्कर
नवकाल	मराठी	1928	एन.आई. खांडेकर
हरिजन	गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी	1933	महात्मा गांधी
इन्कलाब	उर्दू	1937	खालिद अंसारी
नेशनल हेराल्ड	अंग्रेजी	1938	जवाहर लाल नेहरू

भारत में अंग्रेजो के द्वारा शिक्षा का विकास

- 1813 ई. की चार्टर एक्ट में शिक्षा के विकास हेतु 1 लाख रुपये तथा 1833 ई. के चार्टर एक्ट में 10 लाख के रुपये का प्रावधान किया गया।
- लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 1835 ई. में मैकाले की अध्यक्षता में शिक्षा के माध्यम के लिए एक आयोग का गठन किया गया।
- इस आयोग में मैकाले ने अंग्रेजी भाषा का पक्ष लिया।
- मैकाले आयोग के अनुशंसा के आधार पर शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी को बनाया गया।
- शिक्षा के विकास के लिए अधोगामी निस्पंदन (Down ward filtration theory) सिद्धांत को अपनाया गया।

➢ चार्ल्स बुड आयोग

- 1854 में चार्ल्स वुड का Educational despatch का रिपोर्ट आया। जिसमें प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्चतर शिक्षा का वर्णन किया गया था।
- वुड का घोषणा पत्र को भारतीय शिक्षा का मेग्नाकार्टा भी कहा जाता है।
- इस समिति के अनुशंसा के आधार पर 1855 ई. में पाँच प्रातों में जन-शिक्षा विभाग का गठन किया गया।
- इस एक्ट के तहत 1857 ई. में कलकत्ता बंबई एवं मद्रास में तीन विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

➢ हंटर शिक्षा अयोग

- लॉर्ड रिपन के शासन काल में 1882 ई. में हंटर आयोग का गठन किया गया।
- हंटर आयोग ने प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के सुधार एवं विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत किया।
- 1882 ई. में पंजाब विश्वविद्यालय तथा 1887 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
- लॉर्ड कर्जन ने 1902 ई. में सर टामस रैले के नेतृत्व में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया।
- इस आयोग के अनुशंसा के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित किया गया है।
- 1906 ई. में बड़ोदा रिसासत में सर्वप्रथम अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान किया गया।
- 1916 ई. में जी.के. कर्वे ने पूना में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना करवाया।
- 1849 ई. में बैथ्यून (Bethune) ने कलकत्ता में पहली महिला विद्यालय की स्थापना करवाया और इसमें इसके सहायक ईश्वर चन्द्र विद्यासागर थे।
- ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने 35 महिला विद्यालय की स्थापना करवाये थे।
- 1917 ई. में पटना विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की गई।
- 1917 ई. में सैडलर विश्वविद्यालय आयोग की स्थापना की गई।
- इस आयोग की अनुशंसा के आधार पर 12 वर्ष स्कूली शिक्षा के बाद विश्वविद्यालयी शिक्षा की अनुशंसा की गई (पहली बार ऑनर्स की शिक्षा)
- 1929 ई. में शिक्षा पर हार्टोग समिति का गठन किया गया।
- इस समिति के अनुशंसा के आधार पर विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा की अनुशंसा की गई।
- 1937 ई. में गांधीजी ने मूल शिक्षा (Basic educttion) पर वर्धा योजना को अपनी समाचार पत्र हरिजन में प्रस्तुत किया था।
- इस योजना का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ स्वावलंबन बनाना था। जिसके तहत हस्त उत्पादक कार्य का प्रशिक्षण देना था।
- मूल शिक्षा पर गठित आयोग के अध्यक्ष डॉ. जाकिर हुसैन थे।
- 1921 ई. में रविन्द्रनाथ टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना की थी।
- 1902 ई. में श्रद्धानन्द सरस्वती ने गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना हरिद्वार में की थी।

- 1948 ई. में विश्वविद्यालय शिक्षा पर राधाकृष्णण आयोग का गठन किया गया। इस आयोग के अनुशंसा के आधार पर 1953 ई. में UGC (University Grant commisioson) का गठन किया गया।
- 1964 ई. में दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में कोठारी आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने त्रिभाषा सूत्र और 10 + 2 + 3 के सिद्धांत की प्रतिपादन किया था।
- इस आयोग के अनुशंसा के आधार पर 1968 ई. में प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाया था।
- 42वीं संविधान संशोधन 1976 ई. द्वारा शिक्षा को समवर्ती सूची में शामिल किया गया।
- 1986 ई. में नई शिक्षा नीति लागू की गई।
- 86वीं संविधान संशोधन 2002 ई. द्वारा अनुच्छेद 21A के तहत शिक्षा को मौलिक अधिकार बनाया गया।
- 2009 ई. में शिक्षा के मौलिक अधिकार कानून संसद द्वारा पास किया गया जोकि 1 अप्रैल 2010 ई. से भारत में लागू किया गया।
- 34 वर्ष पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के स्थान पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाया गया जिसकी अध्यक्षता डॉ. के कस्तुरी रंगन ने किया था। इस नई शिक्षा नीति के आधार पर शैक्षिक पाठ्यक्रम को 5 + 3 + 3 + 4 के आधार पर विभाजित किया गया।

भारत में बने कारखाना अधिनियम

- ब्रिटिश शासन काल में भारत में लंकाशायर के उद्योगपतियों के मांग पर 1875 ई. में प्रथम श्रम आयोग का गठन किया गया था। जिसका उद्देश्य भारतीय कारखानों में श्रमिकों के काम करने की परिस्थितियों का अध्ययन करना था।
- इस आधार पर ब्रिटिश सरकार ने भारत में कुल 6 कारखाना अधिनियम पारित किए–

➢ प्रथम कारखाना अधिनियम (1881 ई.)

- यह लॉर्ड रिपन के समय आया था।
- यह अधिनियम बालश्रम से संबंधित था, जिसमें 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में नहीं लगाया जा सकता था।
- इसके द्वारा 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों के काम करने की अवधि 9 घंटा निर्धारित की गई तथा कार्य अवधि में 1 घंटे का आराम एवं महिने में चार दिन छुट्टी की व्यवस्था निर्धारित की गई।

➢ द्वितीय कारखाना अधिनियम (1891 ई.)

- यह लेंस डाउन के समय आया था।
- इसके द्वारा कार्य करने की अधिकतम अवधि 11 घंटे निर्धारित की गई इसमें रात के समय महिलाओं के कार्य करने पर प्रतिबंध लगया गया था।
- इस अधिनियम के तहत कारखानों में स्वच्छ पेयजल के आपूर्ति एवं सफाई हेतु स्वयं नियम बनाने का प्रावधान किया गया।

➢ तीसरा कारखाना अधिनियम (1911 ई.)

- यह हार्डिंग द्वितीय के समय आया था।
- इसके द्वारा पुरुषों के कार्य करने की अधिकतम अवधि 12 घंटा निर्धारित की गई।
- इस अधिनियम में अल्पायु के बच्चों को कारखानों में 7 बजे संध्या से 5 बजे सुबह के बीच कार्य करने से प्रतिबंधित कर दिया गया।

➢ चौथा कारखाना अधिनियम (1922 ई.)

- यह लॉर्ड रिडिंग के समय में आया था।
- इसमें बच्चों की काम करने की अवधि 6 घंटे की गई।
- इस अधिनियम के तहत ओवर टाइम श्रम करने हेतु अतिरिक्त वेतन देने की व्यवस्था की गई।
- यह कारखाना अधिनियम केवल फैक्ट्रियों पर लागू होता था।

➢ पांचवां कारखाना अधिनियम (1934 ई.)

- यह अधिनियम लॉर्ड विलिंगटन के समय में आया था।
- इस अधिनियम के तहत मौसमी और गैर मौसमी कारखानों में अंतर किया गया।
- इस अधिनियम के तहत बच्चों की कार्य अवधि 5 घंटे निश्चित की गई।
- इस अधिनियम में श्रमिकों के चिकित्सा एवं आराम की व्यवस्था का प्रबंध किया गया।

➢ छठां कारखाना अधिनियम (1946 ई.)

- यह अधिनियम लॉर्ड वैवेल के समय आया था।
- इस अधिनियम के तहत नियमित कारखानों में श्रमिकों की कार्य अवधि 9 घंटे निश्चित की गई।
- इस अधिनियम में कैण्टीन की व्यवस्था की गई।
- यह भारत का अंतिम कारखाना अधिनियम था।

Note :– स्वतंत्र भारत का प्रथम विस्तृत कारखाना अधिनियम 1948 ई. में लाया गया।

गवर्नर/गवर्नर जनरल/वायसराय

- गवर्नर अथवा गवर्नर जनरल का पद भारत में कंपनी के सर्वोच्च पदाधिकारी को प्रदान किया जाता था। गवर्नर जनरल ब्रिटिश भारत का एक सर्वोच्च होता था। यह पद केवल अंग्रेजों के लिए आरक्षित था।
- 1858 ई. तक गवर्नर जनरल को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के निर्देशकों द्वारा चयनित किया जाता था और वह उन्हीं के प्रति उत्तरदायी होता था। 1858 ई. के अधिनियम के द्वारा गवर्नर जनरल को वायसराय कहा जाने लगा। और अब उसकी नियुक्ति में ब्रिटेन के माहाराजा, ब्रिटिश सरकार और भारत के राज्य सचिव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे थे।

➢ **राबर्ट क्लाइव (1757–1760 ई.)**

- इसने बंगाल में द्वैध शासन प्रारंभ किया।
- इसने कंपनी के कर्मचारियों द्वारा उपहार लेने पर रोक लगा दी तथा सोसाइटी फॉर ट्रेड की स्थापना की।
- इसे 'भविष्य का अग्रदुत' एवं भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।

➢ **वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785 ई.)**

- वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का अंतिम गवर्नर तथा बंगाल का पहला गवर्नर - जनरल था।
- भारत में वारेन हेस्टिंगस को न्यायिक सेवा का जनक कहा जाता है। उसने प्रत्येक जिले में सर्वप्रथम एक दीवानी तथा एक फौजदारी न्यायालय की स्थापना की।
- इसके शासनकाल में ही 1773 ई. के रेग्यूलेटिंग एक्ट के तहत कलकत्ता में एक उच्चतम न्यायालय के स्थापना की गई।
- इसका मुख्य न्यायाधीश एलिजा इम्पे तथा तीन अन्य न्यायाधीश चैम्बर्ज, लिमैस्टर एवं हाइड थे।
- 1780 ई. में भारत का पहला समाचार-पत्र 'द बंगाल गजट' का प्रकाशन जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा किया गया।
- इसने 1781 ई. में कलकत्ता में प्रथम मदरसा स्थापित किया।
- इसके संरक्षण में चार्ल्स विलकिंस ने भगवद्गीता का अंग्रेजी में अनुवाद तथा सर विलियम जोंस ने 1784 ई. में द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना की।
- इसी ने क्लाइव के द्वैध-शासन को बंगाल से समाप्त कर दिया।
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-85) एवं द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84) हेस्टिंग्स के शासनकाल में ही लड़ा गया।
- यह बंगाली तथा अरबी भाषा का अच्छा जानकार था। जब यह लंदन लौट कर गया तो इसपर महाभियोग लाया गया किन्तु पारित नहीं हो पाया।

➢ **लॉर्ड कॉर्नवालिस (1786–93 ई.)**

- इसे नागरिक सेवा का जनक कहते हैं।
- कॉर्नवालिस को पुलिस सेवा का जन्म दाता कहा जाता है।
- इसने कर्मचारियों का वेतन बढ़ाया, स्थायी बंदोबस्त लाया। जमींदारों की शक्ति को कम किया, दारोगा का पद लाया तथा चल अदालत की स्थापना किया।
- इसने कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, ढाका और पटना में प्रांतीय न्यायालयों की स्थापना की।
- इसका मकबरा उत्तर प्रदेश के गाजीपुर में है।

➢ **लॉर्ड वेलेजली (1798–1805 ई.)**

- लॉर्ड वेलेजली को भारत में सहायक संधि का जनक माना जाता है। इसके तहत सर्वप्रथम हैदाराबाद को ब्रिटिश राज्य में मिलाया था।
- यह स्वयं को बंगाल का शेर कहते थे।
- इसने सिविल सेवको के प्रशिक्षण हेतु बंगाल में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कलकत्ता में की थी।

➢ **लार्ड हेस्टिंग्स (1818–1823 ई.)**

- इसके समय नेपाल युद्ध हुआ इसने संगोली के संधि (1816 ई.) के द्वारा नेपाल को अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करवाया।
- इसी के समय 1822 ई. में बंगाल में काश्तकारी अधिनियम को लागू किया गया।
- इसने पिण्डारियों का अंत कर दिया तथा मद्रास में रैयतवाड़ी व्यवस्था लाया और शिक्षा पर प्रतिवर्ष 1 लाख रुपया खर्च करने का प्रावधान किया।

➢ **लॉर्ड एमहर्स्ट (1823–1828 ई.)**

- इसके समय में प्रथम आंग्ल-वर्मा युद्ध (1824-26 ई.) हुआ जिसमें बर्मा पाराजित हुआ और 1826 ई. के मध्य दोनों के बीच यान्डबू (यांदबू) की संधि हुई।
- इन्होंने 1824 ई. में कोलकाता में 'गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज' की स्थापना की।

➢ **विलियम बेंटिक (1828–1835 ई.)**

- 1833 ई. के चार्टर अधिनियम द्वारा बंगाल के गवर्नर-जनरल को भारत का गवर्नर जनरल बना दिया जिसके तहत भारत का प्रथम गवर्नर जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक बना।
- उसने राजा राममोहन राय के सहयोग से 1829 ई. में सती प्रथा को समाप्त किया।
- कर्नल स्लीमैन की सहायता से ठगी प्रथा को समाप्त कर दिया, शिशु एवं बालिका हत्या पर भी प्रतिबंध लगा दिया।
- नर बलि की प्रथा को भी बंद करा दिया।
- इसी ने कलकत्ता में एक मेडिकल कॉलेज की स्थापना करवाई।
- बेंटिक का सबसे उल्लेखनीय सुधार नौकरियों में भारतीयों को उच्च स्थान प्रदान करना था।
- 1832 में बेंटिक ने दास प्रथा का अन्त कर दिया।

➢ **चार्ल्स मेटकॉफ (1835–1836 ई.)**

- चार्ल्स मेटकॉफ ने समाचार-पत्रों से प्रतिबंध हटा दिया, जिसके कारण इसे समाचार-पत्रों का मुक्तिदाता कहा जाता है।

➢ **लॉर्ड ऑकलैंड (1836–1842 ई.)**

- 1839 में कलकत्ता से दिल्ली तक शेरशाह सूरी मार्ग का पुनर्निर्माण किया गया और इसका नाम बदलकर ग्रैंड ट्रंक (G.T.) रोड कर दिया ग्या।
- इसने 'ब्लैक ऐक्ट' को पारित करवाया गया जिसके द्वारा काले एवं गोरे का विभेद खत्म कर दिया गया।
- तीर्थ यात्रा कर बन्द कर दिया गया। दुर्गा-पूजा पर लगे प्रतिबन्ध को भी हटा दिये गये।
- इसके समय सिंचाई के लिए अनेक नहरों का निर्माण किया गया।

➢ **लॉर्ड एलनबरो (1842–1844 ई.)**

- 1843 ई. के एक्ट-V के द्वारा दास-प्रथा उन्मूलन कानून को लागू किया गया।

- इसने कुशल अकर्मण्यता की नीति का पालन किया। इसलिए इसके कार्यकाल को कुशल अकर्मण्यता की नीति का काल कहा जाता है।

➢ **लॉर्ड हार्डिंग प्रथम (1844–1848 ई.)**

- इसी के शासन काल में 1844 ई. में नरबलि प्रथा का निषेध किया गया।
- 1845-46 ई. में प्रथम आंग्ल सिख युद्ध हार्डिंग के काल में हुआ था।

➢ **लॉर्ड डलहौजी (1848–1856 ई.)**

- इसे आधुनिक भारत का जनक कहते हैं।
- इसने 1848 में राज्य हड़पनीति (व्यपगत सिद्धांत / Doctring of Lapes) लाया। जिसके तहत सबसे पहले सतारा 1848 ई. में उसके बाद जैतपुर व संभलपुर 1849 ई. में,बघाट 1850 ई. में, उदयपुर 1852 ई. में, झाँसी 1853 ई. में तथा नागपुर को 1854 ई. में हड़प लिया गया।
- सबसे अंत में 1856 ई. में अवध के नवाब काजिद अली शाह पर कुशासन का आरोप लगाकर अवध को अंग्रेजी सम्राज्य में मिला लिया।
- भारत में पहली बार 16 अप्रैल, 1853 को बंबई से थाणे के बीच (34 किमी.) रेल इसी के शासन काल में चलाई गई।
- 1853 ई. में कलकत्ता से आगरा के बीच पहली बार बिजली से संचालित तार-सेवा की शुरूआत हुई।
- 1854 ई. में इन्होंने लोक निर्माण विभाग की स्थापना की गई जिसके अंतर्गत कई पुलों का निर्माण किया गया।
- इसने शिक्षा के क्षेत्र में 1854 ई. में Wood's Dispatch का नियम लाया, जिसे अंग्रेजी शिक्षा का मैगनाकांटा कहते हैं।
- इसने पंजाब पर अधिकार करके कोहिनूर हीरा इंगलैंड भेज दिया।

➢ **लॉर्ड कैनिंग (1856–1862 ई.)**

- कैनिंग कम्पनी के शासन के अधीन नियुक्त अन्तिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश क्राउन के तहत् नियुक्त प्रथम वायसराय था।
- इसी के समय में 1856 ई. में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित हुआ तथा 1857 ई. में बंबई, मद्रास एवं कलकत्ता में एक-एक विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- इसके समय में 1857 ई. का विद्रोह हुआ और इलाहाबाद के तहत ईस्ट इंडिया कम्पनी को समाप्त कर दिया गया।
- महालेखा परीक्षक पद का सृजन लॉर्ड कैनिंग के समय में 1857 ई. में हुआ था। स्वतंत्र भारत में इस पद का नाम नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक कर दिया गया।
- 1861 ई. का भारतीय परिषद अधिनियम एवं भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम के तहत कलकत्ता, बंबई तथा मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।

➢ **लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862–1863 ई.)**

- इसके समय वहावी आंदोलन का अंत हो गया जिसका मुख्य केंद्र पटना था।

➢ **लॉर्ड मेयो (1869–1872 ई.)**

- इसने पहली बार जनगणना प्रारंभ किया किन्तु अधुरी जनगणना किया।
- भारत में वित्तीय विकेंद्रीकरण का जनक लॉर्ड मेयो को माना जाता है। इसी ने अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना की।
- अंडमान यात्रा के दौरान इसकी हत्या एक अफगानी सैनिक ने कर दी।

➢ **लॉर्ड नार्थब्रुक (1872–1876 ई.)**

- इसके समय 1872 ई. में नेटिव मैरिज एक्ट पारित हुआ, जिसके तहत अंतर्जातीय विवाह को मान्यता दी गई।
- पंजाब में कूका विद्रोह (1872 ई.) इसी के काल में हुआ।

➢ **लॉर्ड लिटन (1876–1880 ई.)**

- लॉर्ड लिटन एक प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं साहित्यकार था। साहित्यकारों में इसे **ओवन मैरिडिथ** के नाम से जाना जाता था।
- इसी के शासन काल में रिचर्ड स्ट्रैची के अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन किया गया।
- इसने आर्म्स एक्ट द्वारा भारतीयों को हथियार रखने पर रोक लगा दिया।
- इसने सिविल सेवा का आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया।
- इसने भारतीय प्रेस का गला दबाने के लिए 1878 ई. में भारतीय समाचार पत्र अधिनियम अर्थात् वर्नाक्यूलर एक्ट लाया जिसके तहत भारतीय भाषाओं में अखबार छापने पर पहले अंग्रेजों को दिखाना होता था। अन्यथा अंग्रेज उसकी अखबार के साथ संपत्ति जब्त कर लेते थे।
- इस अधिनियम के तहत सबसे पहले सोम प्रकाश समाचार पत्र पर प्रतिबंध लगाया गया था।
- ऐंग्लो प्राच्च महाविद्यालय की स्थापना लार्ड लिटन ने अलीगढ़ में की थी।

➢ **लॉर्ड रिपन (1880 - 1884 ई.)**

- इसने लिटन की गलतियों को सुधारने का प्रयास किया।
- इसके समय 1881 ई. में पहली बार पुर्ण जनगणना हुई।
- 1818 ई. में ही प्रथम कारखाना अधिनियम लाया गया।
- शिक्षा के लिए 1882 ई. में विलियम हण्टर की अध्यक्षता में हण्टर आयोग का गठन किया गया।
- इसने आर्म्स एक्ट तथा 1882 ई. में वर्नाक्यूलर एक्ट को समाप्त कर दिया।
- रिपन ने सिविल सेवा में प्रवेश की आयु 19 वर्ष से बढ़ाकर 21 वर्ष कर दिया।

- स्थायी स्वशासन की शुरूआत लॉर्ड रिपन के कार्यकाल में ही 1882 ई. में हुई थी।
- इसके समय इलबर्ट बिल पारित हुआ। जिसके तहत भारतीय जज अंग्रेजों को सजा सुना सकते थे। जिस कारण अंग्रेजों ने विरोध कर विद्रोह शुरू कर दिया जिसे श्वेत विद्रोह कहा जाता था। बाद में इस बिल को वापस ले लिया गया।
- खुद अंग्रेजों ने रिपन को 'भारत में ब्रिटिश राज्य का शत्रु' की उपमा प्रदान किया।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने लॉर्ड रिपन को भारत के उद्धारक की उपाधि दी।

Note :– फ्लोरेंस नाइटिंगेल इटली की नर्स थी। इन्हें Lady with the Lamp कहा जाता है। यह क्रिमिया युद्ध में घायल सैनिकों की सेवा करती थी।

➢ लॉर्ड डफरिन (1884 - 1888 ई.)

- इसके कार्यकाल में ही 1885 ई. में ए.ओ. ह्यूम के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई।
- इसने कांग्रेस को मुट्ठी भर लोगों का संगठन कहा था।

➢ लॉर्ड लैंसडाउन (1888 - 1894 ई.)

- इसके समय में ही भारत और अफगानिस्तान के मध्य सीमा-रेखा (डूरंड रेखा) का निर्धारण हुआ था।
- इसने 1891 ई. का एज ऑफ कंसेंट एक्ट पारित किया, जिसमें लड़कियों की विवाह की आयु को 12 वर्ष कर दिया गया।
- सप्ताह में एक दिन छुट्टी की व्यवस्था इसी के समय में की गई।

➢ लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894–1899 ई.)

- लॉर्ड एल्गिन द्वितीय ने कहा था कि ''भारत को तलबार के बल पर विजित किया गया है और तलवार के बल पर ही इसकी रक्षा की जाएगी।
- इसके शासन काल में बिहार, बंगाल, उत्तरप्रदेश, पंजाब एवं मध्य प्रांत में एक भीषण अकाल पड़ा जिसके लिए लॉयल कमीशन के नाम से अकाल आयोग का गठन किया गया।

➢ लॉर्ड कर्जन (1899–1905 ई.)

- इसके समय अत्यधिक आयोग का गठन किया गया जैसे 1900 ई. में सर एन्टनी मैकडॉनल की अध्यक्षता में आकाल आयोग, 1901 ई. में सर कॉलिन स्कॉट मॉनक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग, 1902 ई. में एंड्रयू फ्रेजर के नेतृत्व में पुलिस सुधार आयोग तथा 1902 ई. में टॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया गया जिस कारण इन्हें आयोगों का कार्यकाल कहा जाता है।
- कर्जन ने ही 1904 ई. में ऐतिहासिक इमारतों की सुरक्षा एवं मरम्मत के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना की।
- इसके समय में ही 16 अक्टूबर, 1905 ई. में बंगाल का विभाजन प्रभावी हुआ जिसे बंगाल में **शोक दिवस** के रूप में मनाया गया।
- 1095 ई. में राबर्टसन की अध्यक्ष में रेलवे बोर्ड का गठन किया।
- इसके समय में ही कलकत्ता में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का निर्माण हुआ।
- लोक सेवाओं में उत्कृष्टता के लिए लॉर्ड कर्जन के समय में मुस्लिम सदस्यों का 'खान बहादुर' जबकि हिन्दु सदस्यों को, राय बहादुर की उपाधियाँ प्रदान करने की परंपरा शुरू हुई।

➢ लॉर्ड मिण्टो-II (1905–1910 ई.)

- 1906 ई. में ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना लार्ड मिन्टो के काल में आगा खाँ एवं सलीम उल्ला खाँ के द्वारा की गई।
- 1909 ई. में भारत के राज्य सचिव मार्ले थे और इन्होंने मार्ले मिंटो सुधार लाया जिसे 1909 ई. का भारत शासन अधिनियम कहते हैं।
- इसके द्वारा मुसलमानों को पृथक निर्वाचक क्षेत्र दे दिया गया।
- कांग्रेस ने भी इस प्रस्ताव को 1916 ई. में लखनऊ अधिवेशन में स्वीकार कर लिया।
- मिण्टो-II को भारत में समप्रदायिकता का जनक कहते हैं।
- राजेंद्र प्रसाद ने लॉर्ड मिंटो को पाकिस्तान का जन्मदाता माना है।

➢ लॉर्ड हार्डिंग-II (1910–1916 ई.)

- इसके समय 12 दिसंबर, 1911 ई. में ब्रिटेन के सम्राट जॉर्ज पंचम भारत आये थे।
- भारत में सर्वप्रथम हवाई डाक सेवा का आरम्भ इलाहाबाद के नैनी से 1911 ई. को शुरू किया गया।
- इसने बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया और 1 जनवरी, 1912 ई. को भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थांतरित कर दिया।
- इसके समय 1914 ई. में प्रथम विश्व युद्ध प्रारंभ हुआ था।
- इसी के समय में मदन मोहन मालवीय ने 1915 ई. में अखिल भारतीय हिंदू महासभा तथा 1916 ई. में बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।
- हार्डिंग को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति 1916 में बनाया गया था।

➢ लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–1921 ई.)

- 1916 ई. में पूना में प्रथम महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- इन्हीं के कार्यकाल में अप्रैल 1919 ई. में रौलेट एक्ट को लागू किया गया।
- चेम्सफोर्ड के समय 1919-20 ई. में खिलाफत आन्दोलन और 1920-22 ई. में असहयोग आन्दोलन प्रारंभ हुआ था।
- 1919 ई. में 'मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार' अधिनियम पारित हुआ जिसके तहत प्रांतों में द्वैध शासन की स्थापना की गई एवं भारतीय विधानमंडल को बजट संबंधी अधिकार दिया गया।

➢ **लॉर्ड रीडिंग (1921–1926 ई.)**

☛ लॉर्ड रीडिंग के समय में ही 1 नवंबर, 1921 ई. को प्रिंस ऑफ वेल्स का भारत आगमन हुआ तथा इस दिन संपूर्ण भारत में हड़ताल का आयोजन किया गया।

☛ इसने 1922 ई. से आई.सी.एस. की परीक्षा इलाहाबाद एवं लंदन दोनों जगह कराने का निर्णय लिया।

☛ इनके समय चौरी-चौरा (गोरखपुर) काण्ड हुई, जिस कारण असहयोग आंदोलन समाप्त हो गया।

☛ भारत में पहली बार (ICS / UPSC) की परीक्षा 1922 ई. में इलाहाबाद में हुई।

➢ **लॉर्ड इरविन (1926–1931 ई.)**

☛ इसके समय में देशी रियासतों के संबंध में 1927 ई. में हार्टोग बटलर की अध्यक्षता में बटलर समिति का गठन किया गया।

☛ इसके समय में ही 1927 ई. में साइमन कमीशन की स्थापना हुई। जो 3 फरवरी, 1928 ई. को साइनम कमीशन बम्बई पहुँचा और इसका काफी विरोध किया गया।

☛ अक्टूबर 1929 ई. के 'दीपावली घोषणा' में इरविन ने घोषणा की कि भारत को 'डोमिनियन स्टेट' का दर्जा दिया जाएगा।

☛ 23 मार्च, 1929 ई. को लाहौर जेल में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दी गई।

☛ 1930 ई. में शारदा एक्ट लागू हुआ, जिसमें लड़कियों के विवाह का न्यूनतम आयु 14 वर्ष एवं लड़कों की आयु 18 वर्ष कर दी गई।

☛ इसी के समय 5 मार्च, 1931 ई. को गाँधी-इरविन समझौता हुआ।

☛ दाण्डी मार्च (12 मार्च, 1930 ई.), सविनय अवज्ञा आंदोलन (6 अप्रैल, 1930 ई.), प्रथम तथा द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (1930 ई. एवं 1931 ई.) इसी के समय में हुआ।

➢ **लॉर्ड वेलिंगटन (1931–1936 ई.)**

☛ वेलिंगटन ने 1915 ई. में कांग्रेस के बंबई अधिवेशन में हिस्सा लिया था, उस समय वह गवर्नर था।

☛ तृतीय गोलमेज सम्मेलन हुआ जिसमें इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने 16 अगस्त, 1932 ई. को साम्प्रदायिक पंचाट (कम्यूनल एवार्ड) की घोषणा की थी।

☛ इसके समय भारत शासन अधिनियम 1935 ई. पारित हुआ जिसके तहत वर्मा को भारत से अलग किया गया।

☛ इसके शासन काल में 1936 ई. में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई।

➢ **लॉर्ड लिनलिथगो (1936–1943 ई.)**

☛ इसके समय में ही पहली बार प्रांतीय चुनाव 1937 ई., अगस्त प्रस्ताव 1940 ई., क्रिप्स प्रस्ताव 1942 ई., भारत छोड़ों आंदोलन 8 अगस्त, 1942 ई. तथा आजाद हिन्द फौज का गठन 21 अक्टूबर, 1943 ई. को किया गया।

☛ इसके समय में द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45 ई.) की शुरूआत हुई।

☛ इसने भारतीयों से पूछे बिना भारत को इस युद्ध में शामिल करने की घोषणा कर दी, जिसके कारण कांग्रेस मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दे दिया। जिसे मुस्लिम लीग ने **मुक्ति दिवस** के रूप में मनाया।

➢ **लॉर्ड वेवेल (1943–1947 ई.)**

☛ 25 जून 1945 ई. को शिमला सम्मेलन लार्ड वेवेल द्वारा आहुत किया गया, किन्तु मुहम्मद अली जिन्ना की हठधर्मिता के कारण यह सम्मेलन असफल रहा।

☛ इसी के शासन काल में 24 मार्च, 1946 ई. को कैबिनेट मिशन भारत आया था।

☛ 2 सितम्बर 1946 ई. को नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस द्वारा अंतरिम सरकार का गठन किया गया, जिसका अध्यक्ष वेवेल था।

☛ इंग्लैण्ड में लेबर पार्टी के प्रधानमंत्री लार्ड क्लीमेंट एटली द्वारा 20 फरवरी, 1947 ई. को हाउस ऑफ कॉमंस में उद्घोषणा की गई कि जून, 1948 ई. तक भारतीयों के हाथ में भारत की प्रभुसत्ता हस्तांतरित कर दी जायेगी।

➢ **लॉर्ड माउण्टबेटन (1947–1948 ई.)**

☛ यह ब्रिटिश भारत का अंतिम एवं स्वतंत्र भारत का प्रथम वायसराय था।

☛ इसके शासनकाल में ही भारत स्वतंत्रत हुआ एवं भारत और पाकिस्तान नामक दो स्वतंत्र राष्ट्रो की घोषणा की गई।

Remark :– इसने 3 जून, 1947 ई. को माउण्ट बेटन प्लान की घोषणा की, जिसमें भारत विभाजन की योजना अन्तर्निहित थी।

☛ भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम विधेयक को ब्रिटिश संसद में 4 जुलाई, 1947 को प्रस्तुत किया गया और 18 जुलाई, 1947 ई. को पारित किया गया।

➢ **सी राजगोपालाचारी (1948–1950 ई.)**

☛ यह स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल थे। 26 जनवरी 1950 ई. में जब संविधान पूर्ण रूप से लागू हुआ तब यह पद स्वत: ही समाप्त हो गया और राष्ट्रपति को पद सर्वोच्च हो गया क्योंकि 26 जनवरी 1950 ई. को भारत प्रजातंत्र के साथ-साथ गणराज्य राष्ट्र के रूप में भी स्थापित हुआ था।

गवर्नर जनरल एवं वायसराय

- बंगाल का गवर्नर – रार्बट क्लाईव
- बंगाल का अंतिम गर्वनर – वारेन हेस्टिंग्स
- बंगाल का पहला गर्वनर जनरल – वारेन हेस्टिंग्स
- बंगाल का अंतिम गर्वनर जनरल – विलियम बेंटिक
- भारत का पहला गर्वनर जनरल – विलियम बेंटिक
- भारत का अंतिम गर्वनर जनरल – लार्ड कैनिंग
- भारत का पहला वायसराय – लार्ड कैनिंग
- भारत का अंतिम वायसराय – माऊण्टवेटेन
- स्वतंत्र भारत का पहला गर्वनर जनरल – माऊण्टवेटेन
- स्वतंत्र भारत का अंतिम गर्वनर जनरल – राज गोपालाचारी

Note :– राज गोपालाचारी एक मात्र भारतीय गर्वनर जनरल थे।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 1885

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नामकरण दादाभाई नौरोजी ने किया था।
- अंग्रेजों ने इसकी स्थापना एक सुरक्षा वॉल्ब के रूप में किया था।

कांग्रेस का अधिवेशन

प्रथम अधिवेशन (1885)

- कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 1885 ई. में बम्बई में हुई। इस अधिवेशन की अध्यक्षता W.C. बनर्जी ने किया था।
- प्रारंभ में इसका नाम भारतीय राष्ट्रीय संघ था किन्तु दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कर दिया गया।

द्वितीय अधिवेशन (1886)

- कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन 1886 में कलकत्ता में हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादाभाई नौरोजी ने किया।

Note:– दादा भाई नौरोजी तीन बार कांग्रेस के अध्यक्ष की अध्यक्षता की। 1886 ई. के कलकत्ता अधिवेशन, 1893 ई. के लाहौर अधिवेशन तथा 1906 ई. के कलकत्ता अधिवेशन।

तृतीय अधिवेशन (1887)

- यह अधिवेशन 1887 ई. में मद्रास में हुई थी। इस अधिवेशन की अध्यक्षता बदरूद्दीन तैय्यब जी ने किया था। ये कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष थे।

चतुर्थ अधिवेशन (1888 ई.)

- यह अधिवेशन 1888 ई. में इलाहाबाद में हुआ। इसके अध्यक्षता जार्ज यूल ने की थी।
- ये पहले अंग्रेज थे जिन्होंने कांग्रेस की अध्यक्ष बने।

पाँचवां अधिवेशन (1889 ई.)

- यह अधिवेशन 1889 ई. में बम्बई में हुआ था। इस अधिवेशन की अध्यक्षता सर विलियम बेडरबर्न के द्वारा की गई।
- ये दो बार अध्यक्ष बनने वाला पहला अंग्रेज था।

छठा अधिवेशन (1890 ई.)

- यह अधिवेशन 1890 ई. में कलकत्ता में हुआ था।
- इस अधिवेशन की अध्यक्षता फिरोज शाह मेहता ने की थी।

सातवां अधिवेशन (1891 ई.)

- यह अधिवेशन 1891 ई. में नागपुर में हुआ था इस अधिवेशन के अध्यक्षता पी.आनन्द चार्लू ने की थी।
- इसी अधिवेशन में कांग्रेस के नाम में पहली बार राष्ट्रीय शब्द जोड़ा गया है।

1896 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता रहीमतुल्ला सयानी के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में पहली बार भारत का राष्ट्रीय गीत- 'वन्दे मातरम्' गाया गया। जो बंकिम चंद्र चटर्जी की पुस्तक आनंदमठ् से लिया गया है।
- इसी अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी ने धन निष्कासन का सिद्धांत पेश किया था।

1905 ई. का बनारस अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले ने किया था। इसी अधिवेशन में स्वदेशी आंदोलन पारित हुआ था।
- इस अधिवेशन में लाला लाजपत राय ने प्रथम बार सत्याग्रह को अपनाने का सुझाव दिया था।

1906 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता भी दादाभाई नौरोजी ने किया था। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने भारतीय जनता का लक्ष्य के रूप में 'स्वराज' को अपनाया।

1907 ई. का सूरत अधिवेशन

- इस अधिवेशन के दौरान कांग्रेस का विभाजन दो वर्गों में हो गया। एक गरम दल तथा दूसरा नरम दल।
- इस अधिवेशन में विवाद इसिलिए हुआ कि गरम दल वाले लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। जबकि नरम दल वाले रासबिहारी बोस को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अंत में रासबिहारी बोस ने इस अधिवेशन की अध्यक्षता की।
- 1907 ई. के विभाजन का मुख्य कारण था कि अंग्रेजी सरकार के साथ नरमपंथियों की वार्ता करने की क्षमता के बारे में चरमपंथियों में विश्वास का अभाव होना।

1908 ई. का मद्रास अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता रासबिहारी बोस के द्वारा किया गया। इसी अधिवेशन में कांग्रेस के लिए संविधान का निर्माण किया गया।

1911 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित विशन नारायण धर के द्वारा किया गया था।
- इसी अधिवेशन में पहली बार राष्ट्रगान 'जन-गन-मन' गाया गया। जिसकी रचयिता रविन्द्र नाथ टैगोर हैं।

1912 ई. का बांकीपुर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता आर. एन. मुधोलकर मालक द्वारा बांकीपुर (पटना) में किया गया।

1916 ई. का लखनऊ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में गरम दल, नरम दल तथा मुस्लिम लीग तीनों एक हो गए।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता बालगंगाधर तिलक ने करवाए थे।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग समझौते के मुख्य शिल्पीकार बालगंगाधर तिलक एवं मोहम्मद अली जिन्ना को कहा जाता है।
- कांग्रेस ने प्रथम बार मुस्लिम समुदाय के लिए पृथक निर्वाचन प्रणाली को स्वीकार किया।

- इस अधिवेशन में तिलक ने– ''स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मैं इसे लेकर रहूँगा'' का नारा दिया था।
- दक्षिण अफ्रिका से वापस लौटने के बाद महात्मा गाँधी सर्वप्रथम इसी अधिवेशन में पहली बार भाग लिये थे।

➢ 1917 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीमति ऐनी बेसेंट के द्वारा की गई। यह कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष थी।
- सर्वप्रथम तिरंगें झंडे को कांग्रेस ने इसी अधिवेशन में अपनाया था।

➢ 1918 ई. का दिल्ली अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता मदन मोहन मालवीय के द्वारा की गई।
- इस अधिवेशन में नरम पंथिओं ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया था।

➢ 1918 ई. का बम्बई विशेष अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता हसन इमाम के द्वारा की गई। इस अधिवेशन में कांग्रेस का द्वितीय विभाजन हो गया।
- इस अधिवेशन की विवादस्पद मॉन्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार योजना के संदर्भ में बुलाया गया था।
- यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला विशेष अधिवेशन था।

➢ 1920 ई. का नागपुर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षत चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य ने किया था। इस अधिवेशन में काँग्रेस का संविधान पारित हुआ।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पेश किया तथा पहली बार देशी रियासतों के प्रति नीति घोषित की गई।

➢ 1920 ई. का कलकत्ता विशेष अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षत लाला लाजपत राय ने किया था।
- इस अधिवेशन में असहयोग का प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

➢ 1922 ई. का गया अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता C.R. दास के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन में कांग्रेस का तीसरा सांकेतिक विभाजन हुआ। इसी अधिवेशन में स्वराज पार्टी की बात हुई।

➢ 1923 ई. का काकीनाडा अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता मोलाना मोहम्मद अली जोहर के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन के तहत अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना की गई।

➢ 1923 ई. का दिल्ली विशेष अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया। जो सबसे युवा अध्यक्ष थे।
- यह अधिवेशन परिवर्तनवादियों और स्वराजवादियों में बढ़ती हुई कटुता को दूर करने के लिए बुलाया गया था।

➢ 1924 ई. का बेलगाम अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता महात्मा गाँधी के द्वारा किया गया था।
- महात्मा गाँधी कांग्रेस के इसी एकमात्र अधिवेशन के अध्यक्षता किए थे।

➢ 1925 ई. का कानपुर अधिवेशन

- इसी अधिवेशन की अध्यक्षता सरोजिनी नायडू के द्वारा किया गया। ये पहली भारतीय महिला थी जो कांग्रेस का अध्यक्ष बनी।
- इस अधिवेशन में हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में प्रयोग किया गया था।
- इस अधिवेशन में ही विजयी विश्व तिरंगा प्यारा का गायन किया गया।

Remark :- सरोजिनी नायडू स्वतंत्र भारत के पहली महिला राज्यपाल (उत्तर प्रदेश) बनी।

➢ 1926 ई. का गुवाहाटी अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्रीनिवास अयंगर के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन के तहत सभी सदस्यों को खादी वस्त्र पहनना अनिवार्य कर दिया गया।

➢ 1927 ई. का मद्रास अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता डॉ. मुख्तार अहमद अंसारी के द्वारा किया गया। इस अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता की मांग की गई लेकिन गांधी जी के विरोध पर वापस ले लिया गया।
- इसी अधिवेशन में साइमन कमिशन के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया गया।

➢ 1929 ई. का लाहौर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया। उन्होंने इसी अधिवेशन में सर्वप्रथम पूर्ण स्वराज की घोषणा की।
- इसी सम्मेलन में रावी नदी के तट पर नेहरू ने सर्वप्रथम तिरंगा फहराया।
- इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाएगा।
- इस प्रकार प्रथम स्वतंत्रता दिवस 26 जनवरी 1930 ई. को मनाया गया।

➢ 1931 ई. का कराची अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता सरदार पटेल के द्वारा किया गया।
- इसी अधिवेशन में कांग्रेस के मंच से मूल अधिकार की मांग किया गया। जबकि मूल अधिकार की संकल्पना पंडित जवाहरलाल नहेरू ने प्रस्तावित किया था।
- इस अधिवेशन में गांधी इरवीन समझौते का अनुमोदन किया गया।
- इसी अधिवेशन के विरोध करने पर गांधीजी ने कहा था गांधी मर सकता है लेकिन गांधीवादी नहीं

➢ 1933 ई. का कलकत्ता अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता नलनी सेन गुप्ता के द्वारा किया गया।

- यह आजादी से पहले अध्यक्ष बनने वाली कांग्रेस की तीसरी महिला तथा भारतीय महिला के संदर्भ में यह दूसरी महिला थी।

➢ 1934 ई. का बम्बई अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेश में प्रांतीय कांग्रेस समितियों को भंग कर दिया गया तथा कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना की गई।

➢ 1936 ई. का लखनऊ अधिवेशन

- इस अधिवेशन को अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया।
- यह इस अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू के समाजवाद के विचार को प्रश्रय दिया गया अर्थात् कांग्रेस का लक्ष्य समाजवाद निर्धारित किया गया।

➢ 1937 ई. का फैजपुर अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू के द्वारा किया गया।
- यह अधिवेशन किसी गांव (फैजपुर, महाराष्ट्र) में होने वाला पहला अधिवेशन था। इसी में ग्रामसभा का गठन किया गया।

➢ 1938 ई. का हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता सुभाष चन्द्र बोस के द्वारा किया गया।
- इस अधिवेशन में राष्ट्रीय नियोजन समिति की स्थापना हुई। इस समिति के प्रथम अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू बनें।

➢ 1939 ई. का त्रिपुरी (मध्यप्रदेश) अधिवेशन

- इस अधिवेशन में पहली बार अध्यक्ष पद को लेकर महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस में विवाद हुआ क्योंकि महात्मा गांधी पट्टाभि सीतारमैया को अध्यक्ष बनाना चाहते थे।
- अंतत: पहली बार इस अधिवेशन में अध्यक्ष पद को लेकर चुनाव हुआ और सुभाष चन्द्र बोस इस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए लेकिन सुभाष चन्द्र बोस ने इस पद का त्याग दिए।
- इसके बाद कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद बने।

➢ 1940 ई. का रामगढ़ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया। जो सबसे लंबे समय (1940-45 ई.) तक अध्यक्ष के पद पर बने रहे।
- बिहार में यह तीसरा सम्मेलन जबकि वर्तमान झारखंड का पहला सम्मेलन था।

➢ 1942 ई. का बम्बई विशेष अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता अबुल कलाम आजाद के द्वारा किया गया।
- इसी अधिवेशन में भारत छोड़ो आन्दोलन के प्रस्ताव का अनुमोदन किया गया।

➢ 1946 ई. का मेरठ अधिवेशन

- इस अधिवेशन की अध्यक्षता जे.बी. कृपलानी के द्वारा किया गया। इनके काल में ही अंग्रेजों द्वारा सत्ता हस्तांतरित किया।

Note :– आजादी के समय कांग्रेस अध्यक्ष जे.बी. कृपलानी थे।

- स्वतंत्रता के बाद 1969 ई. में कांग्रेस में विभाजन हो गया।
- कामराज के नेतृत्व में कांग्रेस O = Old तथा इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस R = Requasession / Requirement) भागों में विभक्त हो गई।
- चुनाव में कांग्रेस R की जीत हो गयी तथा कांग्रेस O अस्तित्वविहीन हो गई।

कांग्रेस पर की गई टिप्पणीयाँ

1. कांग्रेस मुट्ठी भर लोगों का संगठन है **–लॉर्ड डफरिन**
2. कांग्रेस अपने पतन की ओर लड़खड़ा रही है, मेरी इच्छा है कि उसके पतन में मदद करूँ **–लॉर्ड कर्जन**
3. कांग्रेस में लोग पद के भूखे है **–बंकिम चंद्र चटर्जी**
4. बरसाती मेढ़क की तरह टर्र-टर्र चिल्लाने से स्वतंत्रता नहीं मिलेगी। **–बाल गंगाधर तिलक**
5. कांग्रेस शिक्षित लोगों का एक मेला है। **–लाला लाजपत राय**
6. कांग्रेस अधिवेशन तीन दिन का एक तमाशा है। **–अश्विनी**
7. कांग्रेस में लोग केवल याचना (विनती) करते हैं। **–विपिन चंद्र पाल**
8. कांग्रेस की आवाज पूरी जनता की आवाज नहीं है। **–फिरोज शाह मेहता**
9. मैं एक बुझे बालू से कांग्रेस से भी बड़ा संगठन बना सकता हूँ। **–महात्मा गाँधी**
10. कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही है **–लॉर्ड कर्जन**
11. भारत में रहते हुए मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद करूँ **–लॉर्ड कर्जन**
12. कांग्रेस सूक्ष्मदर्शी अल्संख्यकों की संस्था है **–डफरिन**
13. कांग्रेस भीख माँगने वाली संस्था है **–अरविंदो घोष**
14. काँग्रेस को अब समाप्त कर देना चाहिए। **–गाँधी**
15. कांग्रेस सम्मेलन शिक्षित भारतीयों के राष्ट्रीय मेले है **–लाला लाजपत राय**
16. कांग्रेस बुलबुले के साथ खेल रहा है **–विपिन चन्द्रपाल**

कांग्रेस की स्थापना से पूर्व भारत बने संगठन

1. लैंड होल्डर्स सोसाइटी (1838 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में द्वारकानाथ टैगोर के द्वारा किया गया।
- इसके भारतीय सचिव प्रसन्न कुमार ठाकुर थे। जबकि अंग्रेज सचिव विलियम काब्री थे।
- यह पहली राजनीतिक संस्था/संगठन थी, जिसने संगठित राजनीतिक प्रयासों का शुभारंभ किया तथा शिकायतों को दूर करने के लिए संवैधानिक उपचारों का प्रयोग किया।

2. बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी (1843 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में जार्ज थॉम्पसन के द्वारा किया गया।
- इसके सचिव प्यारी चन्द्र मित्र थे।
- यह भारतीय तथा गैर सरकारी अंग्रेजों का सम्मिलित संगठन था।

3. ब्रिटिश इंडिया एशोसिएशन (1851 ई.)

- इसकी स्थापना कोलकत्ता में राधाकान्त देव के द्वारा किया गया।
- इस संस्था का निर्माण लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी एवं बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी को मिलाकर किया गया।
- ब्रिटिश इण्डिया, हिन्दू पैट्रियाट इस संस्था का मुख्य पत्र था।

4. बॉम्बे एशोसिएसन (1852 ई.)

- इसकी स्थापना बम्बई में दादाभाई नौरोजी ने किया।
- दादाभाई नौरोजी ने 'ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन' के कार्यों से प्रभावित होकर इसकी स्थापना की थी।

5. ईस्ट इंडिया एशोसिएसन (1866 ई.)

- इसकी स्थापना लंदन में दादा भाई नौरोजी ने किया। इस संगठन के द्वारा भारतीय समस्याओं को इंग्लैण्ड के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया।
- 1869 ई. में इसकी एक शाखा बम्बई में स्थापित की गई। जिसका अध्यक्ष जमशेदजी, जीजीभाई और सचिव फिरोजशाह मेहता को बनाया गया।

6. पूना सार्वजनिक सभा (1870 ई.)

- इसकी स्थापना महादेव गोविन्द रानाडे एवं गणेश बासुदेव जोशी द्वारा पूना में किया गया।
- यह संस्था मुख्यत: जमींदारों तथा व्यापारियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी क्योंकि इसके अधिकांश सदस्य उच्च जाति के थे।
- इस संस्था की एक त्रैयासिक पत्रिका 'क्वार्टर्ली जर्नल' थी।

7. इंडियन लीग (1875 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में शिशिर कुमार घोष ने किया।
- इस संस्था का विलय बाद में इण्डियन एशोसिएसन में कर दिया गया था।

8. इंडियन नेशनल एशोसिएसन (1876 ई.)

- इसकी स्थापना कलकत्ता में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा आनंद मोहन बोस ने किया।
- इस संस्था के सचिव आनन्द मोहन बोस बनाये गये जबकि अध्यक्ष मनमोहन घोष चुने गए।

9. मद्रास महाजनसभा (1884 ई.)

- सुब्रह्मण्यम अय्यर ने इस महाजनसभा की स्थापना मद्रास में किया।
- इस संस्था के अध्यक्ष वी. राघवाचारी तथा सचिव आनन्द चार्लू चुने गए।

10. बम्बई प्रेसिडेन्सी (1885 ई.)

- महाराष्ट्र के क्षेत्र में खासकर बम्बई में इस संगठन की स्थापना किया गया।
- इसके संस्थापक फिरोज शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी और के. टी. तैलंग थे।
- इस संस्था का मुख्य उद्देश्य लोगों के मध्य राजनीतिक विचारों को फैलाना था।
- कांग्रेस से ठीक पहले इसकी स्थापना की गई। जब कांग्रेस का जन्म हुआ इस प्रकार के क्षेत्रीय संगठन का अस्तित्व समाप्त हो गया।

भूमि सुधार कानून

- भूमि सुधार कानून को अंग्रेजों ने स्वयं का लाभ को ध्यान में रखते हुए कानून बनाए थे।

➢ **स्थायी बंदोबस्त**

- इसे लॉर्ड कार्नवालिस ने 1793 ई. में लाया।
- यह बिहार बंगाल, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश तथा कर्नाटक में लागू था।
- यह भारत के 19% क्षेत्र पर लागू था।
- इसमें जमीन का मालिकाना हक जमींदार को दे दिया गया।
- अंग्रेज जितना कर को निर्धारित करते थे, उस कर में से 10/11 भाग (89%) अंग्रेज ले लेते थे जबकि 1/11 भाग (11%) जमींदार रखते थे।
- स्थायी बंदोबस्त के निर्धारण करने में कार्नवालिस का प्रमुख परामर्शदाता सर जॉन शोर तथा चार्ल्स जेम्स ग्राँट थे।
- स्थायी बंदोबस्त को **सूर्यास्त कानून** कहते हैं। क्योंकि इस कानून के द्वारा यह घोषित किया गया कि यदि पूर्व निधार्रित तिथि के सूर्यास्त तक सरकार को लगान नहीं दिया गया तो जमींदारों की जमींदारी निलाम हो जायेगी अर्थात् जमींदारों को सूर्यास्त से पहले हिसाब चुका देना होता था।

➢ **रैयतवाड़ी**

- रैयतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम कर्नल रीड ने 1792 ई. में मद्रास के बारहमहल जिले में लागू किया गया था।
- इसे टॉमस मुनरो ने 1820 में सम्पूर्ण मद्रास प्रेसिडेंसी में लागू किया।
- यह व्यवस्था मद्रास, बम्बई, पूर्वी बंगाल, असम और कुर्ग में लागू की गई थी।
- यह व्यवस्था बम्बई प्रेसिडेंसी में 1825 ई. में लागू की गई थी।
- यह भारत के कूल क्षेत्र का 51% क्षेत्र पर लागू था।
- इस व्यवस्था में जमीन का मालिकाना हक किसानों का होता था।
- रैयतवाड़ी व्यवस्था ने जनता और सरकार के मध्य सीधा संम्पर्क स्थापित किया।
- किसानों को अपनी उपज का 33% से 55% तक कर के रूप में देना पड़ता था।

➢ **महालवाड़ी व्यवस्था**

- महालवाड़ी व्यवस्था का प्रस्ताव सर्वप्रथम 1819 ई. में हॉल्ट मैकेंजी ने दिया था।
- इस व्यवस्था को 1830 ई. के बाद लॉर्ड विलिमय बेंटिक के शासन काल में प्रभावी रूप से लागू किया गया।
- प्रथम बार खेतों के मानचित्रों प्रयोग इसी व्यवस्था के तहत मार्टिन बर्ड की देख-रेख में किया गया।
- मार्टिन बर्ड को उत्तरी भारत में भू-व्यवस्था का जनक कहा गया है।
- यह व्यवस्था उत्तर भारत (आगरा, अवध), मध्य प्रांत (मध्य प्रदेश) तथा पंजाब के कुछ भागो में लागू किया गया।
- यह भारत के 30% क्षेत्र पर लागू था।
- इसमें जमीन का मालिकाना हक गाँव का होता था।
- गाँव का मुखिया कूल उपज का 60% कर देता था।

Remark:– सबसे कठोर कानून स्थायी बंदोवस्त में था, सर्वाधिक क्षेत्रों पर रेवाड़ी लागू थी। जबकि जनसंख्या की सर्वाधिक मात्रा महालवाड़ी में था।

Remark :– लॉर्ड हेस्टिंग्स ने बंगाल के क्षेत्र में इजारेदारी व्यवस्था लागू की जिसमें अधिक बोली लगाने वाले को जमींदारी दी जाती थी।

मजदूर संघ

- 1870 ई. में बंगाल के शशिपाद बनर्जी ने मजदूरों के लिय एक क्लब की स्थापना की और भारत श्रमजीवी नामक पत्रिका का प्रकाशन किया।
- भारत में गठित प्रथम श्रमिक संघ बंबई मिल हैंड्स एसोसिएशन था, जिनकी स्थापना 1890 ई. में एन.एम. लोखंडे ने की थी।
- 1908 ई. में क्रांतिकारी नेता बाल गंगाधर तिलक को 6 वर्ष की सजा होने पर बंबई के कपड़ा मजदूरों ने लगभग एक सप्ताह की हड़ताल कर दी, जो मजदूरों की पहली राजनीतिक हड़ताल मानी जाती है।
- भारत का पहला आधुनिक मजदूर संगठन मद्रास मजदूर संघ था। जिसकी स्थापना 1918 ई. में बी.पी. वाडिया द्वारा की गई थी।
- 1920 ई. में लाला लाजपत राय तथा एम एन. जोशी ने All India Trade Union Congress (AITUC) की स्थापना की।
- AITUC (अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस) का प्रथम सम्मेलन 1920 ई. में बंबई में आयोजित किया गया, इसके प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे।
- AITUC में विभाजन के बाद एन.एम. जोशी के नेतृत्व में 1929 ई. में भारतीय ट्रेड यूनियन फेडरेशन की स्थापना हुई तथा वी.वी. गिरि इसके प्रथम अध्यक्ष बने।
- गांधी जी ने अहमदाबाद मिल मजदूरों की मांगों के लिए 1918 ई. में अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन की स्थापना की थी।
- हिन्दुस्तान मजदूर सभा संगठन की स्थापना 1938 ई. में सरदार पटेल एवं राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा की गई।
- मई 1947 ई. में AITUC से अलग होकर सरदार बल्लभ भाई पटेल ने भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना की गई।

भारतीय उद्योग (Indian Industry)

- अंग्रेजी शासन के दौरान भारतीय उद्योग का विकास नहीं हो सका क्योंकि अंग्रेजों ने भारत में पूंजी नहीं लगाई तथा भारतीय माल इंग्लैण्ड में जाते थे उस पर अंग्रेजों ने नियत कर लगा दिया। जिससे की वस्तुएं इंग्लैण्ड में महंगी हो गई।
- लखनऊ की प्रिंट वाले वस्त्र तथा मलमल के कपड़ों की मांग इंग्लैंड में अधिक थी। भारत से इंग्लैंड को जाने वाली वस्तुओं पर भारी कर लगाया जाता था, अत: भारतीय वस्तुएँ महँगी हो गई।
- इसके विपरित इंग्लैंड से आने वाली वस्तुओं पर कोई कर नहीं लगाया जाता था। जिस कारण इंग्लैण्ड के उद्योगों ने भारतीय उद्योग को ध्वस्त कर दिया।
- भारतीय उद्योग में सुती वस्त्र पहला उद्योग था जिसमें भारतीयों द्वारा पूंजी लगाई गई थी।
- भारत में आधुनिक स्तर की प्रथम सूती कपड़ा मिल 1818 ई. में कोलकाता के निकट फोर्ट ग्लोस्टर में लगाई गई थी जो असफल रही।
- भारत की प्रथम सफल सूती कपड़ा मिल बम्बई स्पिनिंग एण्ड विविंग कंपनी थी, जो 1853 ई. में मुम्बई में कवास जी.एन. डावर द्वारा स्थापित की गई थी।
- देश का प्रथम जूट कारखाना जॉर्ज ऑकलैण्ड द्वारा 1855 ई. में कोलकाता के निकट रिशंरा नामक सथान पर लगाया गया था।
- भारत में चीनी उद्योग सबसे पहले बिहार के बेतिया में 1840 ई. में लगाया गया था, जो 1931 ई. से कार्य करना शुरू किया।
- भारत में कागज का प्रथम आधुनिक कारखाना 1832 ई. में पश्चिम बंगाल के श्रीरामपुर में स्थापित किया गया था, जो असफल रहा।
- भारत में कागज उद्योग का प्रथम सफल कारखाना 1867 ई. में कोलकाता के बालीगंज में स्थापित किया गया।
- कालमार्क्स ने भारतीय के विषय में कहा था कि ''अंग्रेजों ने सूती वस्त्र के घर में सूती वस्त्र का अंबार लगा दिया''।

प्रमुख नारा तथा वक्तव्य

- सारे जहाँ से अच्छा **–मो. इकबाल**
- वन्दे मातरम् **–बंकिम चंद्र चटर्जी**
- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा **–श्यामलाल गुप्ता**
- वेदों की ओर लौटो **–दयानंद सरस्वती**

- जय जगत **–विनोवा भावे**
- संपूर्ण क्रांति **–जयप्रकाश नारायण**
- मेरे शरीर पर पडी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत का कील साबित होगा। **–लाला लाजपत राय**
- स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार **–बालगंगाधर तिलक**
- सरफरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। **–रामप्रसाद बिस्मिल**
- इन्कलाब जिन्दाबाद **–भगत सिंह**
- दिल्ली चलो **–सुभाषचन्द्र बोस**
- तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा **–सुभाषचन्द्र बोस**
- जय हिन्द **–सुभाषचन्द्र बोस**
- हे राम **–महात्मा गाँधी**
- करो या मरो **–महात्मा गाँधी**
- भारत छोड़ो **–महात्मा गाँधी**
- हम घुटने टेक कर रोटी मागे किंतु उत्तर में हमें पत्थर मिला। **–महात्मा गाँधी**
- अराम हराम है। **–जवाहरलाल नेहरू**
- पूर्ण स्वराज **–जवाहरलाल नेहरू**
- Who Lives In India Die **–जवाहर लाल नेहरू**
- समूचा भारत एक विशाल वंदी गृह है। **–चितरंजन दास**
- जन-गण-मन अधिनायक जय हे **–रवीन्द्रनाथ टैगोर**

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

28. दिल्ली दरबार (Delhi Darabar)

दिल्ली दरबार (1876 ई.)

- 1876 ई. में शाही पद अधिनियम आया जिसमें महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया और 1 जनवरी, 1877 ई. में दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया।
- इसे लार्ड लिटन ने आयोजित किया।
- सार्वजनिक तौर पर 1877 ई. में महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित किया गया। और साथ ही महारानी को **'कैसर-ए-हिन्द'** की उपाधि दिया गया।
- 1876-78 ई. में दक्षिण भारत में अकाल आया था, और इस दरबार में बेशुमार धन खर्च किया गया। इस कारण इसका विरोध होने लगा। इसमें कोई भी भारतीय जनता के हित में निर्णय नहीं लिया गया।
- महारानी विक्टोरिया का संदेश के अंश-कलकत्ता के विक्टोरिया मेमोरियल में दर्ज है। इसमें महारानी ने कही कि यह अवसर हमारे प्रजा और हमारे बीच में मधुर संबंध स्थापित करेगा।

दिल्ली दरबार (1903 ई.)

- इसे लार्ड कर्जन ने आयोजित किया।
- सम्राट एडवर्ड सप्तम् और महारानी एलेक्जेंड्रा को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। सम्राट स्वयं इस दरबार में न आकर अपने भाई **ड्यूक ऑफ कनॉट** को भेज दिया।
- यह सर्वाधिक **शानो शौकत** वाला दरबार था। सबसे खर्चीला दरबार यही था। यह दरबार केवल शक्ति प्रदर्शन का था। इस दरबार को एक सप्ताह तक आयोजन किया गया।
- इसमें अस्थाई नगर बसाया गया, अस्थाई रेल, डाक, तार, पानी, बिजली, अस्तबल आदि।
- इसमें स्वयं लार्ड कर्जन और लेडी कर्जन ने नृत्य भी किया। इस दरबार में भी भारतीय जनता के हित में कोई निर्णय नहीं लिया गया।

दिल्ली दरबार (1911 ई.)

- इसे लार्ड हार्डिंग-II ने आयोजित किया।
- जार्ज पंचम और महारानी विलियम मेरी को भारत का सम्राट और साम्राज्ञी घोषित किया गया। इसमें सम्राट स्वयं उपस्थित थे।
- सम्राट को 8 मेहराब वाला एक मुकुट पहनाया गया जिसमें सैकड़ों हीरे जवाहरात जड़ित था।
- पटियाला की रानी की तरफ से विलियम मेरी को हार उपहार स्वरूप दिया गया।
- दिल्ली के कोरोनेशन पार्क नामक जगह में दिल्ली दरबार लगाया जाता था।
- इस दरबार में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय सम्राट के द्वारा लिया गया। **जैसे–**

निर्णय - 1 : बंगाल का विभाजन रद्द।

- 16 अक्टूबर, 1905 ई. में लार्ड कर्जन के द्वारा बंगाल का विभाजन किया गया था। जिसे 1911 ई. में विभाजन रद्द कर दिया गया।
- बंगाल का पुनर्गठन लॉर्ड हार्डिंग के समय किया गया।
  - बंगाल
  - उड़ीसा, बिहार
  - असम का कमिशनरी क्षेत्र

निर्णय - 2 : राजधानी को 1911 ई. में दिल्ली स्थानान्तरित करने का निर्णय।

- कलकत्ता से दिल्ली राजधानी
  - निर्णय – जॉर्जपंचम – 1911
  - 15 दिसम्बर 1911 को नई दिल्ली की नीव जॉर्जपंचम के द्वारा रखी गयी
  - 1912 में राजधानी दिल्ली स्थानन्तरित

नई दिल्ली

- दिल्ली के दक्षिण में 1911 ई. में नई दिल्ली की नीव पड़ी।
- नई दिल्ली की रूपरेख तैयार करने का कार्य ब्रिटेन के वास्तु विद एडबिन लुटियन ने हरवर्ट बेकर के साथ मिलकर किया। और 1927 ई. में नई दिल्ली नाम दिया गया।
- 1931 ई. में नई दिल्ली का उद्घाटन वायसराय लॉर्ड इरविन के द्वारा किया गया।

'जन गण मन' विवाद

- सर्वप्रथम 1911 ई. में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में जन-गण-मन गाया गया।
- इसी अधिवेशन में जार्ज पंचम के स्वागत का प्रस्ताव भी पारित हुआ था और बच्चों के द्वारा जार्ज पंचम के सम्मान में एक गीत 'बादशाह हमारा' गाया गया। इस गीत के रचयिता कवि रामभूज चौधरी थे।
- बंगाल के अंग्रेजी अखबार में यह छपा था कि कलकत्ता अधिवेशन में जार्जपंचम का स्वागत प्रस्ताव पारित हुआ और जन-गण-मन गाया गया। इस कारण विवाद हो गया।

29. नेहरू काल (Nehru Period)

- भारत 15 अगस्त, 1947 ई. को आजाद हुआ और पाकिस्तान का 14 अगस्त, 1947 ई. को निर्माण हुआ।
- भारत और पाकिस्तान के विभाजन में अंग्रेजों ने सबसे बड़ी गलती यह कर दी कि उन्होंने कहा जिन्हें पाकिस्तान में रहना है वो पाकिस्तान चले जाए और जिन्हें भारत में रहना है वो भारत में रह जाए।
- इसके अलावा उसने यह भी कहा था कि जिसको स्वतंत्र रहना है वह स्वतंत्र रह जाए। इसमें कश्मीर के राजा हरि सिंह की दूरदर्शिता नहीं थी।
- हरि सिंह के प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला थे। शेख अब्दुल्ला के कहने पर हरि सिंह कश्मीर को स्वतंत्र रखने के लिए तैयार हो गये। इसी बीच पाकिस्तान ने कश्मीर पर हमला कर दिया और वहाँ कबिलाई के भेष में आतंकवादियों को कश्मीर में भेज दिया। तब हरि सिंह नेहरू के पास मदद के लिए आये।
- सरदार पटेल ने हरि सिंह से 26 अक्टूबर, 1947 ई. को विलय पत्र पर हस्ताक्षर कराए और सेना की जिम्मेदारी विग्रेडियर उस्मानी को देकर भेज दी गई।
- यह युद्ध 1948 ई. तक चली थी। जब तक भारतीय सेना वहाँ पहुँची तब तक पाकिस्तान कश्मीर का 30% हिस्सा पर कब्जा कर चुका था और वहीं से भारत पाक सीमा का निर्धारण हो गया।
- जवाहर लाल नेहरू ने इस मुद्दे को UNO में ले जाकर बहुत बड़ी गलती कर दिए। आज तक यह मुद्दा UNO में लटकी हुई है।
- शेख अब्दुल्ला के कहने पर हरि सिंह ने भारत से काश्मीर के लिए अलग संविधान बनाने की मांग की उसमें बहुत सारी शर्तें रखी–
  - इसमें जम्मु-कश्मीर की सीमाएं भारत की सीमाएं हैं।
  - जम्मु-कश्मीर में भारत का कोई संविधान लागू नहीं होगा।
  - यहाँ राष्ट्रपति का शासन तथा राष्ट्रीय आपात लागू नहीं होगा।
  - दूसरे राज्य के लोग यहाँ आकर हमेशा के लिए नहीं बस सकते और न ही यहां जमीन खरीद सकते।
  - इस संविधान के एक शर्त यह भी था कि पाकिस्तान की कोई लड़की यदि जम्मू-कश्मीर में आकर शादी करती है, तो उसे जम्मू-कश्मीर की नागरिकता दे दी जाएगी लेकिन भारत की लड़की यदि जम्मू-कश्मीर में शादी करती है तो उसे जम्मू-कश्मीर की नागरिकता नहीं दी जाएगी।
- हरि सिंह की मृत्यु के बाद **जम्मू-कश्मीर की बागडोर शेख अब्दुल्लाह** ने संभाली। शेख अब्दुल्लाह के बाद उसके पुत्र फारूख अब्दुल्लाह ने कश्मीर की बागडोर संभाली।
- फारूख अब्दुल्लाह के बाद उसके पुत्र उमर अब्दुल्लाह ने कश्मीर की बागडोर संभाला
- वर्तमान में जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली धारा 370 को खत्म कर दिया गया। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर को जम्मू तथा लद्दाख नामक को दो केंद्र शासित प्रदेश बना दिया गया।

भारत-चीन समझौता

- भारत को अंदेशा इस बात का था कि अगर चीन से युद्ध न हो तो सब कुछ सही हो जाएगा।
- जवाहरलाल नेहरू उस समय भारत के प्रधानमंत्री थे उन्होंने सोचा कि कैसे भी करके चीन के साथ युद्ध को टाला जाय।
- इन्होंने चीन के साथ एक समझौता किया जिसे पंचशील समझौता कहते हैं। यह **पंचशील समझौता 1954 ई.** में हुआ था। यह समझौता 8 वर्ष तक होनी थी, लेकिन चीन ने 6 साल तक का ही समझौता किया।
- यह समझौता जवाहरलाल नेहरू तथा चीन के राष्ट्रपति चाऊ मेन लाई के साथ हुआ था।

➢ **पंचशील समझौता के पाँच शर्तें–**

1. एक दूसरे की अखण्डता का ध्यान रखना है।
2. एक दुसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप नहीं करना है।
3. सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी की एक दुसरे पर युद्ध नहीं करना है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर एक-दुसरे का सहायता करना है।
5. एक दुसरे को समान लाभ पहुँचाना है।

- इसी समझौता में **हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा** दिया गया था। इस समझौता का मुख्य उद्देश्य यही था कि किसी भी तरह युद्ध को रोका जाए और आपसी समन्व्य बनाया जाए।
- उस समय हमारे भारतीय वैज्ञानिक **होमी जहांगीर भाभा** थे। इन्हीं के पास भारत का परमाणु विभाग था। इन्होंने कहा था कि हम 20 साल में परमाणु बम बनाने में सक्षम हो जाएंगे।
- इसी बीच में नहेरू से एक बड़ी गलती हो गई-जब चीन तिब्बत पर कब्जा किया था तो नेहरू ने उसकी आंतरिक मामला कहा लेकिन यही बात जब जम्मु-कश्मीर पर आयी तो

चीन ने यह कह कर टाल दिया कि हम इसका आंतरिक रूप से अध्ययन करेंगे। उसके बाद अपना विचार रखेंगे। इसी बीच में **चीन ने 1959 ई. में तिब्बत पर** कब्जा कर लिया और भारत कुछ नहीं कर सका।

- **तिब्बत के धर्म गुरु दलाई लामा** भारत के हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में शरण लिए।
- 1960 ई. में चीन ने **Five Fingure Rule** लागू कर दिया। Five Fingure Rule के तहत चीन तिब्बत को हथेली मानता है और नेपाल, भूटान, अरूणाचल प्रदेश, सिक्किम एवं लद्दाख को उसकी ऊंगली मानता है।
- चीन बार-बार भारत में घुसपैठ करता था। चीन का पूरा प्लान 1962 ई. का था और इस बारे में नेहरू को थोड़ा-सा भी भनक नहीं लगा।
- चीन अपना घुसपैठ जारी रखा। चीन अपने आर्मी को तिब्बत में भेजने लगा और वहाँ से अरुणाचल प्रदेश और जम्मू-काश्मीर में।
- जब नेहरू नेपाल गये और काठमांडु एयरपोर्ट पर उतरे तो मिडिया ने उनसे पूछा कि आपकी पंचशील समझौता के बावजूद क्यों चीन ने भारत के क्षेत्र में प्रवेश किया, तो नेहरू ने कहा कि ऐसा कोई घटना नहीं हुई है। वैसे भी मैंने भारतीय सेना को आदेश दिया है कि कोई भी अगर भारत में घुसे तो उसे बाहर कर दिया जाए।
- चीन ने कहा कि यह युद्ध की धमकी है और अपनी सेना की ताकत झोंक दिया। भारतीय सेना बहुत बहादुरी से लड़ी।
- चीन ने अरुणाचल प्रदेश तथा कश्मीर के क्षेत्र पर कब्जा कर लिया बाद में अरुणाचल प्रदेश का क्षेत्र चीन ने वापस कर दिया, लेकिन जम्मू-कश्मीर का 10% क्षेत्र चीन ने वापस नहीं किया और चीन उस क्षेत्र को **अक्साई चीन** कहता है।
- चीन अरुणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार बताता है और उसे दक्षिण तिब्बत कहता है।
- ताइवान एक स्वतंत्र देश है किंतु चीन इसे अपना राज्य बताता है। One China Policy के तहत जो देश चीन से संबंध रखना चाहते हैं उन्हें One China Policy स्वीकार करना पड़ता है।
- 1997 ई. में हांगकांग जो ब्रिटेन के अधीन था चीन ने उस पर अधिकार कर लिया।
- 2000 ई. में मकाऊ जो पुर्तगाल के अधीन था चीन ने उस पर अधिकार कर लिया।
- 2017 ई. में भूटान के चुम्बी घाटी में स्थित डोकलाम पर चीन अपना अधिकार बताने लगा किंतु भारत के विरोध के कारण उसे पीछे हटना पड़ा, क्योंकि भूटान की रक्षा की जिम्मेदारी भारत की है।

भारत पाक युद्ध

- पाकिस्तान ने 1948 ई. में कश्मीर के 30% क्षेत्र पर कब्जा कर लिया, जिसे POK कहते हैं।

Note :– POK = Pakistan Occupied Kashmir
(पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर)

- **1956 ई. में पाकिस्तान** ने खुद को इस्लामिक राष्ट्र घोषित कर लिया।
- 1966 ई. का **भारत-पाक युद्ध ताशकंद समझौता** के द्वारा समाप्त हुआ। यह एक शांति समझौता था यह समझौता भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाकिस्तान के प्रधान मंत्री अयुब खान के बीच हुई थी। इस समझौते के अनुसार यह तय हुआ था कि ये दोनों देश अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे और अपने झगड़ों को शांति पूर्वक ढंग से तय करेंगे। ताशकंद वर्तमान में उज्बेकिस्तान में है।
- 1971 ई. में भारत-पाकिस्तान के बीच बांग्लादेश को लेकर पुनः युद्ध शुरू हुआ।
- बांग्लादेश पहले पूर्वी पाकिस्तान था किंतु भारत के सहयोग से शेख मुजिबुर्ररहमान ने मुक्ति वाहिनी के द्वारा बांग्लादेश का निर्माण किया।
- इस युद्ध में पाकिस्तान के 93 हजार सेना भारतीय सेना के सामने आत्म समर्पण की थी।
- यह युद्ध 1972 ई. में हुए शिमला समझौता के तहत समाप्त हुआ। यह समझौता भारत के प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो के बीच हुई थी।
- 1972 ई. में पाकिस्तान ने बांग्लादेश को स्वतंत्र घोषित किया।
- 1984 ई. में पाकिस्तान ने विश्व के सबसे ऊँचा तथा सबसे ठंडा युद्ध का मैदान सियाचीन में घुसपैठ कर दिया। जिसके बदले भारतीय सेना ने ऑपरेशन मेघदुत तथा राजीव चलाया।
- 1999 ई. में पाकिस्तानी घुसपैठियों ने कारगिल में घुसपैठ कर दिया। भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय चलाया जबकि, भारतीय वायु सेना ने ऑपरेशन सागर चलाया।
- 1984 ई. में स्वर्ण मंदिर में घुसे सिक्ख विद्रोहियों को निकालने के लिए ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया गया।
- 2008 ई. में ताज होटल में घुसे आतंकवादियों को निकालने के लिए ऑपरेशन ब्लैक टोरनाडो चलाया गया।

➢ कोरिया युद्ध

- इस युद्ध का प्रारंभ 25 जून, 1950 ई. को उत्तरी कोरिया से दक्षिण कोरिया पर आक्रमण के साथ हुआ।
- यह युद्ध कोरियाई प्रायद्वीप को दो भागों में बाँट दिया। उत्तरी कोरिया रूस के साथ हो गया जबकि दक्षिणी कोरिया अमेरिका के साथ हो गया। इन दोनों देशों ने एक-दूसरे पर हमला करना प्रारंभ कर दिया। इन दोनों देशों को हथियार की पूर्ति अमेरिका तथा रुस करते थे। इन दोनों के बीच 1950–53 ई. तक तीन सालों तक युद्ध चला। जिसे कोरियाई युद्ध कहा गया। इस युद्ध के फलस्वरूप 38° समानान्तर रेखा खींच दी गई। यही उन दोनों की सीमा रेखा है।

➢ **वियतनाम युद्ध**

☛ कोरिया संकट के बाद रुस तथा अमेरिका वियतनाम में प्रवेश कर गये और वियतनाम को दो भागों में बाँट दिए। इन दोनों ही भागों में आपसी वर्चस्व बनाने के लिए 1955 ई. में युद्ध प्रारंभ हो गया। जो 1975 ई. तक चला। इस युद्ध में अमेरिका ने वियतनाम के ऊपर काफी बम गिराया। वियतनाम की जनता हो चि मिन के नेतृत्व में एक हो गई तथा उत्तरी एवं दक्षिणी वियतनाम को अलग करने वाली 17° समानान्तर रेखा को समाप्त करके आपस में एक हो गए। हो-चि-मिन को Uncle-ho कहते हैं।

➢ **क्युबा संकट 1961 ई.**

☛ क्युबा अमेरिका का पड़ोसी देश है जहां रूस ने परमाणु मिसाइलें लगा दी थी। किन्तु अमेरिका ने वहां के फिडेल कास्त्रो की सरकार पर दबाव बना दिया। जिससे रुस को पिछे हटना पड़ा।

➢ **इराक-इरान युद्ध–(1980–88 ई.)**

☛ इराक इरान दोनों ही रुस के समर्थक थे। किन्तु दोनों में आपसी वर्चस्व को बनाये रखने के लिए एक-दूसरे से युद्ध कर लिये। यह युद्ध 1980 ई. से 1988 ई. तक चला। इस युद्ध में इराक विजयी हुआ।

➢ **कुवैत-इराक युद्ध**

☛ इराक ने तेल चोरी के कारण तथा कुवैत के कर्ज से बचने के लिए कुवैत पर हमला कर दिया। इराक ने 2 अगस्त, 1990 ई. को कुवैत पर आक्रमण किया और 4 अगस्त, 1990 ई. तक कुवैत को जीत लिया।

➢ **खाड़ी युद्ध (1990–91 ई.)**

☛ सद्दाम हुसैन ने कुवैत पर अधिकार कर लिया था। अत: कुवैत के बचाव में UNO तथा अमेरिका के नेतृत्व वाली संयुक्त सेना ने Operation Deseart Storm के तहत इराक पर आक्रमण कर दिया और सद्दाम हुसैन की सत्ता का अंत कर दिया। इस युद्ध को खाड़ी युद्ध कहते हैं।

➢ **IC–814 विमान हाइजेक 1999 ई.**

☛ लस्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने नेपाल के त्रिभुवन एयर पोर्ट से एयर इंडिया का जहाज IC-814 का अपहरण कर लिया। आतंकी इसे काठमाण्डू से अमृतसर और लाहौर के बाद अफगानिस्तान के कंधार ले गए थे।

☛ लस्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों ने विमान को छोड़ने के बदले खुंखार आतंकवादी मौलाना मसूद अजहर तथा उसके दो साथियों को छुड़ा ले गये।

☛ लस्कर-ए-तैयबा तथा जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों ने 2001 में भारतीय संसद पर हमला किया। इस हमले के मुख्य अभियुक्त अफजल गुरु को 2012 ई. में फाँसी दे दिया गया।

☛ इसी आतंकवादी संगठन ने 26 नवम्बर, 2008 ई. को ताज होटल, नरीमन हाउस तथा CST स्टेशन पर हमला किया। जिसे NSG के कमांडो ने ऑपरेशन ब्लैक टोरनेडो द्वारा समाप्त कर दिया।

❑❑❑

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

30. विश्व का इतिहास (History of the World)

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

➢ मिस्र की सभ्यता

- मिस्र की सभ्यता का प्रारंभ 3400 ई.पू. में हुआ ।
- मिस्र को नील नदी की देन कहा गया है। मिस्र के बीच से नील नदी बहती है, जो मिस्र की भूमि को उपजाऊ बनाती है।
- यह सभ्यता प्राचीन विश्व की अति विकसित सभ्यता थी। इस सभ्यता ने विश्व की अनेक सभ्यताओं को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है।
- सामाजिक जीवन में सदाचार का महत्त्व इसी सभ्यता से प्रसारित हुआ है।
- सामाजिक जीवन की सफलता के लिए उन्होंने नैतिक नियमों का निर्धारण किया।
- मिस्र के राजा को फराओ कहा जाता था। उसे ईश्वर का प्रतिनिधि तथा सूर्य देवता का पुत्र माना जाता था ।
- मरणोपरान्त राजा के शरीर को पिरामिड नामक मंदिर में सुरक्षित रख दिया जाता था।
- पिरामिडों को बनाने का श्रेय फराओ जोसफ के वजीर अमहोटेप को है।
- मिस्रवासियों को मरणोत्तर जीवन में विश्वास था । इसीलिए मृतकों के शवों को सुरक्षित रखने के लिए शवों पर रासायनिक द्रव्यों का लेप लगाया जाता था। ऐसे मृतक शरीर को 'मम्मी' कहा जाता था।
- शिक्षा के क्षेत्र में सर्वप्रथम व्यवस्थित विद्यालयों का प्रयोग यहीं हुआ था और यहीं से अन्यत्र प्रचलित हुआ।
- विज्ञान के क्षेत्र में मिस्रवासी विश्व में अग्रणी समझे जाते थे। रेखागणित में जितना ज्ञान उन्हें था उतना विश्व के अन्य लोगों को नहीं था। कैलेण्डर सर्वप्रथम यहीं तैयार हुआ। सूर्य घड़ी एवं जल घड़ी का प्रयोग भी सर्वप्रथम यहीं हुआ । अमहोटेप चतुर्थ (1375 ईसा पूर्व से 1358 ईसा पूर्व) मानव इतिहास का पहला सिद्धांतवादी शासक था। उसे आखनाटन के नाम से भी जाना जाता है।

➢ मेसोपोटामिया की सभ्यता

- वर्तमान ईराक अनेक सभ्यताओं का जन्मदाता रहा है। मिस्र की सभ्यता के समकक्ष तथा समकालीन मेसोपोटामिया की सभ्यता विकसित हुई।
- यूनानी भाषा में मेसोपोटामिया का अर्थ नदियों के बीच की भूमि होता है। यह सभ्यता दजला एवं फरात नदियों के बीच के क्षेत्र में विकसित हुई।
- प्राचीन काल में दजला एवं फरात के बिल्कुल दक्षिणी भाग को सुमेर कहा जाता था। मेसोपोटामिया की सभ्यता का विकास सर्वप्रथम सुमेर प्रदेश में हुआ।
- सुमेर के उत्तर-पूर्व भाग को बेबीलोन कहा जाता था तथा नदियों के उत्तर की उच्च भूमि का नाम असीरिया था।
- सुमेर, बेबीलोन तथा असीरिया सम्मिलित रूप से मेसोपोटामिया कहलाते थे।

➢ सुमेरिया की सभ्यता

- सुमेरियनों ने एक बड़े ही सुसंगठित राज्य की स्थापना की।
- प्रत्येक नगर राज्य का एक राजा था जिसे पुरोहित या पतेसी कहा जाता था।
- धर्म एवं मंदिरों के विशिष्ट स्थल थे।
- देव मंदिरों को जिगुरत कहा जाता था। राजा ही मंदिर का बड़ा पुरोहित होता था ।
- सुमेरियनों की महत्त्वपूर्ण देन लेखन कला है। उन्होंने एक लिपि का आविष्कार किया, जिसे कीलाकार लिपि कहा जाता है। इसे वे तेज नोक वाली वस्तु से मिट्टी की पट्टियों पर लिखते थे।
- उन्होंने ही समय मापने के लिए सर्वप्रथम 60 अंकों की कल्पना की तथा चन्द्र पंचांग का प्रयोग किया।
- वृत्त के केंद्र में 360 अंश का कोण बनता है। इस माप की कल्पना भी सर्वप्रथम सुमेर के लोगों ने ही की।

➢ बेबीलोन की सभ्यता

- सुमेरियन लोगों ने जिस सभ्यता का निर्माण किया उसी के आधार पर बेबीलोन की सभ्यता का विकास हुआ।
- निपुर इसका प्रमुख नगर था।
- बेबीलोन का प्रसिद्ध शासक हम्बुरावी (2124 ई.पू. से 2081 ई.पू.) था, जो एमोराइट राजवंश का था।
- हम्बुराबी की सबसे बड़ी देन कानूनों की संहिता है । हम्बुरावी विश्व का पहला शासक था, जिसने सर्वप्रथम कानूनों का संग्रह कराया।
- धर्म का महत्वपूर्ण स्थान था। लोग बहुदेववादी थे। मार्डुक सबसे बड़ा देवता समझा जाता था।

➢ चीन की सभ्यता

- हांग-हो नदी की घाटी में प्राचीन चीन की सभ्यता का विकास हुआ। यह स्थान चीन के उत्तरी क्षेत्र में स्थित है।
- यह क्षेत्र विश्व के अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है। इसे 'चीन का विशाल मैदान' कहा जाता है।

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- ह्वांग-हो नदी को पीली नदी भी कहते हैं, इसिलिए चीन की प्राथमिक सभ्यता को 'पीली नदी घाटी सभ्यता' भी कहा जाता है।
- इस दौरान चीन में वैज्ञानिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई। कागज एवं छपाई का आविष्कार चीन की देन है। भूकम्प का पता लगाने वाले यंत्र सिस्मोग्राफ का आविष्कार चीनवासियों ने ही किया था।
- दिशासूचक यंत्र का आविष्कार चीन में ही हुआ।
- ह्वांग टी (लगभग 2700 ई.पू.) की पत्नी ली-जू (Lei-Zu) ने पहले-पहल चीनी लोगों को रेशम के कीड़ों का पालन करना सिखाया।
- रेशम के हल्के वस्त्रों का निर्माण एवं प्रयोग सर्वप्रथम चीन में ही हुआ ।
- शी- हांग टी (लगभग 247 ई.पू.) ने समस्त चीन को एक राजनैतिक सूत्र में आबद्ध किया।
- चीन वंश के नाम पर ही पूरे देश का नाम चीन पड़ा।
- यहां के राजा को वांग कहा जाता था।
- चीन में छठी शताब्दी ईसा पूर्व दार्शनिक चिंतन का उद्भव हुआ। इनमें से सबसे प्रमुख दार्शनिक कन्फ्युशियस (551 ई. पू. से 479 ई.पू.) थे जिसे कुंग जू या ऋषि कुंग के नाम से भी संबोधित किया जाता है।
- पुच्छल तारा सर्वप्रथम चीन में ही 240 ई. में देखा गया था।
- पेय पदार्थ के रूप में चाय का सर्वप्रथम प्रयोग चीन में ही प्रारंभ हुआ।

➢ यूनान की सभ्यता

- यूनान की सभ्यता को यूरोपीय सभ्यता का उद्गम स्थल माना जाता है।
- क्रीट की सभ्यता प्राचीन यूनानी सभ्यता की जननी कही जाती है। क्रीट की राजधानी नासौस थी।
- 1200 ईसा पूर्व आर्यों की डोरियन शाखा ने यूनान में प्रवेश कर वहाँ अपना प्रभुत्व जमा लिया। यूनान को हेल्स भी कहा जाता था। इसलिए उसकी पुरानी सभ्यता 'हेलनिक सभ्यता' भी कहलाती है।
- पर्वतीय प्रदेश होने के कारण यूनान छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त हो गया। विभिन्न नगर राज्यों में स्पार्टा और ऐथेन्स अधिक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली थे। स्पार्टा सैन्य तंत्रात्मक राज्य था।
- ऐथेन्स में गणतंत्रात्मक पद्धति का विकास हुआ था। ऐथेन्स में 600 ईसा पूर्व में ही गणतांत्रिक शासन पद्धति के सफल प्रयोग हुए।
- 490 ई.पू. में फारस के राजा ने यूनान पर आक्रमण कर दिया। फलत: दोनों पक्षों में युद्ध शुरू हो गया, जो 448 ई.पू. तक चलता रहा। पेरिक्लोज (469 ई.पू. से 429 ई.पू.) का युग यूनान के इतिहास में स्वर्ण युग था।
- जिस युग में महान कवि होमर ने अपने दो महाकाव्यों इलियड तथा ओडिसी की रचना की उसे होमर युग कहा जाता है।
- सिकन्दर कालीन युग को हेलीनिस्टिक युग कहा जाता है।
- सिकन्दर मेसीडोनिया के राजा फिलिप का पुत्र था।
- अरस्तू ने सिकंदर को शिक्षा प्रदान की थी।
- सुकरात, प्लेटो और अरस्तू प्राचीन यूनान के प्रमुख विचारक और दार्शनिक थे।

➢ रोम की सभ्यता

- रोम की सभ्यता का विकास यूनानी सभ्यता के विघटन के बाद हुआ।
- यह यूनानी सभ्यता से प्रभावित थी।
- रोमन सभ्यता का केंद्र रोम नामक नगर था, जो इटली में स्थित है।
- इटली में एक उन्नत सभ्यता को विकसित करने का श्रेय एट्स्कन नामक एक अनार्य जाति को है।
- रोम एवं कार्थेज के बीच (264 ई.पू. से 146 ई.पू.) एक शताब्दी से अधिक तक संघर्ष चला। इस बीच तीन भीषण युद्ध हुए।
- इन युद्धों को प्यूनिक युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध में रोम की विजय हुई। जूलियस सीजर रोम के साम्राज्य का बिना ताज का बादशाह था। इसकी गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ सेनापतियों में की जाती है।
- ऑगस्टस (31 ई.पू. से 14 ई.पू.) का काल रोमन सभ्यता का स्वर्ण काल माना जाता है।
- आधुनिक अस्पतालों के संगठन की कल्पना रोमन सभ्यता की देन है।
- रोमन दर्शन एवं धर्म ने विश्व सभ्यता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। जहाँ तक धर्म का संबंध है, ईसाई धर्म का प्रसार रोम की ही देन है। रोम का पोप कालांतर में सम्पूर्ण यूरोप को राजनीति का संचालक बन गया। रोम की राष्ट्रभाषा 'लैटिन' की महत्ता उसके विस्तृत प्रभाव से स्पष्ट परिलक्षित होती है। अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य का जो स्वरूप आज उपलब्ध है, वह लैटिन भाषा की ही देन है।

पुनर्जागरण

- पुनर्जागरण का अर्थ होता है- 'किसी पुरानी व्यवस्था को छोड़कर नई रीति-रिवाज अपना लेना।'
- पुनर्जागरण शब्द फ्रांसिसी भाषा के रेनेसा शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है- दुबारा जाग उठना।
- पुनर्जागरण की शुरुआत इटली के शहर फ्लोरेंस से हुआ।
- इसकी शुरुआत प्रसिद्ध कवि दांते ने किया। उनकी पुस्तक डिवाइन कामेडी में स्वर्ग एवं नरक के काल्पनिक का वर्णन किया गया है।
- पुनर्जागरण इटली से ही प्रारम्भ हुआ क्योंकि इटली मध्य में पड़ता था जिस कारण उसे अत्यधिक व्यापारिक लाभ हुआ। अत: वहां के लोग धनी हो गए और उनके यहाँ विज्ञान तथा कला के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हुआ।

➢ **कुस्तुन्तुनिया पर तुर्की का अधिकार**

☛ कुस्तुन्तुनिया वेजेण्टाइन साम्राज्य की राजधानी थी जो इसाइयों का एक प्रमुख केन्द्र था।

☛ कुस्तुन्तुनिया पर मुस्लिम राष्ट्र तुर्की ने अधिकार कर लिया। अत: कुस्तुन्तुनिया के विद्वान लोग अपनी कला, संस्कृति, विज्ञान इत्यादि को बचाने के लिए इटली में ही शरण ले लिए, जिससे इटली के लोगों का नये विचारों से परिचित हुए।

➢ **यूरोप में पुनर्जागरण का कारण**

☛ मुस्लिम तथा इसाइयों के बीच धर्मयुद्ध हो गया जिसमें इसाई पराजित हो गये। अत: वे शरण लेने के लिए नई-नई जगहों की खोज करने लगे। जिनसे उनके विचारों में सुधार आया और उन्हें नए विचार मिलें।

☛ कुस्तुन्तुनिया पर तुर्की का अधिकार होने के कारण यूरोपीय लोग शरण लेने के लिए नये-नये जगहों की खोज करने लगे।

☛ यूरोप में कई वैज्ञानिक उपकरण तैयार किये गये। जैसे- दिशा सूचक यंत्र, कम्पास इत्यादि।

☛ यूरोप में छापाखाना (Printing Press) की खोज की गई, जिससे विचारों को फैलाने में आसानी हुई।

➢ **पुनर्जागरण की विशेषता**

☛ लोग धार्मिक विषयों के स्थान पर विज्ञान, दर्शन, भूगोल जैसे विषयों को पढ़ने पर ध्यान दिए।

☛ लोग परलोकवाद तथा मोक्ष प्राप्ति के स्थान पर सामाजिक मुद्दे पर अत्यधिक ध्यान देने लगे।

☛ अंधविश्वास तथा रुढ़ीवाद से लोगों का विश्वास उठ गया।

☛ पुनर्जागरण के बाद लोग किसी के विचारों पर तर्क-वितर्क करते थे।

➢ **साहित्य के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

☛ दांते ने 'डिवाइन कामेडी' नामक पुस्तक लिखी।

☛ पेट्राक ने 'कैवेलियर टेलर्स' नामक पुस्तक लिखी।

☛ मैक्यावली ने 'द प्रिंस' तथा 'आर्ट वार' नामक पुस्तक लिखा।

☛ शेक्सपियर ने 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' जैसी पुस्तक लिखा।

☛ बुकेशिये ने 'डेकामरान' कहानी लिखा।

➢ **स्थापत्यकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

☛ सेन्ट पिटर गिरजाघर (रोम), सेंट पॉल गिरजाघर (लंदन), सेन्ट मार्क गिरजाघर (वेनिस) जैसे गिरजाघरों का निर्माण पुनर्जागरण के समय हुआ।

➢ **चित्रकला के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

☛ राफेल ने 'मेडोना' नामक चित्रकारी बनायी तथा लियोनार्डो-द-विंची ने 'मोनालिसा' तथा 'द लास्ट सपर' नामक चित्रकारी बनायी।

☛ जिआटो को चित्रकला का जनक माना जाता है।

➢ **विज्ञान के क्षेत्र में पुनर्जागरण**

☛ टॉल्मी के विचार के अनुसार सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है किन्तु पुनर्जागरण के बाद इसके विचारों को काट दिया गया।

1. **कॉपरनिकस (Poland)**– इन्होंने बताया कि सूर्य स्थिर है। पृथ्वी सूर्य की चक्कर लगाती है।
2. **केप्लर (जर्मनी)**– इन्होंने ग्रहों के गति सम्बन्धी नियम दिया।
3. **न्यूटन (जर्मनी)**– इन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम दिया।
4. **गैलिलियो (इटली)**– इन्होंने दूरबीन बनाया।
5. **मार्कोपोलो (इटली)**– इन्होंने कुतुबनुमा (दिशा सूचक यंत्र, कम्पास) बनाया।
6. **रोजर मेकर (इंग्लैण्ड)**– इन्होंने सूक्ष्मदर्शी बनाया।

➢ **पुनर्जागरण का प्रभाव**

☛ पुनर्जागरण के बाद मान्यता में कमी आयी।

☛ लोग नए जगहों की खोज करने लगे। जिस कारण नये-नये उपनिवेश बनने लगे।

☛ इस्लाम धर्म पिछड़ने लगा और इसाई धर्म आगे बढ़ने लगा।।

धर्म सुधार आंदोलन

☛ पुनर्जागरण के बाद धर्म सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हो गया।

☛ धर्म सुधार आन्दोलन का कोई तात्कालिक कारण नहीं था। धर्म सुधार आन्दोलन इसाई धर्म में मौजूद बुराईयों के विरुद्ध एक आन्दोलन था।

☛ इसाई धर्म में कैथोलिक पोप के विरुद्ध सर्वप्रथम जर्मनी के निवासी मार्टिन लूथर किंग ने आवाज उठाया और 1530 ई. में प्रोटेस्टेण्ट नामक एक इसाई धर्म की एक नई शाखा बना दी।

☛ मार्टिन लूथर किंग के कारण ही धर्म सुधार आन्दोलन सफल रहा।

➢ **धर्म सुधार आंदोलन के प्रभाव**

☛ चर्च के प्रभाव में कमी आयी।

☛ कैथोलिक धर्म को मानने वालों में कमी आयी।

☛ पोप की शक्ति में कमी आयी।

☛ राजा की शक्ति में वृद्धि हुई।

☛ चर्च की बुराई में कमी आयी।

☛ प्रोटेस्टेण्ट धर्म का उदय हुआ।

औद्योगिक क्रान्ति

☛ औद्योगिक क्रान्ति की शुरुआत 18वीं सदी में इंग्लैण्ड में हुई।

☛ औद्योगिक क्रांति में उत्पादन के संसाधन में अत्यधिक वृद्धि हुई। जिससे नए-नए उद्योग धंधे लगने लगे।

इंग्लैंड में औद्योगिक क्रान्ति के कारण–

1. इंग्लैण्ड के उपनिवेश अधिक थे। जहाँ से इंग्लैंड को लोहा, कोयला इत्यादि आसानी से मिल जाता था।
2. इंग्लैंड अपने उपनिवेश से ही कच्चा माल प्राप्त कर लेता था।
3. इंग्लैंड के वैज्ञानिकों ने कई आविष्कार किये जिससे उद्योग को फ्लाइंग शटल, स्पीन, जैनी नामक यंत्र ने सूत काटना (धागा बनाने का कार्य) आसान कर दिया।

4. इंग्लैंड किसी भी युद्ध में उतना ही पड़ता था जिससे कि उसका व्यापारिक हित मिल सके।
5. इंग्लैंड के पूंजीपतियों के पास धन की कमी नहीं थी, जिस कारण उद्योग बढ़ते गये।
6. इंग्लैंड को बाजार के रूप में एवं इसके अपने ही उपनिवेश थे। उपरोक्त कारणों से ही इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति हुई। उस समय इंग्लैण्ड को विश्व का उद्योग शाखा कहा जाता था।

➢ **औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव**

(1) कच्चा माल, सस्ता श्रम तथा बाजार के लिए यूरोपीय में नए-नए उपनिवेश बनाने की होड़ लग गयी।
(2) कृषि प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन हुआ।
(3) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि
(4) नए-नए यंत्र बनाने की होड़ शुरू हो गया।

➢ **औद्योगिक क्रान्ति के दौरान बने यंत्र**

☛ सूत काटने के लिए फ्लाइंग शटल यन्त्र की खोज, स्पीन जैनी, बाहर क्रेन आदि जैसे यंत्र की खोज हुयी।
☛ इसी क्रान्ति के दौरान स्टीमर, रेल इंजन तथ सिलाई मशीन की खोज हुई।

➢ **औद्योगिक क्रांति के लाभ**

1. लोगों की जीवनशैली तथा उत्पादन में वृद्धि हुई।
2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में बृद्धि हुई।

➢ **औद्योगिक क्रान्ति के हानि**

1. समाज का नैतिक पतन हुआ।
2. छोटे किसानों का अन्त हो गया।
3. गृह व्यवसायी (कुटीर उद्योग) का अन्त हो गया।
4. **समाज दो वर्गों में बंट गया–**
   (i) पूंजीपति तथा (ii) श्रमिक

➢ **औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार**

☛ औद्योगिक क्रांति का विस्तार जर्मनी, फ्रांस, इटली, U.S.A होते हुए पूरे विश्व में फैल गया।
☛ औद्योगिक क्रान्ति से सर्वाधिक लाभ कपड़ा उद्योग को हुआ।
☛ औद्योगिक क्रान्ति में इंग्लैण्ड का प्रतिद्वंद्वी जर्मनी था। जिस कारण इंग्लैण्ड तथा जर्मनी में हमेशा विवाद होता रहता था और यही विवाद प्रथम विश्व युद्ध का रूप ले लिया।

इंग्लैण्ड की क्रांति (1688)

☛ इंग्लैण्ड की क्रांति की शुरूआत 1688 ई. में हुआ। इंग्लैण्ड की क्रान्ति को शांतिपूर्ण क्रांति, गौरवपूर्ण क्रांति, रक्तहीन क्रांति तथा हसवतपवने क्रांति के नाम से जानते हैं, क्योंकि इंग्लैण्ड की क्रांति में रक्त का एक बूंद भी नहीं बहा था।
☛ 11 वीं सदी में राजा हेनरी प्रथम ने सलाहकारों का एक परिषद (मंत्री परिषद्) का गठन किया। जिसे क्यूरिया रेजिस कहा गया। 1215 ई. में राजा जॉन के नितियों से असन्तुष्ट होकर सामन्तों ने (वैरम) एक घोषणा पत्र (मैग्नाकार्टा) तैयार किया और उसे राजा जबरदस्ती स्वीकार करा लिया। इस घोषणा पत्र के अनुसार।
☛ राजा को सलाहकार परिषद के अनुसार ही कार्य करना था।
☛ 1485 से लेकर 1603 तक ट्यूडर वंश का शासन रहा।
☛ इस वंश का शासक अत्यन्त निरंकुश थे।
☛ इस वंश के शासकों ने जनता का दमन किया। जिस कारण जनता मैग्नाकार्टा को भूल गयी।
☛ 1603 से 1714 ई तक स्टुअर्ट वंश का शासन रहा। इस वंश के पहले शासक जेम्स प्रथम (1603-1625) के समय राजा एवं संसद के बीच विवाद होने लगा क्योंकि इस अवधि में पुनर्जागरण हो चुका था। जनता तथा राजा के बीच विद्रोह बढ़ता गया। जनता राजा के निरंकुशता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।
☛ जेम्स प्रथम के बाद उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम राजा बना (1625-1649) चार्ल्स के समय जनता खुल के विद्रोह करने लगी क्योंकि चार्ल्स प्रथम नया नया कर लगाता था।
☛ जनता तथा राजा के बीच का विद्रोह गृह युद्ध का रूप लेने लगा। इंग्लैण्ड के इस गृह युद्ध में दो गुट बन गये ।
   (i) पादरी जमींदार तथा राजा एक गुट में थे जिन्हें कैवेलियर कहा जाता था।
   (ii) जनता, व्यापारी तथा संसद एक गुट में थे जिन्हें Round Head कहा जाता था।
☛ जनता का नेतृत्व क्रॉमवेल कर रहा था और इस गृह युद्ध में जनता ने चार्ल्स प्रथम को पकड़कर 30 जनवरी, 1649 को फांसी दे दिया गया।
☛ चार्ल्स प्रथम के बाद इंग्लैण्ड का राजा क्रॉमवेल को बनाया गया। प्रारम्भ में क्रॉमवेल संसद के अनुसार कार्य कर रहा था किन्तु धीरे-धीरे क्रॉमवेल भी निरंकुश होने लगा। फलस्वरूप जनता शीघ्र ही क्रॉमवेल के शासन से उब गयी।
☛ क्रॉमवेल प्युरितल धर्म को मानता था और वह जनता पर जबरदस्ती इस धर्म को थोपने लगा। अत: जनता क्रॉमवेल को हटाकर चार्ल्स द्वितीय को राजा बना दिया। चार्ल्स द्वितीय प्रारम्भ में अच्छे से शासन करता था किन्तु वह भी धीरे-धीरे निरंकुश होने लगा।
☛ चार्ल्स द्वितीय के मृत्यु के बाद जेम्स द्वितीय राजा बना। जेम्स द्वितीय के शासक बनते ही वह निरंकुश हो गया और वह अपने विद्रोहीयाँ का दमन करने लगा।
☛ इंग्लैण्ड की संसद ने हॉलैण्ड के राजकुमार विलियम ऑफ ऑरैन्ज तथा जेम्स की पुत्री मेरी को संयुक्त रूप से England का शासक नियुक्त कर दिया।
☛ हॉलैण्ड का राजकुमार William of Orange अपने 15,000 सैनिकों के साथ इंग्लैंड में प्रवेश करने पर इंग्लैंड की जनता ने उनका स्वागत किया।

☛ जेम्स द्वितीय William of Orange के डर से England छोड़कर भाग गया। इस प्रकार 1688 ई. में बिना रक्त बहाए ही England की क्रांति सफल हो गयी।

➢ **इंग्लैण्ड की क्रान्ति का प्रभाव**

1. राजा तथा संसद के बीच के विवाद को समाप्त किया गया।
2. राजा को औपचारिक प्रधान बनाया गया।
3. राजा तथा संसद को अधिकारों को निर्धारित किया गया।

➢ **अधिकार घोषणा पत्र (1689)**

☛ इस घोषणा पत्र के अनुसार राजा संसद् बिना अनुमति ना कोई कानून बना सकता ना ही पुराने कानून को समाप्त कर सकता है। राजा बिना संसद के अनुमति नया कर नहीं लगा सकता।

☛ वित्त तथा सेना संसद के नियन्त्रण में होगी।

Note :– England की क्रांति विश्व की पहली राजनीतिक क्रांति थी।

Note :– England की क्रांति का मुख्य कारण राजा तथा संसद के बीच सत्ता प्राप्त करने का संघर्ष था।

अमेरिका की क्रांति

☛ अमेरिका की क्रान्ति का मुख्य कारण इंग्लैण्ड द्वारा उसका शोषण करना था।

☛ इंग्लैण्ड ने अमेरिका को अपना उपनिवेश बनाया था।

☛ इंग्लैण्ड ऐसा ही कानून बनाता था जिससे उसे लाभ हो तथा अमेरिका को हानि हो।

इसी समय दो घटनाएं हुई–

(i) स्टाम्प एक्ट

(ii) बोस्टन चाय पार्टी

➢ **स्टाम्प एक्ट (1765)**

☛ इसे U.S.A ने अस्वीकार कर दिया क्योंकि Parliament (संसद) में U.S.A का कोई प्रतिनिधि नहीं थे। अत: उन्होंने कहा कि 'प्रतिनिधि नहीं तो कर नहीं' No tax without Tax Repersentitive

➢ **बोस्टन चाय पार्टी (16 दिसम्बर 1773)**

☛ इंग्लैण्ड ने अमेरिका भेजे जाने वाले चाय पर अत्यधिक कर लगाया था। जब चाय से भरा जहाज U.S.A के बोस्टन बन्दरगाह पर पहुँचा तो अमेरिका के लोगों ने सैमुअल एडम्स के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया और चाय से भरे बोरियों को समुद्र में फेंक दिया, जिस कारण इंग्लैण्ड की सेना ने उन पर गोली चला दिया। इस हत्या को बोस्टन चाय पार्टी की घटना कहते हैं।

☛ अमेरिकी स्वतंत्रता का संदेश तथा राष्ट्र प्रेम की भावना को जैफरसन, जॉन लॉक, जॉन मिल्टन, थामस बेन जैसे प्रमुख कवियों ने फैला दिये।

☛ 04 जुलाई 1776 को अमेरिका ने खुद को स्वतन्त्र घोषित कर लिया और आन्दोलन प्रारंभ कर दिया।

☛ अमेरिकी सेना का नेतृत्व जार्ज वाशिंगटन कर रहा था। यह युद्ध 1783 तक चला।

☛ इस युद्ध की समाप्ति 1783 के पेरिस समझौते के तहत समाप्त हुआ। इस समझौते के तहत इंग्लैण्ड ने अमेरिका को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

Remark :– अमेरिका ने स्वयं को 04 जुलाई, 1776 को स्वतंत्र घोषित किया था किन्तु इंग्लैण्ड ने उसे 1783 में स्वतन्त्रता दिया।

☛ अमेरिका का स्वतन्त्रता दिवस 04 जुलाई को मनाया जाता है। अमेरिका का संविधान 1789 को बनकर तैयार हुआ।

☛ अमेरिका के क्रांति से प्रभावित होकर 1789 में फ्रांस की क्रांति की शुरुआत हो गयी।

☛ अमेरिका का प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन को बनाया गया।

स्वतन्त्रता के बाद अमेरिका में दो प्रमुख समस्या थी–

(i) रंगभेद

(ii) दास प्रथा

☛ अमेरिका में काले तथा गोरे लोगों के बीच रंगभेद की लड़ाई थी। इस रंगभेद को समाप्त करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने निभाया।

☛ इन्हें ब्लैक गांधी तथा काला गांधी कहा जाता है।

☛ अमेरिका में दासों की खरीद बिक्री होती थी।

☛ अब्राहम लिंकन ने दास प्रथा का उन्मूलन कर दिया और उन्होंने लोकतंत्र का सिद्धान्त दिया और कहा कि 'जनता की सरकार' जनता के द्वारा तथा जनता के लिए होती है। यही लोकतंत्र है। "Government of the people by the people for the people"

फ्रांस की क्रांति

☛ फ्रांस की क्रान्ति की प्रेरणा U.S.A की क्रांति से मिली।

☛ फ्रांस का राजा निरंकुश था और वह फिजूल खर्च अत्यधिक करता था।

☛ राजा जनता पर नये-नये कर लगाने लगा, जिससे जनता विद्रोह कर दी।

☛ फ्रांस का राजा इतना निरंकुश था कि एक बार जब राजा लूई 16वीं तथा उनकी पत्नी अन्त्वानेत जब रथ यात्रा पर निकले तो भूखी जनता रोटी-रोटी कहकर भीख मांग रही थी तो रानी ने कहा कि रोटी के स्थान पर ब्रेड खा लो।

☛ राजा के इस व्यवहार से जनता विद्रोह करने लगी। राजा ने विद्रोहियों को पकड़कर वास्टिल नामक जेल में डाल दिया। फ्रांस की जनता का विद्रोह उग्र होता गया और यह विद्रोह रक्तपात के रूप ले लिया। इस रक्तपात की शुरुआत 14 जुलाई 1789 को वास्टिल दुर्ग (जेल) के पतन से प्रारम्भ हुई और 18 जून, 1815 के वाटर लू के युद्ध में जाकर समाप्त हुई।

Note :– वाटर लू का मैदान बेल्जियम में है। इसी कारण वेल्जियम को यूरोप का अखाड़ा कहते हैं।

- फ्रांसीसी क्रांति में वाल्टेयर, मांटेस्क्यू एवं रूसो जैसे दार्शनिकों का महत्वपूर्ण योगदान था।
- 'सोशल कॉन्ट्रेक्ट' रूसो की रचना है।
- विधि की आत्मा की रचना मांटेस्क्यू ने की थी।
- स्टेट्स जनरल की शुरूआत 8 मई, 1789 ई. को हुई थी, इसी दिन फ्रांसीसी क्रांति का श्रीगणेश हुआ।
- 1804 ई. में नेपोलियन ने खुद को फ्रांस का सम्राट घोषित कर दिया।
- नेपोलियन बोनापार्ट एक अन्य नाम लिट्स कारपोरल के नाम से भी जाना जाता है।
- नेपोलियन को आधुनिक फ्रांस का निर्माता माना जाता है।
- नेपोलियन का जन्म कोर्सिका द्वीप में हुआ था। इसके पिता का नाम कार्लो बोनापार्ट था, जो पेशे से वकील थे।
- 1800 ई. में नेपोलियन के बैंक ऑफ फ्रांस की स्थापना की।
- अक्टूबर 1805 में इंग्लैंड एवं फ्रांस के बीच ट्राफल्गर का युद्ध हुआ।

➢ **फ्रांस की क्रान्ति के कारण**

1. राजा का निरंकुश होना।
2. असमान तथा अनिश्चित कानून
3. पादरी तथा सामन्त को कर से मुक्त रखना।
4. राजमहल में धन को पानी की तरह बहाना।
5. इंग्लैण्ड के साथ लगातार युद्ध होना।
6. संसद में जनता का बात न सुना जाना।

➢ **फ्रांस की समाज तीन भागों में बटा था**

(i) पादरी वर्ग
(ii) कुलीन वर्ग
(iii) जनसाधारण वर्ग

- फ्रांस की संसद को स्टेट जनरल कहा जाता था।

State General में तीन सदन थे–

1. एक सदन पादरी का जिसमें कुल 308 सदस्य थे।
2. दूसरा सदन कुलिन वर्ग का था जिसमें 285 सदस्य थे।
3. तीसरा सदन समान्य जनता का था जिसमें 621 सदस्य थे।

- जनता का सदन स्टेट जनरल में बायीं तरफ था और वे लोग सरकार का विरोध करते रहते थे। अत: तब से यह परम्परा प्रारम्भ हो गयी कि जो दल सरकार का विरोध करती है उसे Left कहते हैं।
- 1789 में राजा में एक नया कर लाया जो सिर्फ साधारण जनता पर लगाने का प्रस्ताव था। अत: तृतीय सदन (जनसाधारण) ने इस कर का विरोध किया। जिस कारण राजा लुई 16वाँ ने तृतीय सदन को भंग कर दिया।

➢ **टेनिस कोर्ट शपथ**

- जैसे ही राजा ने तृतीय सदन को भंग किया तो तृतीय सदन के लोगों ने टेनिस कोर्ट के मैदान में आकर शपथ लिया कि वे राजा लुई 16वाँ के शासन का अंत कर देंगे।

➢ **वास्टिल दुर्ग का पतन**

- राजा अपने विद्रोहियों को वास्टिल दुर्ग नामक जेल में डाल दिया। जनता ने वास्टिल दुर्ग को 14 जुलाई, 1789 को नष्ट कर दिया और कैदियों को स्वतन्त्र कर दिया।

Note :– 14 जुलाई को फ्रांस का राष्ट्रीय पर्व मनाया जाता है।

➢ **चुड़ैलों का धावा**

- 05 अक्टूबर, 1789 को पेरिस को 10000 महिलाएं ने पेरिस के वर्साय के महल की ओर कूच की। इसी घटना को चुड़ैलों का धावा कहते हैं।

➢ **फ्रांस की क्रांति दो भागों में बटे थे**

(i) जैकोबियन – यह बहुसंख्यक थे तथा हिंसक थे।
(ii) जिरोदिस्त – यह अल्पसंख्यक थे तथा अहिंसक थे।

- फ्रांस की क्रांति का नारा था समानता, स्वतन्त्रता तथा बन्धुता।
- फ्रांस की क्रांति को रुसो मोण्टेस्क्यू तथा वाल्टेयर नामक दार्शनिकों ने बढ़ावा दिया।

इटली का एकीकरण

- इटली का एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा आस्ट्रिया थी। वह इटली का एकीकरण नहीं होने देना चाहता था।
- इटली 13 खण्डों में बंटा था।
- इटली के एकीकरण में सबसे पहले सीनिया राज्य आगे आया।
- इटली के एकीकरण का जनक जोसेफ मेजनी को माना जाता है।
- जोसेफ जनी ने कहा था कि समाज में क्रान्ति लानी है तो शासन युवाओं को सौंप दी जाए।
- काउण्ट डी. कैवोर ने 1854 ई. में क्रिमिया युद्ध में भाग ले लिया और इटली की समस्या का अंतर्राष्ट्रीकरण कर दिया। इन्हीं के प्रयासों से 1871 ई. में इटली का एकीकरण पूरा हुआ। काउण्ट डी. कैवोर को इटली का बिस्मार्क कहा जाता है।
- गैरी बाल्डी को इटली के एकीकरण का तलवार कहा जाता है। इसने एक विशेष प्रकार की सेना का गठन किया था, जिसे लाल कूर्ती सेना कहा गया।

Note :– Florence नाइटिंगल का सम्बन्ध क्रिमिया युद्ध से है।

- फ्लोरेंस नाइटिंगल को Lady with the lamp कहा जाता था।

जर्मनी का एकीकरण

- जर्मनी का एकीकरण का संदेशवाहक नेपोलियन को माना जाता है। इसी ने जर्मनी में राष्ट्रीयता की नींव रखी। जबकि फ्रांस जर्मनी के राइन लैण्ड पर अधिकार किये हुए था। अत: फ्रांस जर्मनी का एकीकरण नहीं होने देना चाहता था।

- जर्मनी का एकीकरण बिस्मार्क ने लौह एवं रक्त की नीति का अनुसारण करके किया।
- बिस्मार्क प्रशा के शासक विलियम प्रथम का प्रधानमंत्री था।
- विलियम प्रथम ने बिस्मार्क को बाजीगर कहा था।

Note :– प्रशा ने विश्व में सबसे पहले शिक्षा का अनिवार्य बना दिया।

- 1848 ई. में जर्मनी में संविधान का निर्माण का गठन हुआ।
- जर्मनी के संविधान को विमर संविधान कहते हैं।
- जर्मनी के शासक को चांसलर कहा जाता है।
- जर्मनी के एकीकरण के दौरान आस्ट्रिया तथा प्रशा के बीच 1886 में युद्ध हुआ इस युद्ध में आस्ट्रिया पराजित हो गया और आस्ट्रिया को जर्मनी का अंग बना लिया गया।
- प्रशा तथा फ्रांस के बीच एकीकरण के लिए 1870 ई. में युद्ध हुआ। इस युद्ध में फ्रांस की पराजय हुयी। इस युद्ध के बाद 1871 ई. में फ्रैंकफर्ट की संधी द्वारा जर्मनी का एकीकरण सम्पन्न हो गया।
- बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण करने के बाद वहाँ के शासक (चांसलर) का राज्याभिषेक पेरिस के वर्साय के महल में किया।

रूस की क्रांति

- रूस की क्रांति 1917 ई. में हुई थी।
- रूस की क्रांति दो चरणों में हुयी।
- 1904-05 के युद्ध में जब रूस जापान से हार गया तो रूस की अर्थव्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हुयी।
- रूस के शासक को जार कहा जाता था।
- जार निरंकुश शासक था। 22 जनवरी, 1905 को मजदूरों का एक संघ राजमहल के सामने अपनी समस्या को लेकर पहुँचा। जिसपर राजा ने गोली चला दी। इस घटना को खुनी रविवार कहा जाता है।
- रूस की क्रांति को बोल्शेविक क्रांति के नाम से भी जानते हैं।
- रूस की क्रांति एक साम्यवादी क्रांति थी।
- रूस में साम्यवाद की स्थापना 1898 ई. में हुई थी।
- साम्यवादी शासन का पहला प्रयोग रूस में ही हुआ।
- कालांतर में वैचारिक मतभेदों के आधार पर यह दो भागों-बोल्शेविक तथा मेनशेविक; में बंट गया।
- बहुमत वाला दल बोल्शेविक कहलाया। इसके नेताओं में लेनिन सर्वप्रमुख थ।
- अल्पमत वाला दल मेनशेविक कहलाया। इसका प्रमुख नेता करेन्सकी था।
- रूस की क्रान्ति का सबसे बड़ा नायक लेनिन तथा ट्रॉटस्की था।
- रूस की क्रान्ति को कार्लमार्क्स ने भी समर्थन दिया।
- लेनिन ने चेको सेना का गठन किया जबकि ट्रॉटस्की ने लाल सेना का गठन किया।
- ट्रॉटस्की रूस में अस्थायी प्रगति का समर्थक था।
- लेनिन के नेतृत्व में मजदूरों को एक संघ का निर्माण किया गया। इस संघ को सोवियत संघ नाम दिया गया।
- लेनिन रूस के साही व्यवस्था (जार व्यवस्था) का कट्टर विरोधी था। उसने क्रांति के माध्यम से रूस के जार निकोलस द्वितीय के सत्ता का अन्त कर दिया।
- लेनिन की मृत्यु 21 जनवरी, 1924 को हो गई, हालांकि रूस की क्रांति 1917 में ही सफल हो गयी।
- आधुनिक रूस का निर्माता स्टालिन को कहा जाता है।

प्रथम विश्वयुद्ध

- प्रथम विश्व युद्ध की शुरूआत 28 जुलाई, 1914 ई. को हुई।
- प्रथम विश्व युद्ध में पूरा विश्व दो भागों में बंट गया था। एक भाग का नाम मित्र राष्ट्र तथा दूसरे का नाम धुरी राष्ट्र था।
- मित्र राष्ट्र के अंतर्गत इंग्लैण्ड, फ्रांस, रूस, जापान तथा अमेरिका था। इसका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था।
- धुरी राष्ट्रों के अन्तर्गत जर्मनी, इटली आस्ट्रिया, तुर्की तथा हंगरी था। धुरी राष्ट्रों का नेतृत्व जर्मनी कर रहा था।
- इटली बाद में धुरी राष्ट्रों से अलग होकर मित्र राष्ट्रों की तरफ जा मिला।
- मित्रों राष्ट्रों ने इटली को लालच दिया कि वे युद्ध समाप्ति के बाद इटली को कुछ भूमि देंगे किन्तु उन्होंने इटली को कुछ भी नहीं दिया।
- प्रथम विश्व युद्ध का तत्कालिक कारण आस्ट्रीया के राजकुमार फर्डिनेण्ड की 28 जुलाई, 1914 को बोत्सिनिया की राजधानी सेराजेवो में की गई हत्या थी।
- इसमें पहली बार कुल 37 देशों ने भाग लिया। पूरा विश्व इसमें भाग नहीं लिया किन्तु इसमें पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई। अत: इसे प्रथम विश्व युद्ध कहा जाता है।
- इस युद्ध की शुरुआत 01 अगस्त, 1914 को जर्मनी द्वारा रूस के आक्रमण से हुआ।
- जर्मनी एवं फ्रांस 03 अगस्त को युद्ध कर लिये। जर्मनी ने 8 अगस्त को इंग्लैण्ड पर भी हमला कर दिया।
- 26 अप्रैल, 1915 को इटली इस युद्ध में प्रवेश किया। इस युद्ध में सबसे अन्त में 06 अप्रैल, 1917 को अमेरिका प्रवेश किया क्योंकि अमेरिका के जलयान को जर्मनी ने डूबो दिया।

➢ **वर्साय की संधि (June 1919)–**

- यह संधि फ्रांस की पेरिस में स्थित वर्साय के महल में हुआ। यह संधि जर्मनी पर जबरदस्ती थोपी गयी थी। इस संधि की शर्तें निम्नलिखित हैं-
  1. जर्मनी की सेना एक लाख से अधिक नहीं हो सकती।
  2. जर्मनी कभी भी घातक हथियार नहीं रख सकता है।
  3. जर्मनी को युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्र द्वारा किये गये खर्च का वहन करना पड़ा।

4. जर्मनी का राईन लैण्ड रूर घाटी जैसे कोयला क्षेत्र को फ्रांस को 15 वर्षों के लिये दे दिया गया।

- यह संधी ही द्वितीय विश्व युद्ध जैसे विशाल वृक्ष के बीज के समान कार्य किया।
- इस युद्ध के उपरांत विश्व में शांति स्थापना के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था **राष्ट्र संघ** (League of Nations) की स्थापना की गई थी।

तुर्की गणराज्य

- तुर्की को यूरोप का मरीज कहा जाता है। यह एशिया तथा यूरोप दोनों में पड़ता है। यह एक मुस्लिम देश है।
- प्रथम विश्व युद्ध से पहले अंग्रेजों ने यह वादा किया था कि तुर्की का विभाजन नहीं होगा किन्तु प्रथम विश्व युद्ध के बाद सेवर्स के संधी द्वारा तुर्की को मित्र राष्ट्रों ने आपस में बांट लिया। इस संधी का मुस्तफा कमाल पासा ने विरोध किया। इस संधि के खिलाफ भारत में भी खिलाफत आंदोलन चलाया गया।
- अक्टूबर, 1923 को तुर्की को गणराज्य घोषित कर दिया गया। अर्थात् अब तुर्की में राजा न होकर चुनाव के द्वारा राष्ट्र प्रमुख की व्यवस्था की गयी।
- April, 1924 को तुर्की संविधान बनाया गया और मुस्तफा कमाल पासा को राष्ट्रपति बनाया गया।
- मुस्तफा कमाल पासा को आधुनिक तुर्की का राष्ट्रपत्ति (आतातुर्क) कहा जाता है।

इटली में फासीवाद

- फासीवाद (फासिज्म) शब्द इतालवी मूल का है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम बेनितो मुसोलिनी के नेतृत्व में चलाएं गए आंदोलनों के लिए किया गया था।
- फासीवाद कट्टर उग्र राष्ट्रीयता का एक रूप था यह प्रजातंत्र का विपरीत अर्थ रखता है। जो शासन प्रणाली के रूप में तानाशाही का परिचायक है।
- फासीवाद पार्टी के स्वयसेवक काली कमीज पहनते थे।
- इटली में फासीवाद का जनक मुसोलिनी को माना जाता है। मुसोलिनी ने फासीवाद की शुरुआत इटली के मिलान शहर से किया।
- मुसोलिनी के पुत्र का नाम डोमिटो मुसोलिनी था। उसे ड्यूस कहकर बुलाया जाता था।
- मुसोलिनी अपने सेना अधिकारियों को डियाज कहकर बुलाता था।
- द्वितीय विश्व युद्ध में मुसोलिनी मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध लड़ा था।
- मुसोलिनी का कहना था कि विश्व शांति कायरों का सपना है। वह व्यक्ति जो युद्ध नहीं लड़ा है वह एक बांझ महिला के समान है।
- फासीवादी के मानने वाले लोग जाति के उच्चतर में विश्वास रखते है।
- 28 अप्रैल, 1945 को मुसोलिनी को कैद कर फांसी दे दी गयी। इस प्रकार इटली में फासीवाद का अन्त हो गया।

जर्मनी का नाजीवाद

- नाजीवाद फासीवाद का जर्मन रूप था।
- नाजी शब्द हिटलर द्वारा 1921 में स्थापित दल **नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्क्स पार्टी** के नाम से निकला है इसी दल को संक्षेप में नाजी पार्टी कहा जाता था।
- जर्मनी के नाजीवाद का जनक एडोल्फ हिटलर को माना जाता है।
- इसने नाजी दल की स्थापना 1921 में की।
- 1923 ई. में हिटलर ने म्युनिख शासक का सत्ता पलट दिया किन्तु असफल रहा। जिस कारण हिटलर को बन्दी बना लिया गया।
- जेल में हिटलर ने अपनी आत्मकथा मीनकैम्फ लिखी। जिसका अर्थ होता है मेरा संघर्ष (जर्मनी भाषा में)।
- 1932 ई. में जर्मनी का प्रधानमंत्री हिटलर बना और ।चतपस, 1933 ई. में हिटलर ने जर्मनी के लिए एक सुरक्षा परिषद् का गठन किया और उसका अध्यक्ष बना।
- हिटलर ने एक गुप्तचर व्यवस्था प्रारम्भ किया। जिसे गेस्टापो कहते हैं हिटलर का नारा था– एक राष्ट्र नेता
- हिटलर यहूदी धर्म का कट्टर विरोधी था। अत: इसे फ्यूहर कहते हैं।
- R. हेन्स ने कहा है कि जर्मनी मतलब हिटलर और हिटलर मतलब जर्मनी, जो हिटलर के प्रति वचनबद्ध है वो जर्मनी के प्रति भी वचनबद्ध है। हिटलर ने वर्साय की सारी संधी तोड़ दिया। उसने अपने सेना का शस्त्रीकरण करने लगा। हिटलर के लड़ाकू जहाज को लुफत्वाफ कहते थे। हिटलर की पनडुब्बी को यू-बॉटम कहते थे। पनडुब्बियाँ में पेट्रोल भरनेवाली छोटी जहाज को Mikcow कहते थे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी मित्र राष्ट्रों की सेना में चारों ओर से घिर गया और 30 अप्रैल, 1945 को हिटलर अपनी पत्नी इवा ब्राउन के साथ आत्महत्या कर लिया। इस प्रकार जर्मनी से नाजीवाद का अन्त हो गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध

- द्वितीय विश्व युद्ध के शुरूआत 01 सितम्बर, 1939 को प्रारम्भ हुआ और 02 सितम्बर, 1945 तक चला। इस युद्ध में कुल 62 देशों ने भाग लिया।
- द्वितीय विश्व युद्ध का मुख्य कारण वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी का अपमान था।
- द्वितीय विश्व युद्ध का तत्कालिक कारण जर्मनी का पोलैण्ड पर आक्रमण था।

- इस युद्ध में 61 देश दो गुटों में बटे थे मित्र तथा धुरी राष्ट्र मित्र राष्ट्र में U.S.A इंग्लैण्ड, फ्रांस तथा रूस थे।
- धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, इटली तथा जापान थे।
- जापान तथा चीन के बीच मन्चूरिया क्षेत्र पर अधिकार के लिए युद्ध हो गया। अत: चीन जापान के विरुद्ध रूप से चीन मित्र राष्ट्रों के साथ था।
- इस प्रकार प्रत्यक्ष इस युद्ध में जापान ने अमेरिका का हवाई द्वीप पर स्थित पर्ल हार्बर नामक नौसैनिक केन्द्र को तबाह ध्वस्त कर दिया। जिस कारण अमेरिका ने 06 अगस्त, 1945 जापान के हिरोशिमा पर यूरेनियम से बना Little boy नामक परमाणु बम गिरा दिया तथा 09 अगस्त, 1945 को अमेरिका ने जापान के नागासाकी पर पोलोनियम से बना Fat man नामक परमाणु बम गिरा दिया।
- इस युद्ध में जर्मनी ने रूस से यह संधि किया था कि वे आपस में युद्ध नहीं करेंगे किन्तु जर्मनी ने इस संधि को तोड़कर रूस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु जर्मनी की अधिकतर सेना ठण्ड से मर गयी। दूसरी तरफ जर्मनी की नौसेना डेनमार्क इत्यादि पर हमला करने के दौरान नष्ट हो गयी।
- इंग्लैण्ड की शाही वायु सेना (RAF – Royal Air Force) ने जर्मनी के संधि से अधिक विमानों को मार गिरा दिया।
- जर्मनी ने फ्रांस पर अधिकार कर लिया था।
- इंग्लैण्ड की सेना जर्मनी में घूमने के लिए फ्रांस के नारमण्डी नामक स्थान पर प्रवेश की। जबकि इंग्लैण्ड की सेना बर्लिन (जर्मनी) पहुँचती उससे पहले ही रूस की सेना बर्लिन पहुँच चुकी थी और हिटलर आत्महत्या कर चुका था।
- जर्मनी की राजधानी बर्लिन में एक दीवार खड़ा कर दी गयी जिसे बर्लिन की दीवार कही गयी। अब जर्मनी दो भागों में बंट गया था। पूर्वी जर्मनी पर रूस का अधिकार हो गया जो साम्यवादी था (सबकुछ सरकारी) Communist जबकि पश्चिमी जर्मनी पर इंग्लैण्ड तथा U.S.A का प्रभाव पड़ गया।
- पश्चिमी जर्मनी पूंजीवादी था।
- 1990 में बर्लिन की दिवार गिरा दी गयी और जर्मनी का दुबारा एकीकरण हो गया।

Note :– द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी के जनरल रोमेल को डेजर्ट फाक्स कहा जाता था।

Note :– द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका का राष्ट्रपति रूजवेल्ट था। इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री विस्टन चर्चिल तथा जापान के सम्राट हिरो-हिती थे।

- अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा योगदान संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) का स्थापना था।

शीत युद्ध

- द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्ति के बाद 1945 से 1991 तक जो चाकयुद्ध (बात-चित) चला उसे शीत युद्ध कहा जाता है। यह युद्ध अमेरिका तथा रूस के बीच हो रहा था।
- उस समय रूस 15 देशों का एक संघ था जिसे सोवियत संघ कहा जाता था।
- 1991 में सोवियत संघ 15 देशों में टूट गया और शीत युद्ध की अंत हो गया।

चीन का क्रांति

- यह 1911 में प्रारम्भ हुई। इस क्रांति के नायक डॉ. सनयात सेन थे। इन्होंने चीन के मंचू वंश के शासन को उखाड़ फेंका।
- सनयात सेन ने 1912 में कुओमिनतांग पार्टी का गठन किया।
- 1927 में क्योंमिंग तांग पार्टी से साम्यवादी (Communist) विचारधारा के लोग अलग हो गये। जिस कारण 1928 ई. में चीन में गृह युद्ध हो गया।
- गृह युद्ध के दौरान Communist का नेतृत्व माओत्से तुंग कर रहा था।
- माओत्सेतुंग एक कट्टर Communist नेता था। Communisto के दमन के लिए च्यांग काई शेक ने साम्यवादी Command Blue Shirt Army का गठन किया किन्तु यह Communisto को हरा नहीं सका और चीन के Reserve Bank का सोना लेकर वह फारमोसा द्विप भाग गया। फारमोसा द्वीप का वर्तमान नाम ताइवान है।
- वर्तमान समय में चीन ताइवान को ए क देश की मान्यता नहीं देता है।
- 01 अक्टूबर, 1949 को चीन को गणराज्य घोषित कर दिया।
- चीन गणराज्य का पहला अध्यक्ष माओत्से तुंग को बनाया गया।
- माओत्से तुंग ने बोला था कि समाजिक क्रांति बन्दूक की नली से निकलती है।
- माओत्से तुंग का कहना था जहाँ अधिक लोग रहेंगे वहां अधिक तरह के विचार भी आएंगे।
- चीन ने देंग श्याओपैंग के नेतृत्व में खुले द्वार की नीति अपनाया अर्थात् चीन ने देश को पूरे विश्व के व्यापार के लिए खोल दिया ऐसा करने वाला यह पहला कम्युनिष्ट देश था।

❑❑❑

31. प्रमुख ग्रंथ/पुस्तक एवं रचनाकार/लेखक (Major Books & Authors)

प्राचीन काल

	ग्रंथ/नाटक	कवि/लेखक
1.	रामायण	वाल्मीकी
2.	महाभारत	वेदव्यास
3.	भगवत गीता	वेदव्यास
4.	इंडिका ग्रंथ	मेगास्थनीज
5.	अर्थशास्त्र	कौटिल्य
6.	मुद्राराक्षस	विशाखदत्त
7.	पंचतंत्र	विष्णु शर्मा
8.	मृच्छकटिकम	शूद्रक
9.	कामसूत्र	वात्सायन
10.	कादम्बरी	बाणभट्ट
11.	बृहतकथा मंजरी	क्षेमेंद्र
12.	कथासरित सागर	सोमदेव
13.	महाभाष्य	पतंजलि
14.	अष्टाध्यायी	पणिनी
15.	गर्गी संहिता	गर्गमुनि
16.	दिव्यावदान	सोमेन्द्र
17.	महाविभाससूत्र	वसुमित्र
18.	बुद्ध चरित्रम्	अश्वघोष
19.	माध्यमिक सूत्र	नागार्जुन
20.	कृष्णचरित्र	समुद्रगुप्त
21.	सुश्रुत संहिता	सुश्रुत
22.	पंचसिद्धांतिका	वराहमिहिर, वृहतसंहिता
23.	हर्षचरित, कादम्बरी	वाणभट्ट
24.	प्रियदर्शिका, नागानंद, रत्नावली	हर्षवर्धन
25.	ऋतुसंहार, कुमारसंभवम्, मालविकाग्निमित्रम, अभिज्ञान शाकुतंलम् मेघदूतम्	कालिदास
26.	तौलकापियम	तोलकापियर
27.	शिल्पादिकारम	इलांगेअदिगंल
28.	मणिमेखलै	सीतलैसतनार
29.	जीवक चिंतामणि	तिरूतकक देवर
30.	कुरल	तिरूवल्लुवर
31.	मत्तविलास प्रहसन	महेंद्रवर्मन प्रथम
32.	किरातार्जुनियम	भारवि
33.	कविराजमार्ग	अमोघवर्ष
34.	विज्ञानेश्वर, मिताक्षरा विक्रमांकदेवचरित	विल्हण
35.	दायभाग	जोमूतवाहन
36.	राजतरंगिनी	कल्हन
37.	पृथ्वी राजरासो	चंदबरदाई
38.	सरितसागर, ललितविग्रह	सोमदेव
39.	सूरसागर	सूरदास
40.	स्वप्नवासदत्ता	भास
41.	चरक संहिता	चरक
42.	मनुस्मृति	मनु
43.	दशकुमारचरितम्	दण्डी
44.	बुद्धचरितम्	अश्वघोष
45.	अमरकोष	अमर सिंह
46.	नीति-शतक, श्रृंगार-शतक	भर्तृहरि
47.	गीतगोविन्द	जयदेव
48.	मालती माधव, उत्तररामचरित	भवभूति
49.	सत्सहसारिका सूत्र	नागार्जुन
50.	सौंदरानन्द	अश्वघोष
51.	महाविभाषाशास्त्र	वसुमित्र
52.	नाट्शास्त्र	भरतमुनि
53.	देवीचंद्रगुप्तम	विशाखदत्त
54.	सूर्य सिद्धांत	आर्यभट्ट
55.	कर्पूरमंजरी	राजशेखर
56.	काव्मीमांसा	राजशेखर
57.	नवसहसांक चरित	पदम् गुप्त
58.	शब्दानुशासन	राजभोज
59.	नैषधचरितम	श्रीहर्ष
60.	कुमारपाल चरित	हेमचन्द्र सूरि
61.	रासमाला	सोमेश्वर
62.	गोडवाहो	वाकपति

मध्यकालीन

63.	रमैनी, सबद, साखी	कबीर दास
64.	पदमावत	मलिक मोहम्मद जायसी
65.	तारीख-उल-हिन्द	अलबरूनी
66.	तारीख-ए-फिरोजशाही	जियाउद्दीन बरनी
67.	फुतुहात-ए-फिरोजशाही	फिरोजशाह तुगलक
68.	तबकात-ए-नासिरी	मिन्हाज-उस-सिराज

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

69.	किताब-उल-रेहला	इब्नबतूता (अरबी भाषा)
70.	किताब-उल-यामिनी	उत्वी
71.	खजायन-उल-फुतूह	अमीर खुसरो
72.	फतवा-ए-जहाँदारी	जियाउद्दीन बरनी
73.	तुजुक-ए-बाबरी/बाबरनामा	बाबर (तुर्की भाषा)
74.	हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
75.	तारीख-ए-शेरशाही	अब्बास खाँ शेरवानी
76.	तबकात-ए-अकबरी	ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद
77.	अकबरनामा	अबुल फजल
78.	तुजुक-ए-जहाँगीरी	जहाँगीर
79.	पादशाहनामा	काजविनी
80.	शाहजहाँनामा	इनायत खाँ
81.	बादशाहनामा	अब्दुल हामित लाहौरी
82.	मुतखाब-उल-लुबाब	खफी खाँ
83.	आलमगीरनामा	मिर्जा मुहम्मद काजिम
84.	तुगलकनामा	अमीर खुसरों
85.	नूहसिपहर	अमीर खुसरों

आधुनिक काल

86.	हिन्द स्वराज	महात्मा गाँधी
87.	इंडियन ओपिनियन (S.A.)	महात्मा गाँधी
88.	My Experiment with truth	महात्मा गाँधी
89.	न्यू इंडिया, कॉमनवील	एनी बेसेंट
90.	इंडिया विन्स फ्रीडम	अबुल कलाम आजाद
91.	बापू : माई मदर	मनुबहन गाँधी
92.	द लाइफ डिवाइन	अरविंद घोष
93.	अनहैप्पी इंडिया	लाला लाजपत राय
94.	दुर्गेश नंदनी	बंकिचंद्र चटर्जी
95.	आनंद मठ	बंकीमचंद्र बनर्जी
96.	देवी चौधरानी	बंकीमचंद्र चटर्जी
97.	पावर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया	दादाभाई नौरोजी
98.	दी मैन हू डिवाइडेड इंडिया	डॉ. रफीक जकारिया
99.	India from Karjan to Nehru and father	दुर्गा दास
100.	Freedom of midnight	लॉरी कालिंस एंड डोमिनिक लेपियर
101.	इंडियन अनरेस्ट	वैलेंनटाइन सिरोल
102.	Indian Struggle	सुभाष चंद्र बोस
103.	ए नेशनल इन द मेकिंग	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
104.	प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस	राजाराम मोहन राय
105.	अवर इंडियन मुसलमान	W.W. हंटर
106.	History of the freedom movement in India	ताराचंद
107.	History of the freedom movement in Bihar	के. के. दत्ता
108.	दी इंडियंस वार ऑफ इंडिपेडेंस	वी. डी. सावरकर
109.	दी सेपॉय म्यूहिनी एंड रिवोल्ट ऑफ 1857	आर. सी. मजूमदार
110.	तमश	भीष्म सहनी
111.	ट्रेन टू पाकिस्तान	खुशवंत सिंह
112.	भारत विभाजन के गुनाहगार	राम मनोहन लोहिया
113.	डिवाइड एंड क्वीट	पेन्डरले मून
114.	बंदी जीवन	शचीन्द्रनाथ संथाल
115.	सुबहे आजादी	फैज अहमद फैज
116.	इंडिया डिवाइडेड	राजेन्द्र प्रसाद
117.	दास कैपिटल	कार्ल मार्क्स
118.	चित्रा, चित्रांगदा, द कोर्ट डांसर साधना, गीतांजली	रवीन्द्रनाथ टैगोर
119.	भारत-भारती	मैथिलीशरण गुप्त
120.	प्रिजन डायरी	जयप्रकाश नारायण
121.	ए पैसेज टू इंडिया	ई. एम. फोस्टर
122.	मदर इंडिया	कैथरिन मेयो
123.	भारत की खोज	जवाहर लाल नेहरू
124.	मालगुडी डेज	आर. के. नारायण
125.	इग्नाइटेड माइंडस	A.P.J. Abdul Kalam
126.	कामायानी	जयशंकर प्रसाद
127.	गोल्डेन थ्रेशहोल्ड (Poem)	सरोजनी नायडू
128.	गबन और गोदान	मुंशी प्रेमचंद
129.	विश्व इतिहास की झलक	जवाहर लाल नेहरू
130.	तहजीब उल एसलाक	सर सैय्यद अहमद खां
131.	इंडियन नेशनल मूवमेंट	द लॉन्ग टर्म डाइनेमिक्स
132.	प्रबुद्ध भारत	स्वामी विवेकानंद
133.	हिन्दुस्तान टाइम्स	के. एम. पानिकर
134.	फ्री हिन्दुस्तान	तारकनाथ दास
135.	Independent	मोतीलाल नेहरू
136.	बंगाली	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
137.	एक्ससे इन इंडियन एकॉनॉमिक्स	M.G. रानाडे
138.	इंकलाब	गुलाम हुस्सैन

❑❑❑